●वर्ष : 16 ●अंक : 182 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08

RNI No. DELHI/2008/23928

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen . (9315755133 / ya email Karen) angenpharmaceuticals@gmail.com

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

सोमवार 21 अक्टूबर 2024

वाराणसी में पीएम मोदी ने पूर्ववर्ती सरकारों पर साधा निशाना

>> कहा- पिछली सरकारों के घोटाले अखबारों में छाये रहते थे

नूना न्यूज एजेंसी

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने संसदीय निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी के सिगरा स्थित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एक कार्यक्रम में राष्ट्र को समर्पित 6700 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इसके बाद पीएम मोदी ने जनता को संबोधित किया। इस दौरान पीएम ने देश की पिछली सरकारों पर लाखों करोड़ रुपये के घोटाले करने का आरोप लगाते हुए रविवार को कहा कि 10 साल पहले तक इन घोटालों की चर्चा अखबारों में छाई रहती थी, लेकिन अब उनके नेतृत्व वाली सरकार के नए कार्यकाल के सिर्फ सवा सौ दिन में ही 15 लाख करोड़ रुपये का काम शुरू होने की चर्चा हर घर में हो रही है। नरेंद्र मोदी ने कहा, 'यही तो वह बदलाव है जो देश चाहता है। जनता का पैसा जनता पर खर्च हो, देश के विकास पर खर्च हो और पूरी ईमानदारी से खर्च हो, यह उनकी सरकार की बड़ी प्राथमिकता है।' उन्होंने कहा, 'बीते 10 सालों में हमने देश में बुनियादी ढांचे के निर्माण का एक बहुत बड़ा अभियान शुरू किया है और इस अभियान के दो सबसे बड़े लक्ष्य हैं। पहला लक्ष्य, निवेश से नागरिकों की सुविधा बढ़ाने का और दूसरा लक्ष्य निवेश से नौजवानों को नौकरी देने का। आज देश में नए-नए राजमार्ग बन रहे हैं। नए-नए मार्गों पर रेल की पटरियां बिछाई जा रही हैं, नए-नए हवाई अड्डे बन रहे हैं।' पीएम मोदी ने कहा कि यह सिर्फ ईंट-पत्थर और लोहे-सरिया का काम नहीं हो रहा है बल्कि इससे लोगों की सुविधा बढ़ रही है और देश के युवाओं को नौकरियां भी मिल रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, 'काशी के लिए आज का दिन बहुत ही शुभ है। अभी मैं आंखों के एक बड़े अस्पताल का लोकार्पण करके आपके पास आया हूं। बाबा (भोलेनाथ) के आशीर्वाद से यहां हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। आज उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में अलग-अलग हवाई अड्डों का शुभारंभ हुआ। इसमें बाबतपुर हवाई अड्डे के अलावा आगरा और सहारनपुर का सरसावा हवाई अड्डा भी शामिल है।' पीएम ने कहा कि कुल मिलाकर देखें तो शिक्षा, कौशल विकास, खेल, स्वास्थ्य, पर्यटन हर क्षेत्र की परियोजनाएं बनारस को मिली हैं और यह सारी परियोजनाएं सुविधा के साथ-साथ नौजवानों के लिए रोजगार के अनेक नए अवसर भी लेकर आई हैं। मोदी ने जनता से मुखातिब होते हुए कहा, 'आपने जब मुझे लगातार तीसरी बार सेवा करने का आदेश दिया था, तब मैंने तीन गुना गति से काम करने की बात कही थी। अभी सरकार को बने सवा सौ दिन भी नहीं हुए हैं। इतने कम समय में ही देश में 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं पर हम काम शुरू कर चुके हैं। इनमें से ज्यादातर बजट गरीबों, किसानों और नौजवानों के नाम पर रहा है।' मोदी ने वाराणसी के सिगरा स्थित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एक कार्यक्रम में राष्ट्र को समर्पित 6700 करोड़ रुपये की 23 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इससे पहले, उन्होंने वाराणसी पहुंचकर कांची मठ द्वारा संचालित आर.जे. शंकर नेत्र अस्पताल का उद्घाटन किया। इन परियोजनाओं में 3,200 करोड़ रुपये से अधिक की 16 विकास परियोजनाएं वाराणसी के लिये हैं। प्रधानमंत्री ने लगभग 2870 करोड़ रुपये की लागत से वाराणसी के लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के रनवे के विस्तार, नए टर्मिनल भवन के निर्माण और संबद्ध कार्यों की आधारशिला भी रखी।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार, सख्त कार्रवाई की दरकार

बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों एवं हिन्दुओं पर हो रहे हमलें, मशहूर जेशोश्वरी मंदिर में मुकुट का चोरी होना, हिन्दू अल्पसंख्यकों से जबरन इस्तीफा के लिये दबाव बनाने की घटनाएं, दुर्गा पूजा के पंडाल पर हमले चिन्ता के बड़े कारण हैं, यह हिन्दू अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचलने की साजिश एवं षडयंत्र है, जिस पर भारत सरकार को गंभीर होने के साथ इन पर नियंत्रण की ठोस कार्रवाई की अपेक्षा है। बीते अगस्त में शुरू हुई राजनीतिक उथल-पुथल के बीच शेख हसीना का प्रधानमंत्री पद से हटना और भारत आने के बाद बांग्लादेश में भारत विरोधी गतिविधियों को असामाजिक तत्वों व कट्टरपंथियों द्वारा हवा दिया जाना शर्मनाक एवं विडम्बनापूर्ण है। नई दिल्ली में बांग्लादेश के हिन्दू-अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के प्रश्न को लेकर बार-बार चिंता तो व्यक्त की जा रही है, लेकिन करारा एवं सख्त संदेश देने की कोई कोशिश होती हुई नहीं दिख रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा सरकार के शासन में यदि ऐसी घटनाओं पर सख्ती नहीं बरती गयी तो फिर कब बरती जायेगी? यह विडंबना ही है कि नोबेल शांति पुरस्कार विजेता व कार्यवाहक रूप में सरकार के मुखिया का दायित्व निभा रहे मोहम्मद यूनुस के कार्यकाल में हिन्दुओं एवं हिंदू पहचान के प्रतीकों को निशाना बनाया जाना बदस्तूर रहना किसी अन्तर्राष्ट्रीय साजिश का हिस्सा हो सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने नागपुर में विजयदशमी पर्व पर आयोजित रैली को सम्बोधित करते हुए हिन्दुओं पर हो रहे इन हमलों को लेकर बड़ा संदेश दिया है, अपेक्षा है सरकार भी जैसे को तैसे वाली स्थिति में आकर हिन्दुओं की रक्षा की सार्थक एवं प्रभावी पहल करें। बांग्लादेश की आबादी में 7.95 फीसदी-सवा करोड़ से ज्यादा हिंदू शामिल हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में हिंदुओं के खिलाफ जो कुचक्र रचे गये, उसी तरह की साजिश बांग्लादेश में सिर उठा रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले दो महीने में बांग्लादेश के 52 जिलों में हिंदू समुदाय पर हमले की 200 से ज्यादा घटनाएं हुई। आज बांग्लादेश सांप्रदायिकता एवं कट्टरता की आग में झुलस रहा है। सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। दोराहे पर खड़े बांग्लादेश में यह खतरा बढ़ता जा रहा है। खतरे की गंभीरता को देखते हुए वहां अंतरिम सरकार ने हिंदू मंदिरों, गिरजाघरों या अल्पसंख्यकों के किसी भी धार्मिक संस्थान पर हमलों की जानकारी देने के लिए हॉटलाइन शुरू की थी।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR
OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

सभी चार सीट पर आप ने उतारे उम्मीदवार, जानें कौन कहां से लड़ेगा चुनाव?

नूना न्यूज एजेंसी

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी (आप) ने पंजाब की चार विधानसभा सीट पर 13 नवंबर को होने वाले उपचुनाव के लिए रविवार को उम्मीदवारों की सूची जारी की। आम आदमी पार्टी ने उम्मीदवारों की यह सूची सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा की। आप ने हरदीप सिंह डिंपी ढिल्लों को गिद्दड़बाहा से मैदान में उतारा है। वह अगस्त में शिरोमणि अकाली दल छोड़कर आप में शामिल हुए थे। आप ने होशियारपुर से पार्टी सांसद राज कुमार चब्बेवाल के बेटे ईशान चब्बेवाल को चब्बेवाल (आरक्षित) सीट से उम्मीदवार बनाया है। हरिंदर सिंह धालीवाल बरनाला सीट से और गुरदीप सिंह रंधावा डेरा बाबा नानक सीट से पार्टी के उम्मीदवार हैं। चार विधानसभा सीट पर उपचुनाव की जरूरत इन सीट का प्रतिनिधित्व करने वाले विधायकों के लोकसभा के लिए निर्वाचित होने की वजह से पड़ी है। गिद्दड़बाहा से कांग्रेस विधायक अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने लुधियाना लोकसभा सीट से जीत दर्ज की थी। कांग्रेस के पूर्व विधायक राज कुमार चब्बेवाल, बाद में आप में शामिल हो गए थे। वह होशियारपुर से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए थे। डेरा बाबा नानक से कांग्रेस विधायक सुखजिंदर सिंह रंधावा गुरदासपुर संसदीय सीट से निर्वाचित हुए और बरनाला से आप विधायक गुरमीत सिंह मीत हेयर संगरूर लोकसभा सीट से निर्वाचित हुए। उपचुनाव के लिए मतों की गिनती 23 नवंबर को होगी।

झारखंड में अकेले चुनाव लड़े, तो भी इंडिया गठबंधन को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे : आरजेडी

नूना न्यूज एजेंसी

रांची । झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए झामुमो और कांग्रेस के बीच सीट बंटवारे को लेकर हुए समझौते पर निराशा व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने रविवार को कहा कि 12 से कम सीट उसे स्वीकार्य नहीं होगा और अगर अकेले चुनावी मैदान में उतरना पड़ा, तो उस स्थिति में भी वह इंडिया गठबंधन को नुकसान नहीं पहुंचाएगा। राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का मुकाबला करने के लिए विपक्षी दलों ने इंडिया गठबंधन बनाया है, जिसमें कांग्रेस, राजद और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) भी घटक हैं। झामुमो और कांग्रेस ने शनिवार को घोषणा की कि दोनों दल राज्य की 81 विधानसभा सीट में से 70 पर चुनाव लड़ेंगे। राजद प्रवक्ता मनोज कुमार झा ने कहा, 12-13 सीट से कम हमें स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि राजद की 18-20 सीट पर मजबूत पकड़ है। अगर हमें तीन-चार सीट पर चुनाव लड़ने के लिए कहा जाता है, तो हम कोई त्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने कहा, हमारा एकमात्र उद्देश्य भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)को हराना है, हम इंडिया गठबंधन को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। राज्यसभा सदस्य झा ने कहा कि यदि पार्टी अकेले चुनाव लड़ने का निर्णय भी लेती है, तो भी वह 60-62 सीट पर इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों को अपना समर्थन देगी। राजद ने 2019 के विधानसभा चुनाव में सात सीट पर चुनाव लड़ा था और एक सीट पर जीत हासिल की थी। पार्टी के विधायक सत्यानंद भोक्ता हेमंत सोरेन मंत्रिमंडल में मंत्री हैं।

ब्रीफ न्यूज

सभी सरकारी विभागों में दीपावली के पहले होगा वेतन का भुगतान

भोपाल। दीपावली त्यौहार को देखते हुए प्रदेश के सभी सरकारी सेवकों को 1 नवंबर से पहले अक्टूबर महीने के वेतन का भुगतान किया जाएगा। वेतन का भुगतान 28 अक्टूबर तक होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सभी विभागों को इसके आदेश दिए हैं। सीएम ने कहा कि सभी सरकारी विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों को दीपोत्सव के पहले वेतन मिलने से उत्सव आनंददायक होगा। सीएम ने सभी को दीपावली पर्व की अग्रिम शुभकामनाएं भी दी हैं।

जिरिबाम में फिर हिंसा गांव पर बम फेंके

इम्फाल, मणिपुर के जिरिबाम जिले में एक बार फिर से हिंसा भड़क उठी है। बोरोबेकरा इलाके के एक गांव में शनिवार सुबह 5 बजे उग्रवादियों ने फायरिंग शुरू कर दी। बोरोबेकरा पुलिस ने बताया कि उग्रवादियों ने गांव में बम भी फेंके हैं। सूचना मिलने पर पुलिस और सीआरपीएफ की टीमें मौके पर पहुंच गई हैं। उग्रवादियों और सुरक्षाबलों के बीच फायरिंग लगातार जारी है, हालांकि अभी तक किसी के घायल होने की खबर नहीं है।

विजया बनीं महिला आयोग की अध्यक्ष

नईदिल्ली, केंद्र सरकार ने विजया किशोर राहतकर को राष्ट्रीय महिला आयोग का 9वां अध्यक्ष नियुक्त किया है। वे रेखा शर्मा का स्थान लेंगी। यह नियुक्ति तीन वर्षों के लिए की गई है या 65 वर्ष की आयु तक (जो भी पहले हो)। राहतकर 2016 से 2021 तक महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने एसिड अटैक सर्वाइवर्स के लिए सक्षम, स्वयं सहायता समूहों को केंद्र सरकार की योजनाओं से जोड़ने जैसी पहल शुरू की थीं।

वायनाड से प्रियंका के खिलाफ भाजपा ने नाव्या को दिया टिकट

नई दिल्ली, भाजपा ने शनिवार को 8 राज्यों की 25 सीटों के लिए उपचुनाव प्रत्याशियों की सूची जारी की, जिसमें 24 विधानसभा और केरल की वायनाड लोकसभा सीट शामिल है। वायनाड से भाजपा ने नाव्या हरिदास को टिकट दिया है, जो कांग्रेस की प्रियंका गांधी के खिलाफ चुनाव लड़ेंगी। उपचुनाव 13 नवंबर को 13 राज्यों की 47 विधानसभा सीटों और वायनाड लोकसभा सीट पर होंगे। सभी नतीजे 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे।

उपचुनाव : 8 राज्यों की 25 सीटों पर भाजपा ने घोषित किए अपने उम्मीदवार

बुधनी से रमाकांत भार्गव, विजयपुर से रामनिवास होंगे भाजपा प्रत्याशी

भोपाल, रासं। भाजपा की केन्द्रीय चुनाव समिति ने प्रदेश की दो विधानसभा सीट बुधनी और विजयपुर में उपचुनाव के लिए प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया हैं। पार्टी ने बुधनी सीट से रमाकांत भार्गव को टिकट दिया है। वहीं विजयपुर से रामनिवास रावत को प्रत्याशी बनाया है। इन सीटों पर 13 नवंबर को चुनाव है। 24 को परिणाम आएंगे। प्रदेश भाजपा चुनाव समिति द्वारा पिछले दिनों इन दोनों सीटों के लिए नामों का पैनल बनाकर आलाकमान को भेज दिया था।

जम्मू-कश्मीर के स्टेटहुड के प्रस्ताव को एलजी की मंजूरी

श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव को उपराज्यपाल ने शनिवार को मंजूरी दे दी। यह प्रस्ताव मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की कैबिनेट ने गुरुवार को पास किया था। डिप्टी सीएम सुरिंदर कुमार चौधरी ने कहा, केंद्र को अपना वादा पूरा करना चाहिए। यह हमारा अधिकार है। उमर अब्दुल्ला दो दिन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करेंगे।

5 अगस्त 2019 को केंद्र ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर इसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया था। उमर ने विधानसभा चुनाव के दौरान राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा किया था। जम्मू-कश्मीर को स्टेटहुड दिलाने की मांग सुप्रीम कोर्ट में भी दायर की गई है। सीजेआई ने सुनवाई के लिए सहमति दी है। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने कहा कि उमर का प्रस्ताव 5 अगस्त, 2019 के फैसले का समर्थन करने जैसा है।

टीआई समेत पूरे स्टाफ का 900 किमी दूर करें ट्रांसफर

अनूपपुर में पुलिस हिरासत में युवक की पिटाई पर हाईकोर्ट का कड़ा रुख, 1.20 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया

● जबलपुर

पुलिस हिरासत में एक युवक के साथ मारपीट के मामले पर हाईकोर्ट ने कड़ी कार्रवाई की है। जस्टिस जीएस आहलूवालिया की एकलपीठ ने आदेश दिया है कि प्रदेश के सभी पुलिस थानों के हर कमरे में ऑडियो सुविधा के साथ सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं।

अदालत ने पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को निर्देश दिया है कि सभी पुलिस अधीक्षकों से रिपोर्ट प्राप्त करें। किसी भी चूक पर अवमानना कार्रवाई की जाएगी। कोर्ट ने हर जिले के पुलिस अधीक्षक से यह सुनिश्चित करने को कहा कि उनके जिले में कोई ऐसा कमरा न हो जो सीसीटीवी कवरेज से बाहर हो। यह आदेश अनूपपुर निवासी अखिलेश पांडे की याचिका पर आया है। अधिवक्ता अभिषेक पांडे ने बताया कि अखिलेश एक कंपनी का मैनेजर है। पुलिस ने उससे पांच हजार रुपये की रिश्वत मांगी और न देने पर उसे फर्जी मामले में गिरफ्तार कर लिया। थाने में उसकी पिटाई भी की गई, जिसमें एक पुलिसकर्मी ने अपनी वर्दी फाड़कर आरोप याचिकाकर्ता पर मढ़ दिया।

(शेष पेज 8 पर)

प्रदेश के सभी थानों में CCTV लगाने का आदेश

हाईकोर्ट ने कहा है कि तीन महीने के भीतर सभी पुलिस स्टेशनों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। प्रत्येक पुलिस अधीक्षक को एक महीने में रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। यदि किसी पुलिस स्टेशन में सीसीटीवी कवरेज के बाहर कोई क्षेत्र पाया जाता है, तो यह अवमानना माना जाएगा, और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। कोर्ट ने डीजीपी को 18 फरवरी 2025 तक रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिए हैं।

बम की धमकियों से हड़कंप तीस फ्लाइट्स की लैंडिंग

6 दिन में 50 से ज्यादा धमकियां 80 करोड़ रुपए का हुआ नुकसान

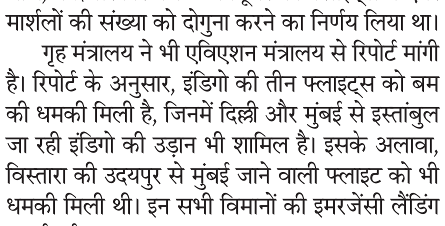

नई दिल्ली, इंडियन एयरलाइंस की 30 से अधिक फ्लाइट्स में शनिवार को बम होने की धमकी मिली। इनमें इंडिगो, एअर इंडिया, अकासा, विस्तारा, स्पाइसजेट, स्टार एअर और एलायंस एयर शामिल हैं। पिछले एक हफ्ते में 50 से ज्यादा विमानों को बम की धमकी मिल चुकी है, जो सभी झूठी साबित हुई हैं। इन धमकियों के चलते अब तक 80 करोड़ रुपए का नुकसान हो चुका है। लगातार मिल रही धमकियों के बीच, केंद्र सरकार ने 16 अक्टूबर को फ्लाइट्स में एयर मार्शलों की संख्या को दोगुना करने का निर्णय लिया था।

गृह मंत्रालय ने भी एविएशन मंत्रालय से रिपोर्ट मांगी है। रिपोर्ट के अनुसार, इंडिगो की तीन फ्लाइट्स को बम की धमकी मिली है, जिनमें दिल्ली और मुंबई से इस्तांबुल जा रही इंडिगो की उड़ान भी शामिल है। इसके अलावा, विस्तारा की उदयपुर से मुंबई जाने वाली फ्लाइट को भी धमकी मिली थी। इन सभी विमानों की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई।

खुलासा करोड़ों का फंड जुटाने का लक्ष्य, विभिन्न बैंकिंग चैनलों और हवाला के माध्यम से भारत भेजा जाता था फंड

ईडी का आरोप... खाड़ी देशों में 13,000 सक्रिय पीएफआई सदस्य

● नई दिल्ली

भारत में प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के खिलाफ चल रही प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच में नए खुलासे हुए हैं। ईडी ने जानकारी दी कि पीएफआई के सिंगापुर और खाड़ी देशों में 13,000 से अधिक सक्रिय सदस्य हैं, जिन्हें करोड़ों रुपये के फंड जुटाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

रिपोर्ट के अनुसार, पीएफआई ने खाड़ी देशों में प्रवासी मुस्लिम समुदाय के लिए डिस्ट्रिक्ट एग्जीक्यूटिव कमेटियां बनाई हैं, जिन्हें फंड जुटाने का कार्य सौंपा गया था। ईडी ने बताया कि विदेशों से जुटाए गए करोड़ों के फंड को विभिन्न बैंकिंग चैनलों और हवाला के माध्यम से भारत भेजा जाता था, ताकि इसे ट्रेस न किया जा सके। यह फंड भारत में पीएफआई के अधिकारियों और आतंकियों तक पहुंचाया जाता था, ताकि वे आतंकी गतिविधियों को अंजाम दे सकें। सितंबर 2022 में पीएफआई के ठिकानों पर एनआईए और ईडी ने छापे मारे थे, जिसमें कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद, 28 सितंबर 2022 को केंद्र सरकार ने पीएफआई को बैन कर दिया था। तब से ईडी पीएफआई के खिलाफ जांच कर रही है।

दो दिन में 278 गिरफ्तारियां

एनआईए, ईडी और राज्यों की पुलिस ने 22 और 27 सितंबर को पीएफआई पर छापेमारी की, जिसमें 278 गिरफ्तारियां हुईं। जांच एजेंसियों को पीएफआई के खिलाफ पर्याप्त सबूत मिले थे।

पीएफआई का गठन

पीएफआई का गठन 2006 में मनिथा नीति पसाराई (एमएनपी) और नेशनल डेवलपमेंट फंड (एनडीएफ) के विलय से हुआ था। यह संगठन अब 23 राज्यों में फैला हुआ है।

ईडी की जांच में प्रमुख खुलासे...

1. पीएफआई के वास्तविक उद्देश्य इसके संविधान में बताए गए उद्देश्यों से भिन्न हैं। संगठन खुद को एक सामाजिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके असली लक्ष्य जिहाद के माध्यम से भारत में इस्लामिक आंदोलन खड़ा करना हैं।
2. पीएफआई दावा करता है कि वह शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीकों का इस्तेमाल करेगा, लेकिन जांच में पाया गया कि वे फिजिकल एजुकेशन क्लासेस के माध्यम से हिंसक तरीकों की प्रैक्टिस करवाते थे।
3. देश में पीएफआई के सभी ठिकाने रजिस्टर्ड नहीं थे। फिजिकल एजुकेशन क्लासेस भी डमी ओनर्स के नाम पर रजिस्टर्ड थीं।
4. 2013 में केरल के कन्नूर जिले में पीएफआई ने विस्फोटकों और हिंसक हथियारों की ट्रेनिंग दी, जिसका उद्देश्य धार्मिक दुश्मनी बढ़ाना और सदस्यों को आतंकी गतिविधियों के लिए तैयार करना था।

सीजेआई बोले- सुप्रीम कोर्ट को लोगों की अदालत बनाया

● नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ ने शनिवार को कहा कि उन्होंने सुप्रीम कोर्ट को लोगों की अदालत बनाने का प्रयास किया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम संसद में विपक्ष की भूमिका निभाते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम संसद में विपक्ष की भूमिका निभाते हैं...

उन्होंने यह बात द सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट्स ऑन रिकॉर्ड एसोसिएशन (एससीएओआरए) के पहले अंतरराष्ट्रीय कानून सम्मेलन में कही। सीजेआई ने स्पष्ट किया कि सुप्रीम कोर्ट का कार्य संसद में विपक्ष के रूप में कार्य करना नहीं है। उन्होंने कहा कि कानूनी विसंगतियों के लिए कोर्ट की आलोचना स्वीकार्य है। लेकिन फैसलों के आधार पर इसकी भूमिका और काम का मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने तकनीक का उपयोग करते हुए कई प्रक्रियाओं को सरल बनाया है।

ए.आई.एम.आई.एम.के सह सचिव जावेद अहमद ने आयोग के चेयरमेंन को षिकायत पत्र दिया

दिल्ली। 20 अक्टूबर 2024 ऑल इंडिया मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिमीन के दिल्ली प्रदेष के सह सचिव जावेद अहमद ने हरप्रीत सिंह सिरोही और निगम पार्षद रवीन्द्र सिंह नेगी के खिलाफ आयोग ने षिकायत पत्र दिया इस संबंध में जावेद अहमद ने संवाददाता को बताया पूर्वी दिल्ली के विनोद नगर वार्ड नम्बर 198 से बीजेपी पार्टी के निगम पार्षद रवीन्द्र सिंह नेगी अपने वार्ड की मार्किट में पुलिस बल के साथ दौरा करके वार्ड के मुस्लिम दुकानदारों का निरीक्षण करते हैं और मुस्लिम दुकानदारों को निर्देष देते हैं वह अपने मुस्लिम नाम के साथ दुकान पर साईन बोर्ड लगाएं नहीं तो दुकान को निगम द्वारा सील और लाईसेंस रद करा दूंगा। इस कार्य से बीजेपी पार्टी का यह छुटभैया नेता मुस्लिम समुदाय पर अपना दबदबा बनाना चाहता है और मुस्लिम दुकानदारों को हिन्दू मार्किटों मे रोजगार करने से रोकने का प्रयास कर रहा है इसके अलावा हरप्रीत सिंह सिरोही नामक व्यक्ति रोहिंग्या व बंग्लादेषी मुसलमानों की आड़ में भारतीय मुसलमानो को मारता पीटता है और खुलेआम देष से भगाने की धमकी देता है ऑटो रिक्षा पर मुस्लिम समुदाय के खिलाफ स्लोगन लिखकर देष की राजधानी दिल्ली की अमन षांति भंग करने की कोषिष कर रहा है इस संबंध में जावेद अहमद ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमेंन इकबाल सिंह लालपुरा से भेंट की और उनको रवींद्र सिंह नेगी और हरप्रीत सिंह सिरोही के खिलाफ षिकायत पत्र दिया। इकबाल सिंह लालपुरा ने विष्वास दिलाते हुए कहा षीघ्र ही ऐसे लोगों के खिलाफ आयोग द्वारा कानूनी कार्यवाही की जाएगी। इस संबंध में आयोग ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को नोटिस जारी करके 25 अक्टूबर तक जवाब मांगा है। अंत में जावेद अहमद ने कहा हमें आयोग और कानून पर पूरा विष्वास है हमे अवष्य न्याय मिलेगा।

दिल्ली में प्रदूषण रोकथाम के लिए ग्राउंड जीरो पर उतरी सीएम आतिशी

20 अक्टूबर, नई दिल्ली

दिल्ली में प्रदूषण रोकथाम के लिए अपनाए जा रहे उपायों का निरीक्षण करने के लिए सीएम आतिशी ने रविवार ग्राउंड जीरो पर उतरी। उनके साथ पर्यावरण मंत्री श्री गोपाल राय भी मौजूद रहे। सीएम आतिशी ने दिल्ली में प्रदूषण के हॉटस्पॉट बने आनंद विहार बस अड्डा के आसपास के क्षेत्रों का दौरा किया और यहाँ प्रदूषण को रोकने के लिए उठाए जा रहे कदमों का जायजा लिया। बता दे कि अंतराज्रीय बस अड्डा होने के कारण आनंद विहार में बड़ी संख्या में दूसरे राज्यों से भी बसें आती है। इनमें से ज्यादातर बसें डीजल चलित होती है। जिनसे प्रदूषण बढ़ता है। साथ ही यहाँ एनसीआरटीसी द्वारा बड़े पैमाने पर आरआरटीएस का निर्माण कार्य जारी है। इस कारण भी यहाँ प्रदूषण बढ़ता है। इन सभी कारणों से आनंद विहार

प्रदूषण का हॉटस्पॉट बन गया है। इस बाबत साझा करते हुए सीएम आतिशी ने कहा कि, आनंद विहार प्रदूषण का हॉटस्पॉट बना है लेकिन यहाँ प्रदूषण कम करने के लिए दिल्ली सरकार सख्ती से कदम उठा रही है। इसके लिए आनंद विहार बस अड्डा और आसपास में बड़ी संख्या में एंटी स्मोग गन तैनात किए गए है, यहां आसपास की सभी सड़कों को रिपेयर किया गया है और सड़कों से अतिक्रमण भी हटाया गया है ताकि ट्रैफिक न लगे। सीएम आतिशी ने आज निरीक्षण के बाद मीडिया से साझा करते हुए कहा कि, दिल्ली में इस समय प्रदूषण बढ़ रहा है। एक्यूआई का स्तर बढ़ रहा है। इसलिए सरकार द्वारा दिल्ली में बहुत सख्ती से प्रदूषण को रोकने के लिए कदम उठाए जा रहे है। उन्होंने कहा कि, प्रदूषण रोकथाम के लिए, सरकार 99 टीमों के जरिये डस्ट कंट्रोल ड्राइव चला रही है। ये टीमें पूरी दिल्ली में अलग-अलग जगह निर्माण साइटों पर जाकर निरीक्षण कर रहे है। साथ ही शहर में 325 एंटी स्मोग गन लगाने की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है। दिल्ली में सभी एजेंसीज चाहे पीडब्ल्यूडी हो या एमसीडी युद्धस्तर पर प्रदूषण रोकने के लिए काम कर रही है। सीएम आतिशी ने कहा कि, आनंद विहार एक ऐसा इलाका है, जो दिल्ली-उत्तर प्रदेश के बॉर्डर पर स्थित है और यहां दिल्ली के बाहर से बड़ी संख्या में बसें आती है। उन्होंने कहा कि, "आनंद विहार दिल्ली में एक ऐसा हॉटस्पॉट है जहाँ दिल्ली में सबसे ज्यादा एक्यूआई होता है। इसलिए आज दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय जी के साथ मैं यहाँ निरीक्षण करने और ये देखने आई हूँ कि यहाँ प्रदूषण की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाए जा रहे है।" सीएम आतिशी ने साझा करते हुए कहा कि, आनंद विहार में प्रदूषण की रोकथाम के लिए कई कदम उठाए जा रहे है। यहाँ लगातार स्मोग गन चलाये जा रहे है, धूल उड़ने से रोकने के लिए जमीन की सतह, सड़कों को गीला रखा जा रहा है। आनंद विहार के पास जो भी सड़कें है चाहे वो किसी भी एजेंसी की हो, उन्हें रिपेयर करवाया गया है ताकि कोई भी सड़क टूटी न हो और धूल न उड़े। साथ ही यहाँ ट्रैफिक कंजेशन पॉइंट से अतिक्रमण हटाया गया है ताकि सड़कों पर ट्रैफिक न हो और प्रदूषण न बढ़े।

हॉटस्पॉट वाले इलाकों में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए एक्शन "आप" सरकार, पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बनाई कोऑर्डिनेशन कमेटी

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर 2024

दिल्ली के 13 हॉटस्पॉट वाले इलाकों में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए "आप" सरकार में है। इस बाबत पर्यावरण मंत्री श्री गोपाल राय ने कोऑर्डिनेशन कमेटी बनाई है। उन्होंने शुक्रवार को दिल्ली सचिवालय में हॉटस्पॉट वाले इलाकों में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने को लेकर संबंधित विभागों के साथ बैठक की। बैठक में अफसरों से विस्तृत जानकारी ली और सभी दिशा-निदेर्शों को कडाई से पालन कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 13 हॉटस्पॉट के लिए बने अलग-अलग एक्शन प्लान के आधार पर काम किया जाएगा। धूल प्रदूषण कम करने के लिए हॉटस्पॉट वाले इलाकों में 80 मोबाइल एंटी स्मॉग गन लगाए गए हैं । साथ ही एमसीडी के डीसी को सभी सम्बंधित अधिकारी के साथ हॉटस्पॉट का लगातार दौरा करने का निर्देश दिया गया है और सभी जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री श्री गोपाल राय ने बैठक के बाद प्रेसवार्ता कर हॉटस्पॉट से संबंधित प्रमुख जानकारियां साझा करते हुए बताया कि दिल्ली के अंदर प्रदूषण एक बड़ी चुनौती के रूप में हर समय मौजूद रहा है। हमारी सरकार बनने के बाद दिल्ली के वायु प्रदूषण स्तर को कम करने के लिए लगातार काम किए हैं। विंटर एक्शन प्लान के तहत निर्धारित किए गए 21 फोकस बिंदुओं के आधार पर विशेष कदम उठाये जा रहे हैं। सर्दी के मौसम में हॉटस्पॉट में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है, जिसको लेकर आज सम्बंधित विभागों के अधिकारियों के साथ की संयुक्त बैठक की गई। हॉटस्पॉट के लिए अलग-अलग एक्शन प्लान बनाई गई है। साथ ही इसके लिए नोडल विभाग भी बनाया गया जो प्रदूषण को काम करने के लिए कार्य करेगा।

प्रदूषण का मुख्य स्त्रोत और उपाय

यहां पर मॉनिटरिंग स्टेशन के पास शहरी विस्तार रोड-2 (यूईआर-2) के निर्माण से भारी धूल उत्सर्जन, आरएमसी प्लांट का संचालन, पास के दिल्ली-रोहतक राजमार्ग पर कच्चे रास्ते और गड्ढों के कारण भारी मात्रा में धूल उड़ना, दिल्ली-रोहतक राजमार्ग पर यातायात की मात्रा अधिक होने और मुंडका औद्योगिक क्षेत्र मेट्रो स्टेशन चौराहे के नीचे यातायात की भीड़, मुंडका पुनर्विकास क्षेत्र के अंदर कच्ची सड़कें, निकटवर्ती डीएमआरसी कास्टिंग यार्ड के अंदर आरएमसी प्लांट का संचालन और डीएमआरसी आवासीय परिसर के पीछे रानीखेड़ा मोड़ लाल बत्ती से शुरू होने वाले शहीद विक्रांत सिंह लाकड़ा मार्ग के गड्ढों और कच्चे साइड से धूल का उत्सर्जन, प्रदूषण का स्त्रोत है। यहां पर महर्षि वाल्मिकी अस्पताल के बाहर अवैध कूड़ा डंपिंग और अस्पताल के बाहर यातायात की भीड़, पूठ खुर्द रोड पर सड़क की धूल, जो बवाना सीएक्यूएमएस स्टेशन के पास है। इसके अलावा दिल्ली-औचंदी रोड के किनारे लोक निर्माण विभाग की सर्विस सड़कों पर सी एंड डी कचरे की अवैध डंपिंग, निमार्णाधीन यूईआर-दो और दिल्ली-औचंदी रोड पर शहीद पार्क से अपना घर आश्रम मोड़ तक के क्षेत्र में भारी यातायात जाम प्रदूषण का स्त्रोत है।

पर्यावरण मंत्री श्री गोपाल राय ने कहा कि हॉटस्पॉट के लिए 13 कोर्डिनेशन टीम बनाई गई है जिसमें एमसीडी के डीसी को नोडल पॉइंट बनाया गया है। सभी हॉटस्पॉट के लिए अलग अलग डीपीसीसी के इंजीनियर को लगाया गया है। साथ ही डस्ट प्रदूषण कम करने के लिए हॉटस्पॉट में 80 मोबाइल एंटी स्मॉग गन लगाए गए हैं।

डीसीपी जितेंद्रमणि त्रिपाठी व डॉ. वेद टंडन फ्रैशर्स पार्टी में।

मिस्टर और मिस फ्रैशर का हुआ चयन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डीजे नाइट ने बढ़ाई शाम की रौनक

डॉ. वेद टंडन ने दी छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

नई दिल्ली, अक्तूबर : ट्रिनिटी इंस्टीच्यूट्स, ग्रेटर नोएडा ने अपने नए छात्रों के स्वागत में भव्य फ्रैशर्स पार्टी का आयोजन किया। यह आयोजन द्वारका स्थित होटल विवांता में हुआ, जहां नए छात्रों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। मुख्यातिथि के रूप में दिल्ली पुलिस के डीसीपी जितेंद्रमणि त्रिपाठी ने छात्रों को जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने और कॉलेज के वर्षो का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. वेद टंडन ने छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं, वहीं महासचिव डॉ. आर.के. टंडन ने छात्रों को सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। निदेशक मंडल के सदस्य हर्ष टंडन, लक्ष्य टंडन और श्रेया टंडन ने भी छात्रों को बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं दीं। इस आयोजन में मिस्टर और मिस फ्रेशर प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डीजे नाइट का आयोजन हुआ। बीसीए प्रथम वर्ष की दिव्यांशी लटवाल को मिस फ्रेशर और बीटेक प्रथम वर्ष के जतिन कुमार को मिस्टर फ्रैशर चुना गया। इस कार्यक्रम ने छात्रों के लिए नए शैक्षणिक वर्ष की शुरूआत को खास और यादगार बना दिया।

मैसी फर्ग्यूसन ब्रांड विवाद में टैफे को अंतरिम जीत

नई दिल्ली, अक्तूबर : मैसी फर्ग्यूसन ब्रांड स्वामित्व के विवाद में टैफे ने एजीसीओ की सहायक कंपनी मैसी फर्ग्यूसन कॉर्पोरेशन के खिलाफ मद्रास उच्च न्यायालय में सिविल मुकद्दमा दायर किया। टैफे ने दावा किया कि भारत में मैसी फर्ग्यूसन ट्रेडमार्क का स्वामित्व उसके पास है और एजीसीओ के हस्तक्षेप को रोकने के लिए अंतरिम निषेधाज्ञा मांगी। न्यायालय ने 17 अक्तूबर को टैफे के पक्ष में अंतरिम राहत प्रदान की, जिसमें एजीसीओ और उसके प्रतिनिधियों को भारत में मैसी फर्ग्यूसन ब्रांड के स्वामित्व का दावा करने से रोका गया। टैफे भारत में प्रमुख ट्रैक्टर निमार्ता है, जिसकी वार्षिक बिक्री 180,000 से अधिक ट्रैक्टरों की है। यह मैसी फर्ग्यूसन, टैफे, आयशर, और आईएमटी ब्रांडों के तहत ट्रैक्टर बेचता है और 80 से अधिक देशों में निर्यात करता है।

प्राकृतिक वायु शोधन क्षमताओं पर आधारित उत्पाद का सफल परीक्षण, आईआईटी ने बनाया प्लांट : बेस्ड एयर प्यूरीफायर

नई दिल्ली, अक्तूबर : वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति के समाधान के लिए, आईआईटी रोपड़ स्टार्टअप यूब्रीथ ने एक प्लांट-बेस्ड क्रांतिकारी एयर प्यूरीफायर यूब्रीथ लाइफ लॉन्च किया है। यह इनडोर प्रदूषण से निपटने के लिए पौधों की प्राकृतिक शोधन क्षमताओं और आधुनिक तकनीक का संयोजन है। इस उत्पाद को आईआईटी कानपुर, आईआईटी बॉम्बे और एनएबीएल लैब्स में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है। यूब्रीथ लाईफ पारंपरिक मैकेनिकल प्यूरीफायर से अलग है क्योंकि यह सभी प्रकार के इनडोर प्रदूषकों को प्रभावी ढंग से हटाने में सक्षम है, जिससे यह पर्यावरण के प्रति एक स्थायी समाधान बन जाता है। यूब्रीथ के सीईओ संजय मौर्या ने कहा, ह्ययूब्रीथ लाईफ को लॉन्च करके हम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उत्साहित हैं।ह्व वहीं, उगाऊ के संस्थापक सिद्धांत ने इसे स्वस्थ जीवन के लिए एक आवश्यकता बताया। यूब्रीथ ने हाल ही में प्री-सीड फंडिंग राउंड पूरा किया है और निकट भविष्य में सीरीज ए फंडिंग की योजना बना रहा है। इस लॉन्च के साथ, यूब्रीथ एक स्वच्छ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में एक नया आंदोलन चला रहा है।

बच्चों में बढ़ रहा हैं वर्चुअल ऑटिझम : विशेषज्ञ

मोबाइल देते हुए खाना खिलाना बच्चे को खुश तो करेगा लेकिन उसका स्वास्थ्य खराब कर सकता हैं

नई दिल्ली, अक्तूबर : बच्चे बढ़ती उम्र में अपने आसपास की चीजों को देखकर सीखते हैं। लेकिन अब ज्यादा तर बच्चे गैजेट्स से जुड़े रहते हैं। इस कारण वह शिक्षा से वंचित रहते हैं। अधिकतर गैजेट्स का उपयोग करने के कारण बच्चे वर्चुअल ऑटिझम हो रहा हैं। इसका अत्यधिक स्क्रीन एक्सपोजर यह एक कारण हैं। मदरहुड अस्पताल के वरिष्ठ सलाहकार-बालरोग विशेषज्ञ और नियोनेटोलॉजिस्ट डॉ. अमित गुप्ता ने कहाँ की, ह्ववर्चुअल ऑटिझम 1- 8 वर्ष की आयु के बच्चों में ऑटिझम जैसी विशेषताओं को अत्यधिक स्क्रीन एक्सपोजर (मोबाइल फोन, टीवी और लैपटॉप) के कारण देखा जाता है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम न केवल बच्चे के शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी परिणाम हो रहा हैं। बच्चे मैदानी खेल से जादा समय मोबाइल के साथ गुजारते हैं। माता-पिता को बच्चे को सिर्फ इसलिए मोबाइल नहीं देना चाहिए क्योंकि वह खाना नहीं खा रहा है। बच्चे को मोबाइल देते हुए खाना खिलाना बच्चे को खुश तो करेगा लेकिन उसका स्वास्थ्य खराब कर सकता हैं।

आम आदमी पार्टी का आपका विधायक आपके द्वार प्रोग्राम पूरी तरह फ्लाप हुआ : वीरेन्द्र सचदेवा

नई दिल्ली, अक्तूबर : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आम आदमी पार्टी का आपका विधायक आपके द्वार प्रोग्राम पूरी तरह फ्लाप हो गया है क्योंकि आप विधायक जनता के बीच जाने की हिम्मत नही जुटा पा रहे हैं। अभी कल ही दिल्ली वालों के सोशल मीडिया में मटियाला के विधायक गुलाब सिंह की एक मतदाता महिला से पिटाई का विडिओ वायरल हुआ तो गत दो तीन महीने में विधायक सोमनाथ भारती के जनसंवाद के विरोध के विडिओ के आलावा विधायकों प्रकाश जरवाल, दिनेश मोहनिया, पवन शर्मा, अमानतुल्लाह खान, संजीव झा, अखिलेश पति त्रिपाठी, अब्दुल रहमान आदि के विवादित विडिओ सामने आते रहते हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की मुख्य मंत्री आतिशी मालेर्ना आज आपका विधायक आपके द्वार प्रोग्राम के अंतर्गत आज अपनी कालकाजी विधानसभा में मुख्य मंत्री सुरक्षा के बीच पहुंची तो भी जनसमर्थन नही जुटा पाई।

दिल्ली के पीतमपुरा में घर में लगी आग, कोई हताहत नहीं

दिल्ली। अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया कि अपराह्न तीन बजकर 35 मिनट पर आग लगने की सूचना मिली और तुरंत पांच दमकल गाड़ियों को मौके पर रवाना किया गया। उत्तर पश्चिम दिल्ली के पीतमपुरा इलाके में शनिवार शाम एक चार मंजिला मकान में आग लग गई। हालांकि, इस घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया कि अपराह्न तीन बजकर 35 मिनट पर आग लगने की सूचना मिली और तुरंत पांच दमकल गाड़ियों को मौके पर रवाना किया गया। उन्होंने बताया कि आग ऊपर की दो मंजिल में लगी थी।

उन्होंने कहा कि करीब 90 मिनट की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया। अधिकारी ने बताया कि आग की वजह से घर जल गया है, लेकिन कोई घायल नहीं हुआ है। पुलिस ने दावा किया कि शार्ट सर्किट की वजह से आग लगी थी।

भाजपा आप सरकार की योजनाओं को रोकने के लिए सत्ता हासिल करना चाहती है : केजरीवाल

दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने पलटवार करते हुए कहा , ह्यह्यदिल्लीवासियों ने अराजकता में लिप्त आम आदमी पार्टी की भ्रष्ट सरकार को खारिज करने का मन बना लिया है।

आम आदमी पार्टी (आप) के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को कहा कि भाजपा दिल्ली में लोगों के वास्ते काम करने के लिए नहीं, बल्कि आप सरकार की मुफ्त बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी योजनाओं को रोकने के लिए सत्ता में आना चाहती है। वह पीतमपुरा में पार्टी कार्यकताओं की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

बिग बॉस 16 की स्टार सुम्बुल ने ऐसा क्या शेयर किया कि सब हैरान हैं

और जानें केजरीवाल ने कार्यकताओं को अंदरूनी कलह के प्रति आगाह करते हुए कहा कि इससे फरवरी में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव में आप की हार हो सकती है। उन्होंने कहा, इस बात की परवाह मत कीजिए कि वहां (चुनाव में) कौन है, क्योंकि केजरीवाल सभी 70 सीट पर लड़ रहा होगा। मैं आपका काम करवाऊंगा, चाहे विधायक कोई भी चुना जाए।

दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने पलटवार करते हुए कहा , ह्यह्यदिल्लीवासियों ने अराजकता में लिप्त आम आदमी पार्टी की भ्रष्ट सरकार को खारिज करने का मन बना लिया है।

सचदेवा ने केजरीवाल पर कटाक्ष करते हुए कहा कि आप ने हाल ही में हरियाणा में हुए विधानसभा चुनाव में 90 सीटों पर ऐसे चुनाव लड़ा जैसे पूर्व मुख्यमंत्री सभी सीटों पर चुनाव लड़ रहे हों और वह सभी सीटों पर हार गई।

केजरीवाल ने कहा कि अगर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सत्ता में आई तो वह बिजली, पानी, महिलाओं के लिए बस यात्रा, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा सहित सभी मुफ्त योजनाएं बंद कर देगी।

दिल्लीवालों आओ, दिल्ली चलाओ अभियान से भाजपा और आप में घबराहट : देवेंद्र यादव

कांग्रेस का जनसमर्थन बढ़ा, भाजपा और आप पर तीखा हमला

नई दिल्ली, अक्तूबर : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने कहा कि दिल्लीवालों आओ, दिल्ली चलाओ अभियान से भाजपा और आम आदमी पार्टी घबराई हुई हैं। कांग्रेस ने दिल्ली के सातों लोकसभा क्षेत्रों में इस अभियान के तहत जनता के विचार और सुझाव लेने का काम शुरू किया है, जिससे जनता को निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जा सके। भाजपा के दिल्ली अध्यक्ष विरेंद्र सचदेवा के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए यादव ने कहा कि भाजपा की घबराहट स्पष्ट है, क्योंकि पिछले 26 वर्षो में दिल्ली की जनता ने लगातार भाजपा को नकारा है। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस ने 15 वर्षों तक दिल्ली में पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त सरकार चलाई और मेट्रो जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं को साकार किया, जिससे दिल्ली को एक वैश्विक पहचान मिली। इसके विपरीत, भाजपा और आम आदमी पार्टी ने दिल्ली को सिर्फ अव्यवस्था और भ्रष्टाचार के जाल में फंसाया है। भाजपा के नेता सत्ता की लालसा में बार-बार मुख्यमंत्रियों को बदलते रहे, जिससे जनता का विश्वास कम हुआ।

बार-बार होने वाली शुष्क त्वचा की स्थिति जानकारी का अभाव है : सर्वे

नई दिल्ली, अक्तूबर : स्किनकेयर ब्रांड बेपैनथेन को भारतीय बाजार में उतार दिया है। साथ ही भारतीय त्वचा विशेषज्ञों के बीच इप्सोस द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि आम लोगों में शुष्क त्वचा की समस्या बहुत ज्यादा है। 82 फीसदी त्वचा विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि मरीज बार-बार होने वाली शुष्क त्वचा को सिर्फ शुष्क त्वचा मानकर अनदेखा कर देते हैं । 7 शहरों में किए गए बेपैनथेन ड्राई स्किन सर्वेक्षण से हमारे देश में ड्राई स्किन की स्थिति की व्यापकता और इस पर त्वचा विशेषज्ञों के नजरिए की जानकारी मिलती है। बेपैनथेन ड्राई स्किन सर्वे के मुताबिक सर्वेक्षण में शामिल 10 में से 9 त्वचा विशेषज्ञों ने माना है कि वर्तमान में वयस्क रोगियों में बार-बार होने वाली शुष्क त्वचा की स्थिति और इसे मैनेज करने के सही तरीके के बारे में जानकारी का अभाव है।

11वीं कक्षा की छात्रा की प्रार्थना सभा के दौरान चक्कर आने से मौत

सफीदों, अक्तूबर : नगर के राजकीय कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल की 11वीं कक्षा की छात्रा की प्रार्थना सभा के दौरान चक्कर आने से मौत हो गई। लड़की की हालत को देखकर स्कूल में हड़कंप मच गया। स्कूल प्रशासन आननफानन में छात्रा को सफीदों के नागरिक अस्पताल में लेकर आया। जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत्यु घोषित कर दिया।

छात्रा की मौत का कारण बीपी डाउन होना बताया जा रहा है। छात्रा की पहचान गांव बहादुरपुर निवासी प्रियंका (17) के रूप में हुई है। इस घटना का समाचार पाकर गांव बहादुरपुर से काफी तादाद में ग्रामीण व परिजन अस्पताल परिसर में पहुंचे। परिजनों का बेटी की मौत को लेकर रो-रोकर बुरा हाल था। मिली जानकारी के अनुसार उपमंडल के गांव बहादुरपुर निवासी प्रियंका (17) हर रोज की भांति अपनी सहेलियों के साथ गांव से पैदल ही सफीदों के राजकीय कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल में पढ़ने के लिए आई थी। वह स्कूल की प्रार्थना सभा में भाग ले रही थी कि इस दौरान उसे अचानक चक्कर आ गया और वह वहीं पर गिर गई। उसकी इस हालत को देखकर स्कूल प्रशासन में हड़कंप मच गया। स्कूल के प्राचार्य बलजीत सिंह लांबा एवं अन्य स्टाफ उसे तत्काल सफीदों के नागरिक अस्पताल में लेकर आया। जहां पर उसका कुछ देर इलाज चला। इलाज के दौरान उसका बीपी डाउन होता चला गया और उसकी मृत्यु हो गई। स्कूल के प्राचार्य बलजीत सिंह लांबा ने बताया कि प्रार्थना सभा के दौरान प्रियंका का बीपी अचानक लो हो गया। स्कूल स्टाफ ने उसके हाथ-पैर मसले और उसे नागरिक अस्पताल में लेकर आए। अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे मृत्त घोषित कर दिया। उन्हे पता चला है कि प्रियंका को पहले भी एक-दो बार चक्कर आए हैं लेकिन उसने कभी भी स्कूल प्रशासन को नहीं बताया। वहीं लड़की के पिता विजेंद्र कुमार का कहना है कि प्रियंका का अचानक बीपी नीचे चला गया। इससे पहले भी उसे ऐसा हो जाता था। शनिवार को वह घर से चाय वगैरह पीकर बिल्कुल ठीक-ठाक आई थी। स्कूल आते-आते वह सबसे बोलकर व अपनी दादी से 10 रूपए भी जेब खर्ची के लिए लेकर आई थी। पिता ने बताया कि प्रियंका पढ़ाई में काफी होशियार थी तथा परिवार में बहुत मिलनसार थी। उसके 5 लड़कियां व एक लड़का है। प्रियंका उनमें तीसरे नंबर की थी।

जानकारी देते हुए लड़की के पिता विजेंद्र कुमार। जानकारी देते हुए स्कूल के प्राचार्य बलजीत सिंह लांबा।

मृत्तक छात्रा प्रियंका

नागरिक अस्पताल में जुटे परिजन।

आर्य समाज मंदिर में साप्ताहिक यज्ञ में डाली गई आहुतियां

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को नगर के आर्य समाज मंदिर में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया, देश समाज एवं सनातन धर्म की रक्षा के लिए साप्ताहिक यज्ञ में आहुतियां डाली गई, जिसमें मौजूदा सम्मानित आर्यजनों ने यज्ञवेदी में वेद मंत्रोच्चार के साथ आहुति दी।आर्य समाज के मंत्री सुरमित गुप्ता ने कहा करवा चौथ व्रत / उपवास का उद्देश्य तभी सार्थक होगा जबकि पति पत्नी का एक दूसरे के प्रति सम्मान , समर्पण ,त्याग , सत्यता ,विश्वास , कृतज्ञता , और मयार्दा का पालन कर, घर में शांति का माहौल बनायेंगे, जिससे पति पत्नी दोनों की लम्बी उम्र होगी तथा घर में धन समृद्धि,सुख,हर्ष और उल्लासपूर्ण वातावरण बनेगा। समाज में यह एक ऐसा त्योहार बने जब पत्नियाँ यह व्रत लें कि पति को हर सुबह योग करवायेगी, उसकी बीड़ी, सिगरेट,शराब पीने की गन्दी आदत छुडवायेगी,तब ही उनके पति की आयु लम्बी होगी। या ऐसा व्रत लें कि पति को बिना हैल्मेट,बिना सीट बैल्ट लगाये वाहन चलाने नही देगी, ऐसा करने से उनके पति की आयु अवश्य लम्बी होगी। या आज के दिन ऐसा व्रत लें कि पति से शस्त्र खरीद कर रखने की जिद्द करें ताकि कोई दैत्य आकर उनके पति का गला न रेत जाए। इस व्रत से उनके पति की आयु अवश्य लम्बी होगी। करवाचौथ पर पत्नियाँ ऐसा व्रत धारण करें, कि वे अपने पति में आत्मबल भर देंगी कि वे देश और धर्म की रक्षा के लिए कुछ भी न्यौछावर कर सकें। करवा चौथ जैसी परम्परा के यही उदेश्य है की दकि यानूसी परम्पराओं से समाज बाहर निकलें और सही व्रतों का पालन करे। जीवन पर संकट आये तो सावधानी और बुद्धिमतापूर्ण ही बचा जा सकता है,मात्र कहानी अथवा व्रत या भूखे पेट से नही। इस अवसर पर मुख्य रूप से आर्य समाज के मंत्री सुरमित गुप्ता ,पुरोहित मिलन आर्य, सविता गुप्ता, इंद्रा गुप्ता, इंद्रपाल आर्य, रोहतास आर्य,पंकज पंवार, आग्नेय, अवनीश मुखिया, ज्ञानप्रकाश भगतजी, शिवानी, ब्रह्मशीला, अमित कुमार शर्मा,आदि उपस्थित रहे।\

यूजीसी नेट लॉ 2024 की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर छात्र को अंबेडकर विकास मंच ने किया सम्मानित

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को नगर के एक मोहल्ले के निवासी युवक द्वारा यू जी सी नेट लॉ 2024 परीक्षा उत्तीर्ण करने पर अंबेडकर विकास मंच ने छात्र के आवास पर पहुंचकर फूलमाला पहनकर एवं मिठाई खिलाकर स्वागत किया, बता ते चले कि नगर के मोहला मनापुर निवासी चित्रपाल सिंह पुत्र रामपाल सिंह ने 2024 की यूजीसी नेट लॉ परीक्षा सम्मानजनक तरीके से पास की है, जिसको लेकर अंबेडकर विकास मंच के कार्यकताओं ने अंबेडकर विकास मंच के अध्यक्ष महेंद्र सिंह आर्य के नेतृत्व में परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्र चित्रपाल को मिठाई खिलाकर, फूलमाला पहनकर एवं भगवान गौतम बुद्ध का सिंबल ऑफ नॉलेज, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी का खूबसूरत चित्र भेंट कर उनके माता-पिता के प्रयास को भी सराहा, इस मौके पर अंबेडकर विकास मंच के अध्यक्ष महेंद्र आर्य ने बताया कि एक सामान्य मजदूर का परिवार का बालक भी अपनी मेहनत के बल पर सफलता हासिल कर सकता है चित्रपाल ने यह है सिद्ध कर दिया की गरीबी कोई मान्य नहीं रखती यदि मन में दृढ़ इच्छा और संकल्प लिया जाए तो कोई भी परीक्षा पास की जा सकती है, महेंद्र आर्य एवं अंबेडकर विकास मंच के सभी लोगों ने चित्रपाल के की सफलता पर उन्हें बधाई दी, बताते चले की चित्रपाल एक सामान्य मजदूर परिवार में पांच भाई बहनों में चौथे नंबर के है, तथा तीन बड़ी बहने शादीशुदा हैं, और छोटा भाई आईआईटी से बीटेक की तैयारी कर रहा है, वही यूजीसी नेट लॉ परीक्षा 2024 उत्तीर्ण करने पर समाज एवं नगर में खुशी का माहौल है, स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से अंबेडकर विकास मंच के अध्यक्ष महेंद्र सिंह आर्य, जगबीर सिंह मौर्य, सुशील भगत जी, ब्रजकिशोर सिंह, विनोद कुमार गौतम आदि मौजूद रहे।

करवा चौथ पर सुहागिनों ने अपने पति की लंबी आयु के लिए रखा उपवास

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को नगर में करवा चौथ के पावन पर्व पर सुहागिन महिलाओं ने अपने पति की लंबी उम्र के लिए पूरे दिन निर्जला व्रत रखा, तथा रात्रि को चंद्रमा के दर्शन कर पति के हाथों से पानी पीकर अपने व्रत का पारायण किया, बता ते चले कि हसनपुर नगर निवासी व्यापारी शरद अग्रवाल की पत्नी सीमा अग्रवाल, वेद प्रकाश यादव की पत्नी कविता यादव, राजेंद्र यादव की पत्नी प्रीति यादव, डॉ अनुज अग्रवाल की पत्नी एकता अग्रवाल, धीरू यादव की पत्नी सीमा यादव, प्रदीप अग्रवाल की पत्नी डोली अग्रवाल, दीपक अग्रवाल की पत्नी अंशु अग्रवाल तथा प्रवीण अग्रवाल की पत्नी सरिता अग्रवाल आदि सहित सभी सुहागिनों ने अपने-अपने पति की लंबी आयु के लिए करवा चौथ का व्रत रखकर उनकी लंबी आयु की कामना की, करवा चौथ पर जहां एक और सुहागिनों ने निर्जला व्रत रखा वहीं रात्रि को चंद्र देवता ने भी व्रत खोलने के लिए महिलाओं को देर से दर्शन दिए, सुहागिन महिलाएं अपने पति एवं बच्चों के साथ बार-बार चंद्र देवता के दर्शन के लिए छत पर जा रही थी रात्रि को लगभग 8:40 पर चंद्र देवता के दर्शन होने के पश्चात महिलाओं ने चंद्र देव को जल अर्पित कर तथा उनकी आरती उतारने के उपरांत अपने-अपने पतियों की आरती उतार कर उनके हाथों से जल पीकर अपना व्रत खोल ' इससे पूर्व महिलाओं ने करवा चौथ की कहानी सुनी और भोग निकला।

वजीर थाना छेत्र में षडयन्त्र कर धन प्राप्त करने का आरोपी गिरफ्तार

दिनांक 31.12.2019 को वादी मुकदमा विवेक गोयल पुत्र बृजेन्द्र कुमार अग्रवाल निवासी 498/206-13 राम कृष्ण मार्ग फैजाबाद रोड लखनऊ की तहरीरी सूचना के आधार पर अभियुक्तगणों द्वारा धोखाधड़ी व कूटरचित दस्तावेज तैयार कर अमानत में खयानत करने के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 712/19 धारा 419/420/406/467/468/471 /120बी भादवि पंजीकृत किया गया था। मुखबिर खास की सूचना पर अभियुक्त पवन सिंह पुत्र राघवेन्द्र निवासी ग्राम भौली थाना बीकेटी लखनऊ को दिनांक 19.10.2024 को स्वास्थय भवन थाना वजीरगंज लखनऊ के पास से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त उपरोक्त मुकदमें में वांछित था सह-अभियुक्तगणों के साथ मिलकर वादी मुकदमा से कूटरचित दस्तावेज से खुलवाये गये बैंक खाते में आपराधिक षडयन्त्र कर धन प्राप्त कर उक्त रकम को अपने खाते में प्राप्त कर लाभ लेना। अभियुक्त उपरोक्त को नियमानुसार गिरफ्तार व हिरासत पुलिस मे लेकर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। 2- मु0अ0सं0 649/18 धारा 504/506 भादवि थाना बक्शी का तालाब लखनऊ।गिरफ्तार करने वाली टीम में उप नि0 नीरज कुमार द्विवेदी, विकास बाबू ,का0 प्रेमचन्द्र यादव थाना वजीरगंज जनपद लखनऊ आदि शामिल रहे।

ट्रैक्टर ट्राली में पीछे से घुसी बाइक, एक की मौत एक घायल

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर/ सैद नंगली। शनिवार की देर शाम थाना सैद नंगली के ढक्का मोड पर ट्रैक्टर ट्राली में पीछे से तेज रफ्तार बाइक घुस गई जिसमें एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई तथा दूसरा युवक घायल हो गया, मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया तथा घायल को हसनपुर सीएससी में भर्ती कर दिया, बताते चलें कि हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव पिपलौती खुर्द निवासी 20 वर्षीय शिवम सैनी अपने साथी अर्जुन के साथ बाइक पर सवार होकर असमोली थाना क्षेत्र के गांव नवादा अपनी ससुराल जा रहा था, जैसे ही उनकी बाइक ग्राम ढक्का मोड़ के नजदीक पहुंची तो लकड़ी से लड़ी ट्रैक्टर ट्रॉली में बाइक घुस गई, प्रत्यक्षदर्शीयों के अनुसार बाइक की रफ्तार काफी तेज थी बाइक और नियंत्रित होकर ट्रैक्टर ट्राली में घुस गई और 20 वर्षीय शिवम सैनी की मौके पर ही मौत हो गई तथा दूसरा युवक अर्जुन गंभीर रूप से घायल हो गया, सूचना पाकर मौके पर पुलिस भी पहुंच गई, पुलिस ने एंबुलेंस की मदद से घायल को हसनपुर सीएससी में भर्ती कराया तथा मृतक के शब को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया, बताया जा रहा है कि मृतक की शादी 9 जून 2024 को हुई थी, वहीं युवक की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है, उधर पत्नी महेंदरी का रो-रो कर बुरा हाल है।

सरकारी टेंडर के नाम पर करोड़ों डकारने वाला ठग गिरफ्तार

लखनऊ। सरकारी विभागों में टेंडर और ठेका दिलाने के नाम पर करोड़ों की ठगी करने वाले अंतरराज्यीय ठग कन्हैया शर्मा को पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ के सेंट्रल जोन के थाना हजरतगंज पुलिस ने गिरफ्तार किया है। कन्हैया शर्मा ने सरकारी विभागों में टेंडर दिलाने का झांसा देकर कई कारोबारियों से भारी रकम वसूली है। पकड़े गये अभियुक्त के खिलाफ पुलिस विधिक कार्यवाही कर रही है। घटनाक्रम के मुताबिक शिकायतकर्ता पवन कुमार सिंह, निवासी बलिया, ने कन्हैया शर्मा पर 19.99 लाख रुपये की ठगी का आरोप लगाया था। शर्मा ने उन्हें बलिया में स्मार्ट मीटर लगाने का ठेका दिलाने का वादा किया था, लेकिन काम के बदले रकम हड़प कर फरार हो गया। इस मामले में हजरतगंज थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था, जिसकी जांच के बाद पुलिस ने आरोपी को धर दबोचा, पुलिस के मुताबिक, कन्हैया शर्मा खुद को बड़े आईएएस, पीसीएस अधिकारियों और राजनेताओं का करीबी बताकर लोगों को अपने जाल में फंसाया था। आरोपी ने अपनी कंपनी एम एस स्वराज क्रांति इन्फ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से कई व्यापारियों को सरकारी टेंडर दिलाने का झांसा देकर करोड़ों की ठगी की है। शर्मा के खिलाफ पहले से ही लखनऊ, वाराणसी, बांदा, महोबा और कानपुर सहित कई जिलों में गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। उसके खिलाफ 406, 420, 467, 468, 471 और 506 जैसी धाराओं में मामले चल रहे हैं। इसके अलावा, विद्युत अधिनियम के तहत भी मुकदमे दर्ज हैं। दिल्ली और मुंबई पुलिस भी उसकी तलाश में थी। कन्हैया शर्मा को 19 अक्टूबर को लखनऊ के सूरजदीप कॉम्प्लेक्स, जापलिंग रोड से गिरफ्तार किया गया। पुलिस का कहना है कि आरोपी ने कई राज्यों में कारोबारियों से ठगी की है और उसके अन्य साथियों की भी तलाश की जा रही है। फिलहाल आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया है, और आगे की जांच जारी है। पुलिस अन्य राज्यों से भी संपर्क कर रही है, ताकि इस गिरोह के बाकी सदस्यों को भी गिरफ्तार किया जा सके। गिरफ्तार अभियुक्त कन्हैया शर्मा पुत्र विन्देश्वरी शर्मा निवासी-बी 603 शालीमार एमराल्ड बटलर पैलेस थाना हजरतगंज लखनऊ कार्यालय पता ई 6 ब्लाक सूरजदीप काम्पलैक्स जापलिंग रोड़ निकट बैंक आफ बडौदा लखनऊ उम्र 45 वर्ष, कम्पनी एम/एस स्वराज क्रान्ति इन्फ्राटेक प्रा०लि० का मालिक है। अन्य जनपदो से भी जानकारी की जा रही है क्योकि कई राज्य/जनपद की पुलिस भी दबिश देने आती रहती थी।

गिरफ्तार करने वाली टीम में- व0उ0नि0 गोपाल शर्मा, कोतवाली हजरतगंज, उ0नि0 सुरेन्द्र सिंह, उ0नि0 इरफान अहमद, आरक्षी सोनू यादव, आरक्षी प्रमोद कुमार शामिल रहे।

पहले खराब सड़कों के लिए यूपी को सुनने पड़ते थे ताने, आज यह एक्सप्रेसवे प्रदेश बन चुका है : नरेन्द्र मोदी

वाराणसी, 20 अक्टूबर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी से 6700 करोड़ रुपये की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी के लिए आज का दिन अत्यंत शुभ है और यह विकास की एक नई गाथा का साक्षी बनने जा रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि 6700 करोड़ रुपये के विभिन्न प्रोजेक्ट्स में एयरपोर्ट, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल और पर्यटन से जुड़े कई विकास कार्य शामिल हैं।

यूपी : एक्सप्रेसवे और एयरपोर्ट प्रदेश

प्रधानमंत्री ने यूपी के विकास की चर्चा करते हुए इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी पूरी टीम को बधाई दी। पीएम मोदी ने कहा कि कभी उत्तर प्रदेश को खराब सड़कों के लिए ताने सुनने पड़ते थे, लेकिन आज यह राज्य एक्सप्रेसवे प्रदेश के रूप में जाना जाता है। यूपी में सबसे अधिक इंटरनेशनल एयरपोर्ट हैं, और जल्द ही जेवर में एक भव्य इंटरनेशनल एयरपोर्ट भी बनकर तैयार हो रहा है। प्रधानमंत्री ने योगी आदित्यनाथ की नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि राज्य में तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं और यूपी अब निवेश और रोजगार का बड़ा केंद्र बनता जा रहा है।

परियोजनाओं से रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे

प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि इस बार की परियोजनाओं में यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के अलग-अलग एयरपोर्ट का भी शुभारंभ किया गया है, जिसमें बाबतपुर एयरपोर्ट के अलावा आगरा और सहारनपुर भी शामिल है। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं से इन राज्यों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।

10 साल पहले सरकार के घोटालों की खबरें छाई रहती थीं

प्रधानमंत्री ने कहा कि जब देश की जनता ने तीसरी बार उन्हें सेवा का अवसर दिया, तो उन्होंने तीन गुना गति से काम करने का वादा किया था। अभी केवल सवा सौ दिन ही हुए हैं, और इस दौरान 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की योजनाओं पर काम शुरू हो चुका है। उन्होंने कहा, "10 साल पहले सरकार के घोटालों की खबरें छाई रहती थीं, जबकि आज देश के विकास की खबरें घर-घर में चर्चा का विषय हैं।"

10 वर्षों में देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास पर बड़ा काम हुआ

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार का उद्देश्य जनता का पैसा जनता पर ही खर्च करना है और इसे पूरी ईमानदारी से करना हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने जोर दिया कि पिछले 10 वर्षों में देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास पर बड़ा काम हुआ है। हाईवे, रेलवे ट्रैक, और ब्रिज जैसी परियोजनाओं से नागरिकों को सुविधा मिल रही है और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

1 लाख नए युवाओं को राजनीति में लाएंगे

प्रधानमंत्री ने युवाओं को राजनीति में आगे लाने की प्रतिबद्धता जताते हुए कहा कि वे 1 लाख नए युवाओं को राजनीति में लाएंगे, जिनका राजनीति से कोई पूर्व कनेक्शन नहीं होगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को परिवारवादियों से सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वे देश और युवाओं का नुकसान करते हैं।

नेत्र रोगियों को नया जीवन देने का प्रतिष्ठित अभियान चला रहा शंकर आई फाउंडेशन: सीएम योगी

वाराणसी, 20 अक्टूबर: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पीएम मोदी की प्रेरणा से काशी के सेवा व विकास के अभियान में नई कड़ी जुड़ी है। आज उत्तर प्रदेश में शंकर आई हॉस्पिटल की द्वितीय शाखा का उद्घाटन हुआ है। शंकर आई फाउंडेशन देश के अंदर नेत्र रोगियों को नया जीवन देने का प्रतिष्ठित अभियान चला रहा है। पूज्य शंकराचार्य की प्रेरणा से 1977 में चला यह अभियान देश के विभिन्न क्षेत्रों में शंकर आई हॉस्पिटल के माध्यम से लोगों के जीवन में नई रोशनी लाने का कार्य कर रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को वाराणसी में आरजे शंकरा नेत्र चिकित्सालय के उद्घाटन समारोह में कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जगद्गुरु शंकर विजयेंद्र सरस्वती व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में अपनी बातें रखीं। सीएम योगी ने कांचिपुरम से काशी तक की इस यात्रा के लिए जगद्गुरु शंकराचार्य व शंकर आई फाउंडेशन का अभिनंदन किया। शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में काशी ने रचे नित नए प्रतिमान सीएम योगी ने कहा कि पीएम मोदी की प्रेरणा, मार्गदर्शन व नेतृत्व में काशी 10 वर्ष में न केवल विकास के नए रूप में देखने को मिल रही है, बल्कि काशी ने शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में नित नए प्रतिमान भी रचे हैं। बाबा विश्वनाथ की पावन धरा में विकास व सेवा के नए-नए प्रकल्प जुड़े हैं। यहां 2500 करोड़ की लागत से स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्य हुए हैं। काशी में पं. मदन मोहन मालवीय कैंसर हॉस्पिटल, होमी भाभा कैंसर हॉस्पिटल, 430 बेडेड सुपर स्पेशियिलिटी हॉस्पिटल बीएचयू के अंदर सर सुंदर लाल हॉस्पिटल में 100 बेडेड एमसीएच विंग, ईएसआईसी हॉस्पिटल में 150 बेडेड सुपर स्पेशियिलिटी ब्लॉक का निर्माण हुआ है। काशी, पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार की बड़ी आबादी की आवश्यकता की होगी पूर्ति सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय चिकित्सालय, लाल बहादुर शास्त्री चिकित्सालय, शिवप्रसाद गुप्त मंडलीय चिकित्सालय का उच्चीकरण, जिला महिला चिकित्सालय कबीरचौरा में 100 बेडेड मैटर्निटी विंग का निर्माण कार्य संपन्न हुआ है। काशी में स्वास्थ्य के बेहतरीन सुविधा के क्रम में आरजे शंकर आई हॉस्पिटल की नवीन इकाई का शुभारंभ हो रहा है। स्वास्थ्य के बड़े हब के रूप में यह काशीवासियों, पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार की बड़ी आबादी की आवश्यकता की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा। 10 वर्ष में उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुए बेहतरीन कार्य सीएम योगी ने कहा कि काशी की तरह उत्तर प्रदेश में भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में 10 वर्ष में बेहतरीन कार्य हुए हैं। हर जनपद में मेडिकल कॉलेज की स्थापना, डायलिसिस-सिटी स्कैन की सुविधा, 15 हजार से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर लोगों को स्वास्थ्य व ट्रेडिशनल मेडिसिन की बेहतरीन सुविधा मिली। पीएम मोदी के नेतृत्व में यह अभियान यूपी में तेजी से बढ़ रहा है। सीएम योगी ने कहा कि इस दिशा में सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र व धर्मार्थ क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, संस्था से जुड़े डॉ. एसवी बाला सुब्रमण्यम, डॉ. आरवी रमणी, मुरली कृष्णमूर्ति, रेखा झुनझुनवाला आदि की मौजूदगी रही।

योगी सरकार विशिष्ट मेहमान और श्रद्धालुओं की सुरक्षा में तैनात करेगी स्नाइपर्स और एनएसजी कमांडो

लखनऊ /प्रयागराज, 20 अक्टूबर:। विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक-धार्मिक आयोजन महाकुंभ 2025 को लेकर योगी सरकार तेज गति से तैयारियों को आगे बढ़ा रही है। प्रयागराज में अगले साल जनवरी माह में मकर संक्रांति पर्व से शुरू होने जा रहे महाकुंभ में पूरी दुनिया से आस्थावान हिन्दू पुण्य की डुबकी लगाने पहुंचेंगे। इसके साथ ही बड़ी संख्या में विश्वभर की बड़ी हस्तियां और राजनयिक भी इस आयोजन में शामिल होंगे। इसे देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर महाकुंभ में सुरक्षा के तगड़े बंदोबस्त किये जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में जल, थल और नभ तक की सिक्योरिटी को फुलप्रुफ बनाया जा रहा है। ऐसे में योगी सरकार ने स्नाइपर, एनएसजी कमांडो, कमांडो स्क्वाड, एटीएस, एसटीएफ, बीडीडीएस और स्निफर डॉग आदि को तैनात करने का फैसला लिया है।

मेला क्षेत्र में स्थापित की जाएगी बुलेट प्रूफ आउट पोस्ट

महाकुंभ मेला एसएसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि महाकुंभ पूरी दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन और आस्था का केंद्र है। ऐसे में पूरी दुनिया से 40 करोड़ श्रद्धालुओं समेत विशिष्ट अतिथि महाकुंभ में आएंगे। इसको ध्यान में रखते हुए सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद किया जा रहा है। इसी के तहत पूरे प्रयागराज, मेला क्षेत्र, प्रमुख स्थानों, मंदिरों और संगम पर विशेष फोर्स का तैनात किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कई देशों के राजनियक महाकुंभ में शिरकत करेंगे। ऐसे में एंटी ड्रोन सिस्टम का इस्तेमाल किया जाएगा। वहीं मेला क्षेत्र में कई जगह बुलेट प्रूफ आउट पोस्ट बनायी जाएगी। यह पोस्ट मेला क्षेत्र के सभी एंट्री, एग्जिट प्वाइंट, पार्किंग स्थल, प्रमुख मंदिर समेत अन्य स्थानों पर बनायी जाएगी।

इसके अलावा एनएसजी कमांडो की 2 टुकड़ियां और 26 एएस चेक (एंटी सबोटाज) टीम तैनात की जाएगी। यह टीम पूरे शहर में चेकिंग आदि करेगी। एसएसपी ने बताया कि मेला क्षेत्र में एटीएस कमांडो की 4 और एसटीएफ की 3 टुकड़ियों को तैनात किया जाएगा। इतना ही नहीं बम खोज एवं निरोधक दस्ता बीडीडीएस की 6 टीमे भी मौजूद रहेंगी।

20 स्नाइपर, 3 स्निफर डॉग और 4 स्वॉन दल की टीमों को किया जाएगा तैनात

एसएसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि विशिष्ट अतिथियों की सुरक्षा के लिए 20 स्नाइपर, 3 स्निफर डॉग, 4 स्वॉन दल को तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही 30 स्पाटर्स की टीमों को भी लगाया जाएगा। इन टीमों के सदस्य पूरे शहर में तैनात रहेंगे, जो हर संदिग्ध और अराकजतत्वों पर विशेष नजर रखेंगे। वहीं 9 कमांडो स्क्वाड की टीम चप्पे-चप्पे की निगेहबानी करेगी।

उन्होंने बताया कि महाकुंभ के दौरान श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाएंगे। इसके लिए उत्तराखंड पीएसी की 2 टुकड़ियों को संगम पर तैनात किया जाएगा। दरअसल, उत्तराखंड की पीएसी की यह टुकड़ी पानी के अंदर की गतिविधियों को बारीकी से समझती है और यह काफी एक्सपर्ट भी होते हैं, इसलिए इन्हे संगम के पास तैनात किया जाएगा। इस टीम में एक डीएसपी, 4 इंस्पेक्टर, 20 सब इंस्पेक्टर, 35 हेड कांस्टेबल और 65 कांस्टेबल होंगे।

सीएम योगी को जलशक्ति मंत्री ने सौंपा प्रोजेक्ट्स कॉरपोरेशन के 54 लाख के लाभांश का चेक

लखनऊ, 20 अक्टूबर:। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अथक प्रयास और सतत मॉनीटरिंग से उत्तर प्रदेश पिछले कई वर्षों से रेवन्यू सरप्लस स्टेट बना हुआ है। इसी कड़ी में यूपी प्रोजेक्ट्स कॉरपोरेशन ने रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लाभांश का चेक सौंपा है। कॉरपोरेशन ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को 54 लाख लाभांश का चेक सौंपा है। इस दौरान जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे। वित्तीय वर्ष 2023-24 में 1448.24 करोड़ रुपये रहा कॉरपोरेशन का टर्नओवर जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बताया कि उनके मार्गदर्शन में यूपी प्रोजेक्ट्स कॉरपोरेशन नित नई ऊचाइयों को प्राप्त कर रही है। उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में कॉरपोरेशन का टर्नओवर 1448.24 करोड़ रुपये का रहा। कॉरपोरेशन द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 में अर्जित टैक्स पूर्व लाभ, जोकि कॉरपोरेशन की स्थापना से अब तक का सर्वाधिक 87.80 करोड़ रुपये है। वहीं वित्तीय वर्ष 2023-24 में टर्नओवर और लाभ का अनुपात 6.06 है। इस वित्तीय वर्ष में 30.65 करोड़ रुपये का आयकर भुगतान किया गया जबकि अप्रत्यक्ष कर जीएसटी 323 करोड़ रुपये रहा। इसी तरह वित्तीय वर्ष का अर्जित ब्याज का भुगतान 78 करोड़ रुपये है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 62.04 करोड़ का नेट प्राफिट किया अर्जित जलशक्ति मंत्री ने बताया कि कॉरपोरेशन का वित्तीय वर्ष 2019-20 में 417.86 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2020-21 में 478.69 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2021-22 में 843.77 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2022-23 में 982.54 करोड़ रुपये टर्नओवर रहा। इसी तरह नेट प्राफिट वित्तीय 2019-20 में 7.69 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2020-21 में 13.52 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2021-22 में 42.31 करोड़ रुपये, वित्तीय वर्ष 2022-23 में 62.04 करोड़ रुपये रहा।

कुंभ नगरी प्रयागराज के सड़क, चौराहों और दीवारों को सजाने-संवारने के बाद अब शहर के उद्यानों का भी श्रृंगार कर रही योगी सरकार

प्रयागराज, 20 अक्टूबर। कुंभ नगरी प्रयागराज में 2025 में आयोजित होने जा रहे महाकुंभ को प्रदेश की योगी सरकार दिव्य ,भव्य और नव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारियां कर रही है। एक तरफ जहां कुंभ क्षेत्र के अंदर उच्च स्तरीय सुविधाओं के विकास का प्रयास जारी हैं तो वहीं कुंभ क्षेत्र के बाहर शहर को भव्य स्वरूप देने के लिए सड़कों, चौराहों से लेकर शहर की दीवारों तक को कुंभ की पौराणिकता में रंगने की कवायद चल रही है। महाकुंभ के पहले कुंभ नगरी प्रयागराज सज रही है, संवर रही है। सड़क , चौराहे और दीवारों के बाद अब बारी है शहर के उन प्रमुख पार्कों की जहां महाकुंभ आने वाले आगंतुक भ्रमण कर सकते हैं। 6 प्रमुख पार्कों का सौंदर्यीकरण उप निदेशक उद्यान कृष्ण मोहन चौधरी बताते हैं कि उद्यान विभाग की तरफ से शहर के 6 प्रमुख पार्कों का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। इसके लिए सरकार ने 495.97 लाख का बजट जारी कर दिया है। टेंडर की प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी है। शहर के जिन पार्कों को इसके लिए चुना गया है उसमें शहीद चंद्र शेखर आजाद पार्क, खुसरो बाग, सर्किट हाउस पार्क, बोर्ड ऑफ रेवेन्यू पार्क, हाईकोर्ट परिसर पार्क और टीबी सप्रू हॉस्पिटल पार्क शामिल है। इनमे सबसे अधिक 276.89 लाख का बजट आजाद पार्क के लिए है। इसके बाद खुसरो बाग के 59.09, हाईकोर्ट के लिए 44.18 , सर्किट हाउस के लिए 37.58 लाख , रेवेन्यू बोर्ड के लिए 33.13 लाख और टीबी सप्रू हॉस्पिटल के लिए 30.34 लाख का बजट आवंटित किया गया है। आधुनिक प्रकाश व्यवस्था इसके लिए जहां पार्कों में गुलाब वाटिका बनाई जाएंगी तो वहीं टवेयरी और रॉकेरी का निर्माण होगा। पार्कों को शाम के समय खास लुक देने के लिए आधुनिक प्रकाश व्यवस्था भी होगी। पार्कों में बोलार्ड लाइट, एलईडी स्टिंग लाइट, सोलर डेकोरेटिव लाइट और एलईडी रोप लाइट भी यहां लगाई जाएंगी।महाकुंभ आने वाले पर्यटक और श्रद्धालु कुम्भ क्षेत्र में भ्रमण करने के बाद शहरी क्षेत्र में इन पार्कों की खूबसूरती भी देख सकेंगे।

महाकुंभ 2025 के दौरान कोई भी श्रृद्धालु नहीं सोएगा भूखा

प्रयागराज, 20 अक्टूबर। प्रयागराज में होने जा रहे महाकुंभ 2025 के दौरान यहां आने वाला कोई भी श्रद्धालु, कल्पवासी भूखे पेट नहीं सोएगा। योगी सरकार की ओर से इसके लिए मेला क्षेत्र में व्यापक तैयारियां की हैं। पूरे मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं के लिए भंडारों का तो आयोजन किया ही जाएगा, साथ ही उन्हें मुफ्त राशन की सुविधा का भी लाभ मिलेगा। कई-कई दिनों तक महाकुंभ में रहने वाले कल्पवासियों और श्रद्धालुओं के राशन कार्ड बनाए जाएंगे और उन्हें राशन की सुविधा प्राप्त होगी। पहले से राशन कार्ड धारण करने वालों को भी राशन कार्ड दिखाने पर राशन प्रदान किया जाएगा। इसके लिए खाद्य एवं रसद विभाग द्वारा पूरे मेला क्षेत्र के सभी सेक्टर्स में कुल 160 उचित दर वाली राशन की दुकानों की स्थापना की जाएगी, जहां से दो बार (जनवरी-फरवरी) में राशन प्रदान किया जाएगा। राशन के भंडारण के लिए 5 गोडाउन भी स्थापित होंगे। इस पूरी परियोजना पर 43 करोड़ से ज्यादा की धनराशि खर्च की जाएगी। जनवरी और फरवरी में मिलेगी सुविधा एडीएम मेला, विवेक चतुर्वेदी के अनुसार महाकुंभ के दौरान कई ऐसे श्रद्धालु आते हैं जो कई-कई दिनों तक मेला में प्रवास करते हैं। इन्हें कल्पवासी कहा जाता है। ये अपना भोजन स्वयं पकाते हैं। इनकी सुविधा के लिए खाद्य एवं रसद विभाग की ओर से पूरे मेला क्षेत्र के सभी सेक्टर्स में उचित दर वाली कुल 160 राशन की दुकानें स्थापित की जा रही हैं। जहां न सिर्फ इनका राशन कार्ड बनाया जाएगा, बल्कि इन्हें राशन की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। जिनके पास पहले से ही राशन कार्ड है, उन्हें भी सुविधा प्राप्त होगी। यह सुविधा दो बार यानी जनवरी और फरवरी 2025 में उपलब्ध कराई जाएगी। राशन की कमी न हो, इसके लिए मेला क्षेत्र के अंदर ही 5 गोडाउन भी स्थापित किए जा रहे हैं। एलपीजी सिलेंडरों की बिक्री के लिए अलग से होगी आउटलेट्स परियोजना के अनुसार कल्पवासियों एवं श्रद्धालुओं को खाद्यान्न, चीनी एवं रसोई गैस उपलब्ध कराया जाएगा। एलपीजी सिलेंडरों की बिक्री के लिए अलग से आउटलेट्स लगाए जाएंगे। 10 लाख स्थायी आबादी के अतिरिक्त अस्थायी आबादी के भोजन के लिए भंडारों का आयोजन किया जाएगा, जहां प्रतिदिन राशन की आपूर्ति की जाएगी। एक अनुमान के अनुसार एक राशन कार्ड में 5 लोग होते हैं तो इस लिहाज से दो माह में तकरीबन 2 लाख राशन कार्ड की आवश्यकता होगी। खास बात ये भी होगी कि इस सुविधा का लाभ बड़े अखाड़ों और शिविरों में रहने वाले श्रद्धालुओं और कल्पवासियों को भी मिलेगा। प्रति व्यक्ति प्राप्त होगा 3 किलो गेहूं और 2 किलो चावल परियोजना के तहत राशन कार्ड धारक को 3 किलो प्रति व्यक्ति के हिसाब से गेहूं/आटा प्रदान किया जाता है, जबकि प्रति व्यक्ति 2 किलो चावल (फोर्टिफाइड) की आपूर्ति होगी। इसी तरह 2 किलो चीनी (प्रति व्यक्ति), 2 ली. मिट्टी का तेल (प्रति राशन कार्ड) और एक डॉमेस्टिक गैस कनेक्शन प्रदान किया जाता है। डॉमेस्टिक गैस कनेक्शन को एक बार रीफिल कराने की भी सुविधा मिल सकती है।

हरियाणा

हरियाणा में बिना पर्ची बिना खर्ची फामूर्ले ने निभाई महत्वपूर्ण भूमिका - डा अशोक

करनाल सुखविन्द्र सोही

हरियाणा। के पूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय मंत्री मनोहर लाल का इन चुनावों में बिना पर्ची बिना खर्ची फामूर्ला हिट रहा और इस फामूर्ले ने विधानसभा चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी डा अशोक कुमार ने बताया कि हरियाणा सरकार ने योग्यता के आधार पर जो बिना पर्ची बिना खर्ची लोगों को नौकरियां देने का काम किया उसका प्रदेश के युवाओं को काफी लाभ मिला इसके अतिरिक्त इन चुनावों में भाजपा के रणनीतिकारों ने धरातल पर जाकर काम किया। बिना पर्ची व खर्ची के सरकारी नौकरियों की उपलब्धता तथा एक गरीब परिवार के बच्चे को बिना पैसे के नौकरी देने की उपलब्धियां लेकर भाजपा के साथ-साथ स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता भी लोगों के बीच पहुंचे। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार की उपलब्धियों का प्रचार प्रसार किया गया। भाजपा ने गरीब व दलित कल्याण की योजनाओं को बड़े ही सुनियोजित तरीके से लोगों तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की है। शहरी मतदाताओं को चूंकि

भाजपा का बंधा हुआ वोट बैंक माना जाता है, इसलिए भाजपा व संघ के नेताओं का पूरा फोकस ग्रामीण मतदाताओं को जागरूक करने पर रहा, जिसमें पार्टी को काफी सफलता मिली है। इसी का नतीजा है कि प्रदेश में भाजपा की जीत में साइलेंट वोटर अपना पूरा योगदान दे गया।

जुण्डला चौंकी प्रभारी द्वारा क्षेत्र के लोगों को धान के अवशेष जलाने से वातावरण में होने दूषप्रभावों से अवगत करवाते हुए, अवशेष न जलाने को किया जागरूक

जुण्डला। सुखविन्दर सोही

जुण्डला। पुलिस अधीक्षक करनाल श्री मोहित हाण्डा के दिशा निदेर्शों अनुसार आज दिनांक 20.10.2024 को जुण्डला चौंकी प्रभारी उप निरीक्षक विनोद कुमार द्वारा अपनी टीम के साथ क्षेत्र के लोगों के बीच में पहुंचकर उन्हें धान के अवशेष न जलाने के लिए जागरूक किया गया। उन्होंने लोगों से कहा कि पराली जलाने से बहुत अधिक मात्रा में वायु प्रदूषित होती है, जिसका हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। उन्होंने वैज्ञानिक ढ़ंग से लोगों को बताया कि एक एकड़ धान के खेत से लगभग 2.5 टन पराली निकलती है, जिसे जलाने पर वातावरण में एक टन कार्बनिक कार्बन और कई प्रदूषक निकलते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। उन्होंने किसानों से कहा कि फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी की सतह का तापमान इतना अधिक बढ़ जाता है कि मिट्टी की पैदावार शक्ति बढ़ाने वाले अधिकांश जीव मर जाते हैं, जो मिट्टी की उपरी परत में पोषक तत्व परिवर्तन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उन्होंने कहा कि सभी किसान खेतों में फसल अवशेष जलाने की बजाए इनको अपनी आय का स्त्रोत बनाएं, इस संबंध में प्रशासन द्वारा भी सख्त आदेश जारी किए गए हैं और जो व्यक्ति इन आदेशों की अवहेलना कर पराली जलाने का प्रयास करेगा उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। विनोद कुमार ने लोगों से कहा कि हालही में प्रशासन के आदेशों की अवहेलना करने वाले कुछ लोगों के खिलाफ मामले भी दर्ज किए गए हैं।

कांग्रेस के जो नेता हिसाब मांगते घूम रहे थे उनका हिसाब जनता ने चुनाव में कर दिया : पंडित मोहन लाल बड़ौली

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के साथ।

सोनीपत, अक्तूबर : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा है कि कांग्रेस के जो नेता हिसाब मांगते घूम रहे थे उनका हिसाब हरियाणा की जनता ने चुनाव में कर दिया। अब कांग्रेस के विधायक पूर्व सीएम हुड्डा का भी हिसाब करेंगे। श्री बड़ौली ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारी डबल इंजन की सरकार सेवा, सुशासन, समानता, समृद्धि और गरीब कल्याण के लिए समर्पित रहेगी। पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने 2014 से पहले भाई-भतीजावाद, परिवारवाद और भ्रष्टाचार का जो वातावरण बनाया था उसको भाजपा ने पूरी तरह से समाप्त कर दिया है। भाजपा सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मूलमंत्र पर काम करते हुए गरीब कल्याण की योजनाओं को गरीब के घर तक पहुंचाने का काम कर रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि चुनाव के समय हमने हर मंच से यह बात कही थी कि कांग्रेस का हिसाब जनता करेगी। कांगेस के जो नेता हिसाब मांगते घूम रहे थे उनका हिसाब करने का काम जनता ने किया है। श्री बड़ौली ने कहा कि

अब कांग्रेस के विधायक पूर्व सीएम हुड्डा का भी हिसाब करेंगे : बड़ौली

भाजपा ने जो संकल्प पत्र जारी किया था उसे भाजपा सरकार संकल्प के साथ पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जो वादे किए उन्हें भी पूरा करने का काम जारी रहेगा। बड़ौली ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी ने 24 हजार युवाओं को नौकरी देने की बात कही थी। सीएम सैनी ने 24 हजार युवाओं को रोजगार देकर अपना वादा पूरा किया है। श्री बड़ौली ने युवाओं को नौकरी देने पर मुख्यमंत्री नायब सैनी का धन्यवाद भी किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बड़ौली ने कहा कि हरियाणा प्रदेश को सर्वश्रेष्ठ, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने में भाजपा सरकार कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

जो करेंगे ईमानदारी से करेंगे, न खाऊंगा न खाने दूंगा : महीपाल ढांडा

ईमानदारी से बड़ी कोई चीज नहीं : महीपाल ढांडा ,कैबिनेट मंत्री बनने पर महीपाल ढांडा का कार्यकर्त्ताओं ने किया स्वागत

कैबिनेट मंत्री बनने पर महीपाल ढांडा का कार्यकर्ता फूलो की बड़ी माला से स्वागत करते हुए (दाएं) कैबिनेट मंत्री महीपाल ढांडा कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करे हुए।

पानीपत, अक्तूबर : हरियाणा के कैबिनेट मंत्री बनने के बाद आज पानीपत ग्रामीण विधायक महीपाल ढांडा के पानीपत आगमन पर हजारों कार्यकर्त्ताओं ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया। कार्यकर्त्ताओं ने लड्डू बाटकर महीपाल ढांडा के हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री बनने पर खुशी मनाई। कार्यकर्ता ढोल व डीजे पर नाचते हुए मंत्री के साथ उनके एल्डिको स्थित निवास पर पहुँचे। अपने निवास पर पहुँचकर महीपाल ढांडा ने सभी कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि पानीपत ग्रामीण विधानसभा उसका अपना परिवार है और इस परिवार के आशीर्वाद से ही वो आज राजनीति में इतने आगे बढ़ रहे है। उन्होंने कहा कि काम करने के लिए ही पानीपत ग्रामीण की जनता ने उनको चुना है आप लोग काम करवाइये मैं काम करने के लिए 24 घण्टे आपकी सेवा में रहता हूं लेकिन आप लोगो से निवेदन है कि आप अपने भाई से कोई गलत काम मत करवाना। उन्होंने कहा कि ईमानदारी से बड़ी कोई चीज नही है और आप लोग भी अगर ईमानदारी से कोई काम शुरू करना चाहते है तो महीपाल आप सबकी हर सम्भव सहायता करेगा। हम सबको साथ लेकर ईमानदारी से आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि जैसे जैसे पद बढ़ता है तो जिम्मेदारियां भी बढ़ती है और कुछ कठिनाइयां भी साथ आती है कुछ समस्याएं भी साथ आती है और इन समस्याओं से निपटने के लिये मुझे आप सभी का सहयोग चाहिए आपका भाई ईमानदारी के साथ काम करेगा और आप लोगो को जीवन मे कभी भी ये सोचकर शर्मिंदगी महसूस नही होगी के आपने गलत इंसान को चुना है। इस अवसर पर उनको बधाई देने के लिये भाजपा नेता लोकेश नांगरु, कृष्ण आर्य, वीरेन्द्र सैनी, रामकुमार सैनी, संजय त्यागी, अर्जुन शर्मा, संजीव दहिया, बिट्टू सरदार, मनजीत कौर, अनिल बजाज, पवन बाल्मीकि, अतर सिंह रावल एडवोकेट सुभाष सैनी, ईशम कुमार पांचाल, बिजेंद्र पांचाल, आशु शर्मा, भूपेन्द्र पांचाल, मोहर सिंह सैनी, मेहरचंद जांगड़ा, प्रेम तोमर, रविन्द्र मंडावर, विनोद दुधला, जोगिन्द्र रोहिला, विनोद सैन, जितेन्द्र पटवा, पप्पू प्रजापत, कपिल राणा, अमित राणा, राजपाल, जितेन्द्र अहलावत, नीरज पांचाल, अनिल शर्मा आदि मौजूद रहे।

धधक रहा ज्वालामुखी, कभी भी फूट सकता लावा : कुमारी सैलजा

चंडीगढ़, अक्तूबर : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा से लोकसभा सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार के अंदर कुछ भी ठीक नहीं है। अंदर ही अंदर ज्वालामुखी सा धधक रहा है, जो कभी भी लावा की तरह फूट कर बाहर आ सकता है। अभी तक की गतिविधियों से साफ है कि प्रदेश सरकार के हाथ बंधे ही रहेंगे, जबकि यहां का रिमोट केंद्र की सरकार के पास रहेगा। वहां से जैसा बटन दबेगा, सरकार आगे-पीछे चलती रहेगी। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा कि राज्य सरकार के गठन और मंत्रियों को महकमे मिलने में हो रही देरी से साफ है कि मंत्रियों के बीच वर्चस्व व मलाईदार महकमे को लेकर अंदरूनी जंग चल रही है। इसलिए बार-बार दिल्ली दरबार के चक्कर मुख्यमंत्री को लगाने पड़ रहे हैं। सरकार के बीच एक-दूसरे को शह-मात का खेल चल रहा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पहले आचार संहिता और अब महकमे वितरण में देरी के कारण प्रदेश भगवान भरोसे है। सरकार में शामिल किसी को भी प्रदेश के लोगों की सुरक्षा की फिक्र तक नहीं है। यही कारण है कि जींद में व्यापारी से एक करोड़ रुपए की रंगदारी मांगी जा रही है। लगातार खराब हो रही कानून व्यवस्था को सुधारने के लिए राज्य सरकार कोई कदम उठाना तो दूर, ध्यान तक नहीं दे रही। कुमारी सैलजा ने कहा कि नारनौंद की अनाजमंडी में आढ़ती व किसान धरने पर बैठते हैं, ताकि इनकी आवाज सरकार तक पहुंचे और फिर धान की खरीद शुरू हो सके। इनका आरोप है कि 15 दिन से मंडी में खरीद ही नहीं हो रही, जबकि, राज्य सरकार दावा करती है कि धान का एक-एक दाना खरीदा जा रहा है। आढ़तियों व किसानों का धरना राज्य सरकार के दावों की पोल खोल रहा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह भाजपा की प्रदेश सरकार की ही नाकामी है, जो हरियाणा में पंजाब से कहीं अधिक महंगाई हो चुकी है।

कुमारी सैलजा

प्रदेश में महंगाई देश की राष्ट्रीय औसत के मुकाबले कहीं अधिक रफ्तार से बढ़ रही है। 6 महीने के दौरान सब्जियों के दाम दोगुने हो चुके हैं, जबकि दाल, फल व अनाज के दामों में भी बढ़ौतरी का सिलसिला जारी है। कुमारी सैलजा ने कहा कि 10 साल से लोगों का दिवाला निकालने में जुटी भाजपा सरकार जनता के लिए किसी भी तरह से फिक्रमंद नहीं है। अन्यथा, तीसरी बार सरकार बनाने के बाद अब तक महंगाई पर काबू पाने की कोशिश शुरू कर देती।

मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना भी अब सेवा का अधिकार अधिनियम के दायरे में हुई शामिल : धीरेंद्र खड़गटा

नूंह, अक्तूबर : कुछ दिन पहले हरियाणा सरकार ने महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से चलाई जा रही मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना को सेवा का अधिकार अधिनियम, 2014 के दायरे में शामिल किया है। साथ ही, इसके तहत प्रदान किए जाने लाभों के लिए 45 दिन की समय-सीमा भी निर्धारित की गई है। मुख्य सचिव की ओर से इस आशय की एक अधिसूचना जारी की जा चुकी है। उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने बताया कि मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना के तहत जिला कार्यक्रम अधिकारी को पदनामित अधिकारी जबकि कार्यक्रम अधिकारी (पोषण)/उप-निदेशक को प्रथम शिकायत निवारण प्राधिकारी और संयुक्त निदेशक/अतिरिक्त निदेशक को द्वितीय शिकायत निवारण प्राधिकारी नामित किया गया है।

क्या है मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना

उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने बताया कि महिला एवं बाल विकास विभाग ने गर्भावस्था में प्रसव पीड़ा के दौरान नुकसान की भरपाई व स्तनपान कराने वाली महिलाओं में पोषण सुनिश्चित करने के लिए ह्यमुख्यमंत्री मातृत्व सहायताह्न योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत दूसरे बच्चे के रूप में लडके को जन्म देने वाली अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाएं इस योजना का लाभ उठा सकती हैं। उन्होंने बताया कि अब 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांग महिलाओं सहित मनरेगा जॉब कार्ड, ई-श्रम कार्ड, बीपीएल राशन कार्ड, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना और किसान सम्मान निधि की लाभार्थी महिलाएं भी इस योजना का लाभ लेने के लिए पात्र होंगी। इस योजना के लिए आधार कार्ड अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना का लाभ लेने के लिए आंगनबाड़ी वर्कर या आशा वर्कर के माध्यम से आवेदन किया जा सकेगा। केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई कामगार महिलाओं के लिए पहले से प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना संचालित की जा रही है, जिसके तहत पांच हजार रुपये की सहायता राशि तीन किस्तों में दी जाती थी। अब सरकार द्वारा नियमों में बदलाव कर सहायता राशि दो किस्तों में देने का निर्णय लिया है।

अनजान व्यक्ति ने निकाले 4800 रुपए, केस दर्ज

जगाधरी, अक्तूबर : बाइक सवार युवक को अनजान व्यक्ति को लिफ्ट देना महंगा पड़ गया। उसने जेब से 4800 रुपए चोरी कर लिए। इसका पता भी तब लगा, जब उस व्यक्ति को उतार दिया और बाइक सवार आगे रेहड़ी पर फल खरीदने लगा। बूड़िया थाना पुलिस ने केस दर्ज कर कार्यवाही शुरू कर दी। फतेहगढ़ निवासी अशोक कुमार ने बताया कि वह रात को बूडि?ा चौंक से बाइक पर आ रहा था। तभी रास्ते में एक व्यक्ति ने उससे लिफ्ट मांगी, जिसे बूडिया जाना था। रात होने के चलते उस व्यक्ति को लिफ्ट दी। उसे बूडिया में पंजाब नेशनल बैंक के पास उतार दिया। इसके बाद बूडिया अड्डे पर ही रेहड़ी पर फल लेने के लिए रूका। जब पैंट की जेब में डाला तो उसमें 4800 रुपए नहीं थे।

हरियल रैस्ट हाऊस में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी का स्वागत करते मंडी प्रधान राजेश शर्मा व अन्य।

24 हजार युवाओं को योग्यता के आधार नौकरी मिलना मुख्यमंत्री के युवा कल्याण संकल्प पर मोहर : कृष्ण बेदी

नरवाना, अक्तूबर : हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री बनने के बाद कृष्ण कुमार बेदी पहली बार शनिवार को अपने विधानसभा क्षेत्र नरवाना पहुंचे। हरियल रेस्ट हाऊस में कैबिनेट मंत्री के आगमन पर जिला प्रशासन की तरफ से उपायुक्त मोहम्मद इमरान रजा तथा एसपी सुमित कुमार ने उनकी अगवानी की और पुष्प गुच्छ देकर उन्हें बधाई दी। गर्मजोशी के साथ किए स्वागत का कार्यकर्त्ताओं में आलम यह था कि उत्साह के साथ ढोल- नगाड़ो, आतिशबाजियों के साथ मंत्री की एक झलक पाने के लिए सभी कार्यकर्ता बेताब दिखे। करीब दो घंटे चली इस स्वागत प्रक्रिया में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने भी प्रत्येक कार्यकर्त्ता से गले मिलकर चुनाव में दिये उनके समर्थन के लिए आभार वक्त किया। युवाओं, महिलाओं तथा बच्चों में भी मंत्री के साथ सैल्फी लेने की होड़ लगी रही। कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने प्रेस वार्ता में कहा कि नरवाना जैसी मरू भूमि में पहली बार कमल खिलने से क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि लगातार भाजपा की सरकार के बनने का जहां लोगों द्वारा अवसर प्रदान किया गया है, वहीं जन भावनाओं की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की वर्तमान सरकार के सामने चुनौती भी पेश की है। उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव में मिली बंपर जीत मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी तथा उनकी सरकार के लिए जन आशीर्वाद के साथ-साथ जनता की उम्मीदों के अनुसार विकास कार्य करने का आइना भी है। कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने कहा कि मौजूदा राज्य सरकार किसान, युवा तथा गरीब कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता मानकर काम करेगी और प्रदेश में शांति व्यवस्था, विकास तथा शिक्षा प्रसार के उद्देश्य पर निरंतर गतिमान रहेगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेश के युवाओं से वादा किया था कि शपथ ग्रहण से पहले परीक्षा दे चुके हजारों युवा बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करेंगे और हाल ही में 24 हजार युवाओं की सरकारी नौकरी में नियुक्ति मुख्यमंत्री के युवा कल्याण के प्रति उनके संकल्प पर मोहर लगाती है, साथ ही स्पष्ट किया कि इन सभी युवाओं को सरकार की पारदर्शी नीति की बदौलत बिना पर्ची व बिना खर्ची मैरिट के आधार पर नौकरी मिली है। वहीं कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने आस्था की प्रतिमूर्ति बाबा गैबी साहिब के मंदिर तथा सर्वजातिय बिनैण खाप के दनौदा कलां स्थित चबूतरे पर दादा रामेश्वर तीर्थ पर जाकर माथा टेका और आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर तेजेंद्र ढुल, राजेश शर्मा, प्रमोद शर्मा, अमित ढ़ाकल, राजेंद्र नैन, रिछपाल शर्मा, भगवान दास गर्ग, मनदीप चहल, बलदेव वाल्मिकी, हंसराज समैण, जोरा सिंह बड?पुर, मन्नु छाबड़ा, वीरेन्द्र नैन, सुरेंद्र बनवाला सरपंच, दिनेश गोयल, हनीश छाबड़ा सहित अनेक पदाधिकारी एवं वरिष्ठ कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

हमारी सरकार बन गई है और अब सबसे पहले अंबाला छावनी के नागरिक अस्पताल में एस्कलेटर का उद्घाटन सोमवार को किया जाएगा : अनिल विज

विज की अधिकारियों को चेतावनी, यहां पर वही अधिकारी रहेगा जो काम करेगा

अम्बाला छावनी, अक्तूबर : हरियाणा के कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि हमारी सरकार बन गई है और अब सबसे पहले जो नागरिक अस्पताल में एस्कलेटर लगाया है उसका उद्घाटन सोमवार को किया जाएगा। विज ने फिर से अधिकारियो को चेतावनी देते हुए कहा कि यहाँ पर वही अधिकारी रहेगा जो काम करेगा। अनिल विज आज अपने चिरपरिचित अंदाज में अम्बाला के टी प्वाइंट पर पहुंचे जहां पर भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने लोगो को लड्डू बांटकर अपनी खुशी जाहिर की। वहीं कैबिनेट मंत्री अनिल विज के आवास पर उन्हें विधानसभा चुनाव में जीत की बधाईयां देने वालों का तांता लगातार लग रहा है। शनिवार मंत्री अनिल विज के आवास पर विभिन्न सामाजिक संगठनों के अलावा अलग-अलग जिलों से आए उनके चाहने वालों ने उन्हें बधाईयां दी।

काम किया है, काम करेंगे, ये मेरा नारा रहा है : विज

विज ने कहा कि हमने तो चुनाव खत्म होते ही जो भी विकास कार्य चल रहे है उसका मुआयना करना शुरू कर दिया व अधिकारियो को आदेश दिए कि तेज गति से कार्यो को पूरा किया जाए।

पराली जलाने का केस माननीय सुप्रीम कोर्ट में चल रहा : विज

सरकार के पराली जलाने को लेकर भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि सरकार किसानों को डराने का काम कर रही है साथ ही कांग्रेसी नेता रणदीप सुरजेवाला ने कहा है कि अगर सरकार ये फैसला वापिस नहीं लेती तो कांग्रेस आंदोलन करेंगी, इस पर पलटवार करते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि ₹पराली जलाने का केस माननीय सुप्रीम कोर्ट मे चल रहा है, अब हुड्डा साहेब सो सो के जाग रहे है अब माननीय उच्चतम न्यायलय के क्या आदेश है उसको देखा जायेगा और उसके मुताबिक ही काम होगा₹।

बापू-बेटा हर रोज मुख्यमंत्री बनाकर सोते थे लोगों ने इनको नकार दिया था : विज

सुरजेवाला के आंदोलन करने के ब्यान पर विज ने कहा कि ₹करो अब पांच साल तक तुमने यही करना है क्योंकि जनता ने तो तुम्हे नकार दिया, जब तुम्हे जनता की जरुरत थी तब तो जनता तुम्हारे साथ आई नहीं। जबकि तुमने (विपक्ष) कहा कि एंटी कम्बेसी है और बापू-बेटा हर रोज मुख्यमंत्री बनाकर सोते थे तब लोगो ने तुम्हे नकार दिया था₹।

लगता है कि कांग्रेस की दुकान बंद होने वाली है: विज

कांग्रेस के विधानसभा चुनाव हारने के बाद कांग्रेसी नेता कैप्टन अजय यादव ने अपने हर पद से इस्तीफा दे दिया है इसको लेकर अनिल विज ने कहा कि ₹जो हालत कांग्रेस की हुई है उससे लगता है कि कांग्रेस की दुकान बंद होने वाली है और हो सकता है कुछ और लोग भी कैप्टन का अनुसरण करें।

मंत्री अनिल विज को जित की बधाई देते सामाजिक संगठनों के लोग।

कैबिनेट मंत्री डा. अरविंद शर्मा ने एक दर्जन गांवों में धन्यवादी दौरा कर गोहाना हलके के लोगों का जताया आभार

गोहाना विधानसभा क्षेत्र में पहुंचने पर कैबिनेट मंत्री का लोगों ने किया जोरदार स्वागत ,हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाकर आमजन ने भाजपा डबल ईंजन सरकार की नीतियों पर लगाई है मुहर : डा. अरविंद शर्मा

गरीब, अन्नदाता के कल्याण व नारी सशक्तिकरण को समर्पित हरियाणा सरकार, 5 साल में प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिए किए जाएंगे ऐतिहासिक कार्य

कैबिनेट मंत्री डा. अरविंद शर्मा एक दर्जन गांवों में धन्यवादी दौरा कर गोहाना हलके के लोगों का आभार जताते हुए।

गोहाना/सोनीपत, अक्टूबर : गोहाना से विधायक बनाकर चण्डीगढ विधानसभा भेजने पर कैबिनेट मंत्री डा. अरविंद शर्मा ने शनिवार को एक दर्जन से अधिक गांवों में धन्यवादी दौरा कर गोहाना हलके के लोगों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि गोहाना हलके के लोगों का ही प्यार है जो उन्हें कैबिनेट मंत्री का पद मिला, लोगों के इसी प्यार और विश्वास पर आगे बढ़ते हुए अगले पांच साल में गोहाना क्षेत्र के विकास में कोई कौर कसर नहीं छोड़ी जाएगी। इस दौरान उनकी धर्मपत्नी रिटा शर्मा भी उनके साथ मौजूद रही।

कैबिनेट मंत्री डॉ0 अरविंद शर्मा धन्यवादी दौरे के दौरान सबसे पहले गांव बड़वासनी पहुंचे जहां बाहरा के प्रधान जसबीर बड़वासनी के नेतृत्व में ग्रामीणों ने फूल बरसाकर व फूल मालाओं से उनका जोरदार स्वागत किया। इसके बाद कैबिनेट मंत्री गांव रतनगढ़, करेवड़ी, जुआं, ट्राली, रोलद, सरगथल, कासंडी, कासंडा, खानपुर, गामड़ी, गढ़ी उज्जालेखां पहुंचे, जहां ग्रामीणों ने उनका जोरदार स्वागत किया।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि प्रदेश की जनता ने तीसरी बार बहुत बड़े बहुमत के साथ हरियाणा और केन्द्र की भाजपा डबल ईंजन सरकार की कल्याणकारी नीतियों पर मुहर लगाई है। चुनाव के दौरान विपक्ष ने जो नैरेटिव बनाया, उसे जनता ने धराशाही करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में भाजपा सरकार ने नौकरियों में खर्ची-पर्ची का अंत किया और आज उसका यह परिणाम निकला की आज गरीब परिवारों के बच्चों भी अपनी योग्यता के आधार पर नौकरियां प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नायब सैनी ने मुख्यमंत्री पद पर बाद में ज्वाईनिंग की पहले प्रदेश के योग्य 24 हजार युवाओं को सरकारी नौकरियों में पहले ज्वाईन करवाने का कार्य कर अपने चुनावी वायदे को पूरा किया।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता के कल्याण व नारी सशक्तिकरण के लिए कृत संकल्प होकर कार्य करेगी। हर क्षेत्र -हर वर्ग की जरूरतों के अनुसार नये निर्णय लाए जाएंगे और पहले से चल रहे कार्यों को नॉन-स्टॉप आगे बढ़ाया जाएगा। विकसित भारत के संकल्प में हरियाणा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा कि 5 साल में प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिए ऐतिहासिक कार्य किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री कार्यालय प्रमुख क्लास सैनी को भेंट किया।

कुरुक्षेत्र सुखविंदर सोही

पांचाल। ब्राह्मण समाज करनाल के प्रधान बंसीलाल पांचाल ब्राह्मण के नेतृत्व मे मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी को भाजपा की जीत की खुशी में लड्डू बांट कर गुलदस्ता भेंट कर मुख्यमंत्री कार्यालय प्रमुख क्लास सैनी को भेंट किया।

पांचाल ब्राह्मण समाज के प्रवक्ता बनारसी दास
पांचाल ब्राह्मण समाज के संघरक्षक पाल सिंह
अंतोदय परियोजना प्रदेश प्रमुख राजवंती पांचाल
कुरुक्षेत्र पांचाल ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ नेता जयंत पांचाल
पांचाल ब्राह्मण समाज रोहतक से कर्ण सिंह पांचाल
इत्यादि उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय विद्यालय कबड्डी खेल प्रतियोगिता में भोजपुर बना विजेता।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। खेल विभाग बिहार राज्य खेल प्राधिकरण बिहार पटना तथा पश्चिम चंपारण के संयुक्त तत्वावधान में राज्य स्तरीय विद्यालय कबड्डी खेल प्रतियोगिता 2024 दिनांक 15 से 20 अक्टूबर 2024 तक पश्चिमी चंपारण जिला मुख्यालय अंतर्गत महाराजा स्टेडियम बेतिया में संपन्न हो गया। इस खेल प्रतियोगिता में आयु वर्ग अंडर-19 बालक बिहार प्रदेश के 35 जिले के खिलाड़ियों ने अपनी कला कौशल का शानदार प्रदर्शन किया ।जमुई, मुंगेर ,मुजफ्फरपुर तीन जिले के टीम की सहभागिता नहीं रही। इस खेल प्रतियोगिता में करीब 500 बालक खिलाड़ी ,टीम प्रभारी ,टीम कोच की उपस्थित रहे। विजय कुमार पंडित जिला खेल अधिकारी ने बताया कि प्रथम सेमीफाइनल बेगूसराय बनाम जहानाबाद के बीच खेला गया जिसमें बेगूसराय ने जहानाबाद को हराकर फाइनल में जगह बना ली वही दूसरी तरफ दूसरा सेमीफाइनल भोजपुर बनाम नवादा के बीच खेला गया जिसमें भोजपुर की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल के लिए जगह पक्की कर ली ।आज राज्य स्तरीय कबड्डी खेल प्रतियोगिता का फाइनल मैच भोजपुर बनाम बेगूसराय के बीच खेला गया जिसमें बेगूसराय टॉस जीतकर भोजपुर को रेड करने के लिए विवश कर दिया । भोजपुर की टीम फाइनल मैच में मध्यांतर के पूर्व बेगूसराय पर हावी रही । एक समय ऐसा आया कि दोनों टीमों का स्कोर दो के अंतराल पर चल रही थी ।मध्यांतर के पूर्व भोजपुर का स्कोर 26 जबकि बेगूसराय का स्कोर 19 रही।मध्यांतर की बाद भोजपुर की टीम अपनी रणनीति तय करते हुए शुरू से ही बेगूसराय पर हावी रही । भोजपुर की टीम 40 अंक बटोर कर उक्त राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता 2024 के विजेता का ताज अपने नाम कर लिया जबकि बेगूसराय को 30 अंक पर संतोष कर उपविजेता बनने का इतिहास रचा । उक्त खेल प्रतियोगिता के संचालनार्थ विभाग द्वारा प्रतिनियुक्त तकनीकी पदाधिकारी पंकज

कुमार सिंह ,पंकज कश्यप, गौतम कुमार, अभिषेक कुमार, मुकेश कुमार सिंह आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समापन समारोह के मुख्य अतिथि बेवी कुमारी वरीय उपसमाहर्ता -सह- जिला पंचायत राज पदाधिकारी धिकारी तथा श्री एस प्रतीक प्रभारी विकास शाखा -सह-वरीय उपसमाहर्ता ने संयुक्त रूप से विजेता ,उपविजेता दोनों जिला टीमों के खिलाड़ियों को मेडल ,ट्रॉफी को संयुक्त रूप से प्रदान किए। जिला पंचायत राज पदाधिकारी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कही कि जीवन में हार -जीत का क्रम जीवन में हमेशा चलता रहता है । ईश्वर का यह शाश्वत नियम है ।इससे घबराना नहीं चाहिए बल्कि अपनी कमी को सुधार कर निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए ताकि बिहार का नाम राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में हो सके।मौके पर अजय कुमार अध्यक्ष जिला हैंडबॉल संघ ,संदीप कुमार अध्यक्ष जिला तलवारबाजी संघ प्रवीण कुमार ,मंजय प्रसाद, अजय मिश्रा ,मोहम्मद जमील, वीर विक्रांत ,दीपक वर्मा ,संजय तिवारी शारीरिक शिक्षक ,खेल प्रेमी आदि मौजूद रहे ।विभाग द्वारा प्रतिनियुक्त तकनीकी पदाधिकारी द्वारा प्रदर्शन के आधार पर बिहार टीम का चयन कर लिया गया है। यही चयनित खिलाड़ी राष्ट्रीय कबड्डी अंडर-19 बालक खेल प्रतियोगिता जो हरियाणा में माह दिसंबर के चौथा सप्ताह में आयोजित होगी बिहार राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सी पी एम का 14 वा बैरिया लोकल सम्मेलन बरगछिया में संपन्न

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) का 14 बैरिया लोकल सम्मेलन का. सीताराम येचुरी नगर बरगछिया में संपन्न हुआ । सर्व प्रथम पार्टी का झण्डा बिहार राज्य सचिवमंडल सदस्य प्रभुराज नारायण राव ने फहराया।शहीद बेदी पर माल्यार्पण किया गया। शोक प्रस्ताव सुनील यादव ने पेश किया । सम्मेलन का उदघाटन पार्टी की बिहार राज्य सचिवमंडल सदस्य प्रभुराज नारायण राव ने करते हुए कहा कि मोदी सरकार हमारी देश की धर्मनिरपेक्ष नीतियों को समाप्त कर रही है ।यह सरकार अमेरिकी साम्राज्यवाद की चाटुकारी कर रही है ।हमारा देश फिलीस्तीन मुक्ति आंदोलन को समर्थन देती रही है ।हमारा देश युद्ध के विरुद्ध शांति का पक्षधर रहा है। लेकिन मोदी सरकार युद्धखोर इजरायल के पक्ष में खड़ी है ।हमें अपनी देश की नीतियों को बचाना है। पार्टी के जिला सचिव चांदसी प्रसाद यादव ने समापन करते हुए कहा कि हमारी पार्टी का सम्मेलन 3 साल पर नियमित रूप से होता है। इसी रोशनी में यह 14 वा बैरिया लोकल सम्मेलन हो रहा है ।उन्होंने बताया कि पार्टी का पश्चिम चम्पारण जिला सम्मेलन 16 झ17 नवम्बर को नौतन प्रखण्ड के खड्डा पंचायत में होगा ।बिहार राज्य सम्मेलन 22,23 ,24 दिसम्बर को दरभंगा में होगा तथा 24 वीं पार्टी कांग्रेस 3 से 6 अप्रैल तक तमिलनाडु के मदुरई में होगा। सम्मेलन की अध्यक्षता काशी साह तथा संचालन जनवादी नौजवान सभा के जिला सचिव संजीव कुमार राव ने किया। 13 सदस्यीय नई लोकल कमिटी का चुनाव हुआ। जिसका सचिव सुनील यादव चुने गए। नई लोकल कमिटी के सदस्य अवधेश पाण्डेय,संजय राव, हरिओम यादव, अशर्फी पटेल,बंशी पटेल, भरत शर्मा,राजरूप यादव,मिश्री यादव ,नीतीश कुमार,कमलेश कुमार निर्वाचित हुए।

संपूर्ण समाधान दिवस में छः शिकायतों का मौके पर हुआ निस्तारण

■ **महोबा**

तहसील कुलपहाड़ में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जिला स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। इसमें अपर जिलाधिकारी न्यायिक शिशिर कुमार, पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल, मुख्य विकास अधिकारी हरेंद्र कुमार सिंह, उपजिलाधिकारी कुलपहाड़ अनुराग प्रसाद द्वारा लोगों की समस्याओं को सुना गया। इस मौके पर तहसील कुलपहाड़ से कुल 74 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 06 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। इसी प्रकार तहसील चरखारी में उपजिलाधिकारी प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में 76 में से 06 तथा तहसील महोबा में अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे मोईनुल इस्लाम की अध्यक्षता में 61 में से 08 शिकायतों का निस्तारण मौके पर किया गया।

शिकायतों का अनुश्रवण करते हुए अपर जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी शिकायतों का निस्तारण समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण तथा संतुष्टि के आधार पर किया जाए। उन्होंने कहा कि शिकायत का निस्तारण करने से पहले शिकायत कर्ता से जरूर बात की जाए।शिकायत निस्तारण से यदि शिकायत कर्ता संतुष्ट नहीं है तो शिकायत को निस्तारित नहीं माना जायेगा। यह भी कहा कि अधिकारी गण आईजीआरएस और सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निपटान में लापरवाही न बरतें, इन शिकायतों के बारे में मुख्यमंत्री कार्यालय से फीडबैक लिया जाता है।अतः शासन के मंशा के अनुरूप सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये हर फरियादी की छोटी या बड़ी प्रत्येक समस्या को गम्भीरता से सुना जाए और कागज पर नही बल्कि धरातल पर शिकायतों का निस्तारण कर समय सीमा के अन्तर्गत ही उनका निराकरण भी सुनिश्चित किया जाए ताकि फरियादियों को इधर-उधर अपनी समस्याओं को लेकर भटकना न पड़े। उन्होंने कहा शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता की जॉच की जायेगी। यदि निस्तारण में फर्जी वाड़ा मिला तो निश्चित ही निस्तारण करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने कहा कि लेखपाल जब अपने क्षेत्र के ग्रामों में जाएँ तब दिग्गी पिटवाकर ग्रामीणों को सूचित करें और उनकी समस्याएं सुनकर उनका निस्तारण करें, यदि कोई बड़ी समस्या है तो अपने उपजिलाधिकारी को अवगत कराएं।

हीनभावना से की गई खेती होती है घाटे का सौदाः अयोध्या

कृषि मेला विज्ञान और वैज्ञानिकता के लिए किसान व वैज्ञानिकों का साझा कार्यक्रमः कुलपति

■ **बांदा**

कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय किसान मेले को संबोधित करते हुए पूर्वराज्यमंत्री अयोध्या सिंह पटेल ने कहा कि आज हम अन्न, दुग्ध, फल, सब्जी और मांस पर आत्मनिर्भर हैं। खेती में कृषि वैज्ञानिकों का योगदान व कुछ कृषक वैज्ञानिकों ने इसे और सुदृ? बनाया है। खेती-बारी करने के लिये कभी भी हीनभावना मन में नहीं लाना चाहिए। बिना मन से किये गये खेती बारी हमेशा घाटे का सौदा होता है। आज के समय बहुत से किसान कृषि के क्षेत्र में नया करके दिखाया है, और सीमित संसाधनों एवं कठिनाईयों के बाद भी उत्पादन लेने में सफल हुए हैं। पहले किसान अच्छी स?कें न होने से अपने उत्पाद को बाजार तक नहीं पहुँचा पाते थे, परन्तु आज ऐसा नहीं है।

मुख्य अतिथि श्री पटेल ने कहा कि विश्वविद्यालय विभिन्न फसलों के उन्नतशील प्रजातियों के बीज उपलब्ध करा रहा है यह एक सराहनीह कार्य है। वास्तव में किसान मेले का उद्देश्य किसानों व आदान वितरकों तथा तकनीकी उपलब्ध कराने वाले संस्थाओं के संगम के लिये लागाया जाता है, जिससे अधिक से अधिक कृषक लाभान्वित हो सके। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील पटेल ने कहा कि किसानों के पास खेती-बारी से सम्बन्धित अनेक सम्स्यायें हैं। समस्याओं का समाधान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से किया जाए। इसके लिए जरूरी है कि किसान व वैज्ञानिक विश्वविद्यालय और प्रक्षेत्र पर संवाद करें। कृषि विश्वविद्यालय इस क्षेत्र के लिये एक गौरव है इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ यहां के युवाओं और किसानों को उठाना चाहिए। कम सिंचाई वाली फसलों को लगाकर सिंचाई जल कि समस्या से समाधान पाया जा सकता है। कुलपति नरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि किसान मेला इस क्षेत्र के किसानों एवं अन्य हित धारकों के लिये एक ब?ा कार्यक्रम है। जिसे शोधोपरान्त क्षेत्रानुकूल तकनीकियों को प्रसारित करने का एक सुगम साधन है, जिसे विश्वविद्यालय अपने संसाधनों से आयोजित करता है। बुन्देलखण्ड के कृषक विश्वविद्यालय द्वारा कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे नवाचार को जान सके। इसके लिये वैज्ञानिक, कृषक और आदान वितरक एक प्लेटफार्म पर अपने हित साझा करते हैं। किसान मेला विश्वविद्यालय का एक नियमित कार्यक्रम है जिसे विश्वविद्यालय पिछले कई वर्षों से आयोजित कर रहा है। कृषक, आदान वितरक व सम्मानित जनप्रतिनिधियों का सहयोग मिला तो ऐसे कार्यक्रम विश्वविद्यालय आयोजित करता रहेगा। किसान मेले में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम, मथुरा के प्रधान वैज्ञानिक, डा. बी. राय ने बुन्देलखण्डी बकरी इस क्षेत्र के लिये वरदान है ऐसा कहा। बकरी पालन से आजीविका के साथ-साथ किसानों की आय में वृद्धि हो रही है इसके कई उदाहरण बताये। डा0 राय ने बताया कि मेले के साथ-साथ केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम, मथुरा के तत्वावधान में आदिवासी ग्रामीण किसानों एवं महिलाओं को बकरी पालन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्यान महाविद्यालय के सभागार में किया जा रहा है। जिसमें प्रथम दिवस में मानिकपुर क्षेत्र के ग्राम झरी, ?ाडी कोलान, करहुआ व मानिकपुर कल्याण केन्द्र के लगभग 200 किसानों ने प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया।प्रसार निदेशालय के निदेशक प्रसार, प्रो. एनके वाजपेयी ने कहा कि किसान मेले में कुल 104 स्टॉल जिसमें सरकारी विभागों, खाद उर्वरक, बीज, पादप रासायन, खाद्य सामग्री हस्त शिल्प आयूर्वेद, कृषि यंत्र एवं मशीनिरी बनाने वाली संस्थाओं व छात्रों ने लगायें हैं।

प्रो. बाजपेयी ने बताया कि मेले का समापन रविवार को कृषि, कृषि शिक्षा व अनुसंधान, सूर्य प्रताप शाही द्वारा किया जाना सुनिश्चित है। मेले का उद्घाटन अयोध्या सिंह पटेल ने डीएम नगेन्द्र प्रताप व अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में फीता काटकर व दीप प्रज्जवलित करके किया गया। मेले में बुन्देलखण्ड के सभी 07 जिलों के कृषि विज्ञान केन्द्रों के मार्गदर्शन में लगभग 300-300 किसान एवं युवाओं ने प्रतिभाग किया।

डीएम ने स्टालों का किया निरीक्षण

कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय किसान मेला का शुभारम्भ डीएम नगेन्द्र प्रताप और अयोध्या सिंह पटेल ने किया। डीएम ने किसान मेले में आयोजित विभिन्न स्टालों का गहनता से निरीक्षण किया। उन्होंने कृषि प्रसार, शोध एवं प्राकृतिक खेती का मॉडल तथा सामुदायिक विकास, केन्द्रीय दलहन अनुसंधान के स्टाल तथा मृदा एवं जल संरक्षण एवं वानकीय मॉडल सहित अन्य स्टालों का निरीक्षण करते हुए प्राकृतिक खेती को बढावा दिये जाने और किसानों को जागरूक करने पर जोर दिया। निरीक्षण के दौरान निदेशक प्रसार डॉ. एनके बाजपेई सहित संयुक्त निदेशक कृषि तथा कृषि विभाग से सम्बन्धित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुई नीरज गुप्ता का नाम।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

पश्चिम चंपारण। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्यों द्वारा अर्जित उपलब्धि हासिल कर बेतिया के डॉ नीरज गुप्ता का नाम लन्दन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज किया गया है। निरोजा ग्रीन इंडिया परिवार फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष डॉ नीरज गुप्ता द्वारा समाज सेवा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में विगत कई सालों से भारत के अनेक राज्यों समाज की सेवा एवं पर्यावरण सुरक्षा का बीड़ा उठाए हुए भारत के कई राज्यों में अपना सेवा प्रदान कर रहे हैं श्री गुप्ता ने बताया कि निरोजा ग्रीन इंडिया परिवार फाउंडेशन के बैनर तले विगत 5 सालों से पर्यावरण की सुरक्षा एवं स्वच्छता के लिए निरोजा परिवार लगातार स्कूल, कॉलेज और रोड पर अवेयरनेस कार्यक्रम करते आ रहे हैं अभी तक जिले के 500 से ऊपर स्कूलों में पर्यावरण सुरक्षा और स्वच्छता के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम चला चुके हैं। एक मिडिल क्लास फैमिली से निकल कर डॉ नीरज गुप्ता ने न केवल अपनी परिवारिक जिम्मेदारियों को निभाया बल्कि समाज और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं सन 2016 से वह स्वच्छ भारत मिशन ब्रांड एंबेसडर के रूप में नगर परिषद से नगर निगम बेतिया में अपना योगदान दे रहे है। डॉ नीरज गुप्ता द्वारा पर्यावरण और संस्था के जागरूकता के साथ-साथ दूसरे पर्यावरण प्रेमी और समाज सेवियो को भी समय समय पर को सम्मानित करते रहते है। डॉ नीरज गुप्ता ने सम्मान ग्रहण करते हुए बताया की यह सम्मान चंपारण वासियों का आशीर्वाद और अभूतपूर्व सहयोग और योगदान भी सम्मिलित है इस सम्मान के लिए लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की पूरी टीम का हृदय से आभार धन्यवाद जताया। डॉ नीरज गुप्ता के सम्मान की खबर पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों और सामाजिक संस्थाओं और साथ ही डॉ एजाज अहमद सत्याग्रह रिसर्च फाऊंडेशन, डॉ बी. एल. यादव दिल्ली , पदम श्री डॉ विजय शाह सांगली महाराष्ट्र,दो परविंदर सिंह न्यूज पेज 3 फाउंडर थाईलैंड, डॉ रामकृष्ण साह शिकागो अमेरिका, अध्यक्ष मदर ताहिरा चेरिटेबल ट्रस्ट, संत डॉक्टर सौरभ पांडे, फाउंडर धरा धाम इंटरनेशनल, मिस्टर अमरेश पांडे शिक्षक, अमित लोहिया, शिवकुमार सिंह शिक्षक के साथ चम्पारण वासियो ने डॉ नीरज गुप्ता को शुभकामनाएं प्रेषित की। मुजफ्फरपुर भारतीय असलियत मोर्चा की बैठक जलील हुसैन हाउस पर हुई जिसमें इसराइल के आतंकवादियों द्वारा हमास के प्रमुख याहिया सावर कोशाहिद किए जाने की करें शब्दों में निंदा किया इस घटना की जितनी निंदा की जाए वह कम है इसराइल के नेतन्याहू ने पूरी दुनिया के सामने लाखों बेगुनाह का कत्ल करके अपना आतंकवादी का चेहरा दिखा दिया है जिसको पूरी दुनिया के लोग अच्छी तरह से जान और पहचान रहे हैं इसराइल के पास मानवता नाम की कोई चीज नहीं है इजरायल की आतंकवादी हुकूमत ने लाखों बेगुनाह का खून बहाया है छोटे-छोटे बच्चों को शहीद किया बूढ़े लोगों को मारा औरतों का हत्या किया इसराइल मानवता का

कातिल है पूरे दुनिया केहुकुम रा हाथ पर हाथ रख कर बैठे हुए हैं जैसे लगता है कि ना उनको कुछ दिखाई दे रहा है और नहीं वह कुछ सुन रहे हैं उन बेगुनाहों का खून कभी रहेगा नहीं जाएगा फिलिस्तीन और मस्जिद ए अक्सा आजाद होकर रहेगा और इजराइल का नाम और निशान मिट जाएगा ऊपर वाले ने चाहा तो बहुत जल्द नेतन्याहू वासिले जहन्नम हो जाएगा जहन्नम ऐसे लोगों का इंतजार कर रहा है दुनिया से अदल इंसाफ खत्म हो चुका है एक पूरी दुनिया में ईरान है जो हमेशा मजलूम का हिमायत नहीं करता रहा है इसी वजह से अमेरिका इजरायल और जितनी भी बतील ताकत है वह सब उसके दुश्मन है कुदरत की ताकत ईरान के साथ है इंशाल्लाह दुनिया की सभी बातील ताकतों का बहुत जल्द खत्मा हो जाएगा और घर-घर से सदा अल्लाह हू अकबर की आएगी यहां तक के घनटीयो से भी अल्लाह हू अकबर की आवाज आएगी दुनिया से हर जुल्म और खत्म हो जाएगा परवरदिगार का नाम बाकी रहेगा अमेरिका मुदार्बाद इसराइल मुरदा मुदार्बाद।

एसपी ने पनवाड़ी कोतवाली की परखी व्यवस्थाएं

■ **पनवाड़ी**

पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल द्वारा शनिवार को पनवाड़ी कोतवाली का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान थाना कार्यालय के अभिलेखों, बैरिक, मैस, मालखाना, हवालात, महिला हेल्पडेस्क, साइबर हेल्प डेस्क, कंप्यूटर कक्ष इत्यादि का निरीक्षण, थाना परिसर का भ्रमण कर साफ-सफाई का निरीक्षण, लम्बित मामलों का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना कार्यालय का निरीक्षण कर महत्वपूर्ण रजि. यथा- त्यौहार, अपराध, भूमि विवाद, बीट सूचना अंकन रजिस्टर, सजायवी रजिस्टर तथा फ्लाईशीट का गहनता से अवलोकन कर सम्बन्धित थाना प्रभारी को महिला अपराधों के प्रति अधिक संवेदनशीलता बरते जाने व त्वरित कार्यवाही के निर्देश दिये गये हैं। साथ ही अभिलेखों के उचित रख-रखाव के साथ अद्यावधिक किये जाने के लिए भी निर्देशित किया गया । प्रभारी निरीक्षक थाना पनवाड़ी सहित थानाहाजा में नियुक्त पुलिस कर्मियों से वार्ता कर उनके कार्यो की समीक्षा की गई है, जिसके क्रम में सभी को थानाक्षेत्र में सुदृढ कानून व्यवस्था के दृष्टिगत निर्देशित किया गया कि क्षेत्र में निरंतर भ्रमणशील रहें, प्रत्येक छोटी बड़ी घटना पर पैनी नजर रखते हुए सतर्कता के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। इस अवसर पर प्रभारी निरीक्षक थाना पनवाड़ी मनीष कुमार पाण्डेय, पीआरओ अरविन्द सिंह गौर सहित थाना स्थानीय पर नियुक्त समस्त अधि0/कर्मचारीगण मौजूद रहे।

बेतिया में प्रोडक्ट मेला लगा ग्राहको भीड़ उमड़ी।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। लोन लेने वाले व्यक्ति का सरकारी बैंक में खाता धारी हो तो हमारी यह कंपनी लोन देने की प्रक्रिया कर रही है। आईआईएफएल सामस्ता फाइनेंस कंपनी के एरिया मैनेजर म0 असलम ने बताया कि यदि किसी व्यक्ति को लोन लेने की जरुरत हो तो हमारी कंपनी के शर्त पर लोन ले सकते है। आगे बताया कि काफी सरल तरीके से आम आदमी को हम लोग लोन दे रहे है। इसके लिए आवेदन के साथ कुछ जरूरी कागजात जमा करना होगा। असलम ने आगे बताया कि यह बैंक आवेदक को एक मुश्त प्रथम बार में पचास हजार तक दिया जाता है। इसके वापस करने के बाद ज्यादा रकम दिया जाता है। साथ ही जो लोग जुड़ते हैं उन्हें घरेलू उपयोग का सामान भी किस्त पर दिया जा रहा है।

2030 तक हो जायेगा बाल विवाह मुक्त भारत- शंकर दयाल

चित्रकूट। 2030 तक बाल विवाह मुक्त भारत के लिए सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला है बाल विवाह बच्चों के अधिकारों का हनन, कानून पर अमल के लिए किया गया। इसके दिशा निर्देश जारी किये है। शीर्ष अदालत ने कहा कि बाल विवाह अपनी मर्जी से जीवनसाथी चुनने के अधिकार का हनन होता है। जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति के शंकर दयाल पयासी ने कहा कि गैरसरकारी संगठन सेवा और कार्यकर्ता निर्मल गोराना की याचिका पर आया फैसला दोनों ही 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान के सदस्य और सहयोगी ने की अपील पर यह फैसला 2030 तक देश से बाल विवाह का खात्मा सुनिश्चित करेगा। बाल विवाह मुक्त भारत 200 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों का गठबंधन है जिसने अकेले 2023-24 में पूरे देश में 120,000 से भी ज्यादा बाल विवाह रुकवाए और 50,000 बाल विवाह मुक्त गांव बनाए देश में बाल विवाह कानून पर एक ऐतिहासिक फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून के प्रभावी तरीके से कार्यान्वयन के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी करते हुए कहा कि बाल विवाह अपनी मर्जी से जीवनसाथी चुनने के अधिकार को छीनता है। सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से देश में बाल विवाह के खात्मे के प्रयासों को मजबूती मिलेगी और हम राज्य सरकार से अपील करते हैं कि वह इन दिशा निर्देशों पर तत्काल प्रभाव से अमल करे ताकि 2030 तक भारत को बाल विवाह मुक्त बनाने के लक्ष्य को हासिल किया जा सके।

सार संक्षेप

68 वर्ष के हुए अभिनेता सनी देओल

मुंबई: बॉलीवुड के जानेमाने अभिनेता सनी देओल आज 68 वर्ष के हो गए। 19 अक्टूबर 1956 को जन्में सनी देओल को अभिनय की कला विरासत में मिली। उनके पिता धर्मेन्द्र हिंदी फिल्मों के जाने माने अभिनेता थे। घर में फिल्मी माहौल रहने के कारण सनी अक्सर अपने पिता के साथ शूटिंग देखने जाया करते थे इस वजह से उनका भी रुझान फिल्मों की ओर हो गया और वह भी अभिनेता बनने के ख्वाब देखने लगे। सनी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मुंबई से पूरी की। इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड के मशहूर ओल्ड बेव थियेटर में अभिनय की शिक्षा पूरी की। सनी ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत अपने पिता की निर्मित फिल्म 'बेताब' से की। वर्ष 1983 में राहुल रवैल के निर्देशन में युवा प्रेम कथा पर बनी यह फिल्म टिकट खिड़की पर सुपरहिट साबित हुई। फिल्म 'बेताब' की सफलता के बाद सनी को 'सोहनी महिवाल', 'मंजिल मंजिल', 'सनी', 'जबरदस्त' जैसी फिल्मों में काम करने का अवसर मिला,लेकिन इनमें से कोई फिल्म टिकट खिड़की पर कामयाब नहीं हो सकी। वर्ष 1985 में सनी को एक बार फिर राहुल रवैल के निर्देशन में बनी फिल्म 'अर्जुन' में काम करने का अवसर मिला जो उनके सिने करियर की एक और सुपरहिट फिल्म साबित हुई।

बाबा सिद्दीकी का पुलिस सुरक्षा गार्ड लापरवाही के लिए निलंबित

मुंबई: महाराष्ट्र की मुंबई पुलिस ने पूर्व विधायक बाबा सिद्दीकी के पुलिस सुरक्षा गार्ड श्याम सोनवाने के खिलाफ शनिवार को निलंबन आदेश जारी किया। गौरतलब है कि बाबा सिद्दीकी की पिछले सप्ताह उपनगर बांद्रा में उनके बेटे के कार्यालय के बाहर कथित तौर पर तीन लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। मुंबई पुलिस की सुरक्षा शाखा से जुड़े हेडकांस्टेबल सोनवाने को लापरवाही के लिए निलंबित किया गया है। इससे पहले हत्या मामले की जांच कर रही मुंबई पुलिस की अपराध शाखा ने सोनवाने से पूछताछ की थी। इस मामले में अब तक नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस बीच जांच में एक और महत्वपूर्ण सुराग सामने आया है, जिसमें बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी की तस्वीर एक आरोपी के फोन पर मिली है। यह तस्वीर उनके हैंडलर ने स्नैपचैट के जरिए आरोपियों के साथ साझा की थी। जांच में यह भी पता चला है कि शूटर और साजिशकर्ता दोनों ने सूचनाओं का आदान-प्रदान करने और अपराध को अंजाम देने के लिए स्नैपचैट का इस्तेमाल किया था।

बाघ के हमले से युवक की मौत

सिवनी: मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में आज बाघ के हमले से एक युवक की मौत हो गयी। वन विभाग सूत्रों के अनुसार दक्षिण सामान्य वन मंडल के खवासा के ग्राम चिखली में दोपहर में बाघ के हमले से एक 22 वर्षीय युवक आदित्य की मौत हो गई। दक्षिण सामान्य वन मंडल की डीएफओ एच. एच. मिश्रा ने बताया कि इस घटना के बाद अमला मौके पर पहुंच गया तथा ग्रामीणों को अलर्ट किया है कि वे अकेले जंगल की ओर ना जाये। वही मृतक के परिजनों को शासन की योजना अनुसार 08 लाख का चेक दिया गया है। बताया गया कि आदित्य चावरे (22) निवासी ग्राम चिखली जोकि गांव के जंगल में भैंस चराने गया हुआ था। इस दौरान युवक पर बाघ ने हमला कर दिया। इस घटना में युवक आदित्य की मौत हो गई है।

अवैध रूप से रह रहा बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

देहरादून: उत्तराखंड के देहरादून जनपद की पुलिस ने शुक्रवार देर रात्रि अवैध रूप से यहां रह रहे एक बंगलादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया है। उक्त व्यक्ति देहरादून से पहले राज्य के कई जनपदों से जाने से पहले दिल्ली में भी रह चुका है। पुलिस सूत्रों ने शनिवार अपराह्न बताया कि थाना प्रेमनगर क्षेत्र अंतर्गत, कल देर रात्रि गश्त टीम द्वारा संदिग्ध अवस्था में घूम रहे एक व्यक्ति को रोक कर उससे पूछताछ की गयी। जब उससे उसकी आईडी मांगी गयी। उसने किसी भी तरह की आईडी उपलब्ध होने से इन्कार किया। सख्ती से पूछताछ पर अभियुक्त द्वारा बताया गया कि वह बंगलादेश का नागरिक है तथा उसके पास भारत में निवास करने के लिए कोई भी वैध कागजात जैसे पासपोर्ट, वीजा इत्यादि नहीं है।

तेजस्वी ने शराबबंदी को लेकर सीएम नीतीश पर बोला हमला

○ पटना,

बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जहरीली शराब से हजारों जान लेने वाला मुख्यमंत्री करार दिया है।

यादव ने शनिवार को ट्वीट कर कहा कि बिहार के हर चौक-चौराहे पर शराब की दुकानें खुलवाने वाले तथा शराबबंदी के नाम पर जहरीली शराब से हजारों जाने लेने वाले मुख्यमंत्री अब महात्मा बनने का ढोंग कर रहे हैं। मुख्यमंत्री कुमार ने अपने शुरू के 10 वर्षों में बिहार में शराब की खपत बढ़ाने के हर उपाय किए और अब अवैध शराब बिकवाने के हर उपाय कर रहे है। क्या मुख्यमंत्री मेरे इन तथ्यों को झुठला सकते है। उन्होंने कहा है कि गरीबों की जान लेकर मुख्यमंत्री अब महात्मा बनने का ढोंग कर रहे। प्रतिपक्ष के नेता ने कहा कि वर्ष

2004.05 में बिहार के ग्रामीण इलाकों में 500 से भी कम शराब की दुकानें थींए लेकिन 2014.15 में उनके शासन में यह बढ़कर 2360 हो गई। 2004.05 में राज्य में लगभग 3000 शराब की दुकानें थीं जो 2014.15 में बढ़कर 6000 से अधिक हो गईं। वर्ष 1947 से 2005 यानी 58 साल में बिहार में सिर्फ 3000 दुकानें ही खुलीं लेकिन 2005 से लेकर 2015 तक नीतीश जी ने 10 साल में इसे दोगुना कर 6000 कर दिया। 58 साल में बिहार में हर साल औसतन 51 दुकानें खोली गईं लेकिन 2005.15 के 10 साल नीतीश राज में हर साल औसतन 300 दुकानें खुलीं।

शनिवार को झारखंड के रांची में बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर विपक्ष के नेता राहुल गांधी का पार्टी नेताओं द्वारा स्वागत किया।

हिजबुल्लाह ने किया प्रधानमंत्री नेतन्याहू के आवास पर ड्रोन अटैक

पीएमओ बोला- होम टाउन सिसेरिया में हमला, इजराइली पीएम और परिवार मौजूद नहीं था

○ नई दिल्ली,

हिजबुल्लाह ने शनिवार को इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के होम टाउन सिसेरिया में ड्रोन अटैक किया। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, आईडीएफ ने हमले की पुष्टि की है।आईडीएफ ने कहा कि इस ड्रोन अटैक में ढट नेतन्याहू का निजी आवास निशाने पर था। हमले के वक्त नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा घर पर नहीं थे। ड्रोन सिसेरिया की एक इमारत पर गिरा। कोई हताहत नहीं हुआ है।

इजराइली डिफेंस फोर्स (आईडीएफ) ने कहा कि शनिवार को लेबनान से इजराइल पर 3 ड्रोन दागे गए। इजराइली फोर्सेस ने 2 ड्रोन को मार गिराया। अटैक के बाद गिलोट सैन्य अड्डे पर अलार्म बजने लगे। आईडीएफ ने माना है कि उनका एयर डिफेंस सिस्टम हमले को रोकने में विफल रहा। उन्होंने कहा कि वे ड्रोन घुसपैठ की जांच कर रहे हैं। आईडीएफ ने कहा कि पिछले एक घंटे में (भारतीय समय से दोपहर 1 से 2 बजे के बीच) लेबनान से उत्तरी

इजराइल पर लगभग 55 रॉकेट दागे गए हैं। कुछ को रोक लिया गया है जबकि कई खुले इलाके में गिरे हैं। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक हमले में कम से कम 9 लोग घायल हुए हैं।

खामेनेई बोले- सिनवार की मौत के बाद भी जिंदा रहेगा हमास इजराइली हमले में हमास चीफ याह्या सिनवार की मौत के बाद पहली बार ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई का बयान आया है। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक उन्होंने कहा है कि याह्या सिनवार की मौत के बाद भी हमास खत्म नहीं हुआ है। खामेनेई के सोशल मीडिया अकाउंट पर शनिवार को सिनवार की मौत से जुड़े कई पोस्ट किए गए। इसमें लिखा है- सिनवार अपने शहीद दोस्तों के पास चले गए हैं। उनका जाना हमारे लिए दर्दनाक है, लेकिन जैसे अहमद यासीन, अब्देल अजीज रंतीसी, इस्माइल हानियेह की शहादत के बाद भी हमास अपने काम में लगा रहा, सिनवार की मौत के बाद भी यह नहीं रुकेगा। खामेनेई ने कहा कि ईरान हमेशा की तरह फिलिस्तीनी मुजाहिदीन और लड़ाकों के साथ रहेगा।

इससे पहले ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरघची ने शुक्रवार को सिनवार को शहीद बताया था। अरघची ने सोशल मीडिया पर कहा था कि सिनवार ने अपनी जमीन के लिए लड़ते हुए जान दी है। उसे कभी भी मौत का डर नहीं हुआ। वह अंत तक बहादुरी से लड़ा और शहीद हुआ। आखिरी पलों में भी उसने बहादुरी दिखाई।इजराइल का गाजा में शुक्रवार को भी हमला जारी रहा। हमास के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक इजराइली सेना ने गाजा के जबालिया रिफ्यूजी कैंप पर एयर स्ट्राइक किया। इसमें 33 लोगों की मौत हो गई। इसमें 21 महिलाएं थीं। कुछ लोगों के मलबे के नीचे दबे होने की आशंका है। इसलिए मरने वालों का आंकड़ा बढ़ सकता है। हालांकि इजराइली सेना ने अभी तक इस पर कोई बयान नहीं दिया है।

...तो केंद्र सरकार मुझे फांसी पर लटका देती: सत्येंद्र जैन

कहा- देश के अंदर अभी भी न्याय और संविधान है

○ नई दिल्ली,

दिल्ली के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने शनिवार को कहा कि अगर न्यायपालिका और संविधान नहीं होता तो भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) की केंद्र सरकार उन्हें फांसी पर लटका देती।

जैन ने शनिवार सुबह अपने परिवार के साथ सरस्वती विहार में स्थित जैन मंदिर में पूजा अर्चना की और सभी देशवासियों के कल्याण की कामना की। इस दौरान उन्होंने कहा कि देश के अंदर अभी भी न्याय और संविधान है। सबको इसे मानना पड़ेगा। अगर संविधान, न्याय और अदालतें नहीं होतीं तो आज केंद्र में जिस तरह की सरकार चल रही है वह शायद फांसी पर लटका देती। अरविंद केजरीवाल ने हमसे शुरू में ही कहा था कि हम इस देश की राजनीति को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, जो भी यह कोशिश करेगा उसे जेल तो जाना ही पड़ेगा। उन्होंने कहा कि जेल जाने के बाद कई बार सोचा कि इन लोगों ने मुझे जेल भेज दिया, अरविंद केजरीवाल को जेल भेज दिया।

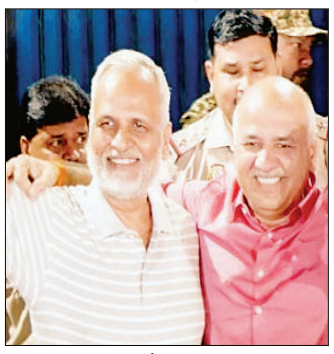

मनीष सिसोदिया और संजय सिंह को जेल भेज दिया। आम आदमी पार्टी के अंदर ऐसा क्या है कि ये हमारी पार्टी को खत्म करना चाहते हैं। इसके पीछे केवल एक ही कारण है कि इस देश में कई पार्टियां बनीं, लेकिन ये बड़ी-बड़ी पार्टियां भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाईं। राजनीति पहले जैसे चल रही थी, वैसे ही चल रही है। उस तरह से चलते रहे तो कोई दिक्कत नहीं है। इन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अरविंद केजरीवाल राजनीति में आए, लेकिन इनके जैसे नहीं बने इसलिए फर्क पड़ता है। जैन ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को इस तथाकथित मनी लॉन्ड्रिंग के मामले की जांच करते हुए सात साल हो गए लेकिन अभी तक जांच चल ही रही है।

सात लाख की चरस समेत गिरफ्तार

खटीमा/नैनीताल: उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर जिले की खटीमा पुलिस ने सात लाख रुपये मूल्य की चरस के साथ एक शातिर तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी नेपाल से चरस की तस्करी कर लाया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार खटीमा पुलिस की ओर से शुक्रवार रात को नशा तस्करों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान शातिर तस्कर शान मोहम्मद उर्फ सनुवा निवासी वार्ड नंबर-03, इस्लाम नगर, खटीमा को 03 .343 किलोग्राम चरस के साथ गिरफ्तार किया गया। आरोपी ने बताया कि वह बरामद चरस को नेपाल से खरीद कर लाया है और उसकी खटीमा के आसपास बेचने की योजना थी। पुलिस के अनुसार बरामद चरस की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में सात लाख रुपये आंकी गयी है।

सुरनकोट में दो आतंकवादी गिरफ्तार

जम्मू: सुरक्षा बलों ने जम्मू-कश्मीर में पुंछ सेक्टर के सुरनकोट इलाके में कई आतंकवादी हमलों में शामिल दो आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। सेना ने शनिवार को कहा कि खुफिया सूचनाओं के आधार पर भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाया गया और अब्दुल अजीज और मनवर हुसैन नाम के दो आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया। सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के पास से हथियार, गोला-बारूद और हथगोले भी बरामद किए। यह अभियान आतंकवादी नेटवर्क को खत्म करने में एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि दोनों आतंकवादी धार्मिक स्थलों और अस्पतालों पर ग्रेनेड हमले, आतंकवाद के वित्तपोषण, राष्ट्र-विरोधी प्रचार और हथियारों की तस्करी सहित अन्य आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने में शामिल थे।

कोरबा में करंट लगने से दंपति की मौत

कोरबा: छत्तीसगढ़ के कोरबा के कुसमुंडा आवासीय क्षेत्र में शनिवार को करंट लगने से पति-पत्नी की मौत हो गयी। शनिवार सुबह नहाने के बाद कपड़े तार में सूखने के लिए डाल रहा था। लेकिन तार में करंट प्रवाहित होने के कारण वह करंट की चपेट में आ गया। मौके पर मौजूद पत्नी बचाने के लिए दौड़ी इस दौरान वह भी करंट की चपेट में आ गयी। इस घटना में दंपति की मौके पर ही मौत हो गयी। मामला कुसमुंडा थाना क्षेत्र का है। कुसमुंडा के आदर्श नगर मनगांव बस्ती में ओडिशा का मूल निवासी दुर्योधन अपनी पत्नी भारती और 10 साल के बेटे के साथ निवास करता था। कुसमुंडा खदान में ठेका कंपनी में कार्यरत दुर्योधन सुबह के वक्त नहा कर घर के बाहर पोल से लगे तार पर कपड़ा सुखा रहा था। तभी अचानक से कपड़ा सुखाने वाले तार में करंट आ गया।

शनिवार को भोपाल के राजा भोज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आगमन पर सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का स्वागत करते भाजपा कार्यकर्ता।

देवताओं के नजराने में की बढ़ोतरी : सुक्खू

देवी-देवताओं के नजराने में 5 प्रतिशत तथा बजंतरियों के मानदेय और दूरी भत्ते में 20 प्रतिशत होगी बढ़ोतरी

○ शिमला,

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शनिवार को अतंरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा-2024 के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए देवी-देवताओं के नजराने में पांच प्रतिशत तथा बजंतरियों के मानदेय और दूरी भत्ते में 20-20 प्रतिशत बढ़ोतरी करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री सुक्खू ने कुल्लू जिला के पिरडी में ब्यास नदी के लेफ्ट और राइट बैंक को जोड़ने के लिए लगभग 26 करोड़ रुपये की लागत से पुल के निर्माण की

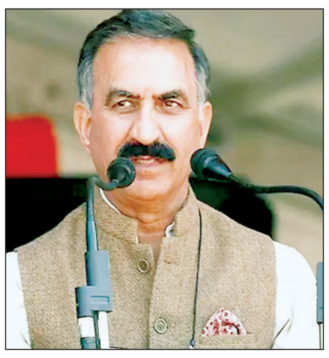

घोषणा भी की।

सुक्खू ने कहा कि भूभू-जोत टनल का मामला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के समक्ष उठाया गया है और राज्य सरकार इस टनल के निर्माण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने मनाली के हरिपुर में मनाए जाने वाले दशहरा उत्सव के लिए सरकार की ओर से मिलने वाली धनराशि को बढ़ाकर तीन लाख रुपये करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कुल्लू में 100 बिस्तर क्षमता वाले मातृ एवं शिशु अस्पताल को राज्य सरकार सुदृढ़ करेगी ताकि जिला के लोगों को यहां बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। उन्होंने यहां पर विशेषज्ञ डॉक्टरों, नर्सों और पैरा मेडिकल स्टाफ को नियुक्त करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि जिला कुल्लू के सभी आदर्श स्वास्थ्य संस्थानों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पतलीकूहल में अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार पर्याप्त डॉक्टरों और नर्सों की नियुक्ति की जाएगी। कुल्लू जिला अस्पताल में विश्व स्तरीय स्वास्थ्य तकनीक का इस्तेमाल सुनिश्चित किया जाएगा और राज्य सरकार इसके लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करवाएगी।

शनिवार को रांची के पास मंदार में ऐतिहासिक मुड़मा-जतरा मेला का दौरा करते भाजपा झारखंड अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ।

झारखंड: भाजपा ने जारी की 66 उम्मीदवारों की लिस्ट

पहली सूची जारी, चंपाई सोरेन-सीता सोरेन और गीता कोड़ा समेत इन नेताओं को मिला टिकट

○ रांची,

झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी गई। भाजपा ने शनिवार को 66 उम्मीदवारों की घोषणा की है।

बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह ने बताया कि पार्टी की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक जेपी नड्डा की अध्यक्षता में 15 अक्टूबर को हुई थी। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और केंद्रीय चुनाव समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। केंद्रीय चुनाव समिति ने झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए पहले चरण में 66 नामों की मंजूरी दी।

राजधनवार विधानसभा सीट से बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी चुनाव लड़ेंगे। राजमहल से अनंत ओझा, बोरियो से लोबिन हेम्ब्रम, लिट्टीपाड़ा

से बाबूधन मुर्मू, महेशपुर से नवनीत हेम्ब्रम, शिकारीपाड़ा से परितोष सोरेन और नाला से माधव चंद्र महतो को उम्मीदवार बनाया गया है। जामताड़ा से सीता सोरेन, दुमका से सुनील सोरेन, जामा से सुरेश मुर्मू, जरमुंडी से देवेंद्र कुंवर, मधुपुर से गंगा नारायण सिंह, सारठ से रणधीर सिंह और देवघर से नारायण दास को टिकट दिया गया है।

बीजेपी की ओर से पोड़ैयाहाट से देवेंद्रनाथ सिंह, गोड्डा से अमित कुमार मंडल, महगामा से अशोक कुमार भगत और कोडरमा से नीरा यादव को उम्मीदवार बनाया गया है। बरकट्ठा से अमित कुमार यादव, बरही से मनोज यादव, बड़कागांव से रोशन लाल चौधरी, हजारीबाग से प्रदीप प्रसाद, सिमरिया से उज्ज्वल दास, बगोदर से नागेंद्र महतो और जमुआ से डॉ. मंजू देवी को टिकट दिया गया है। गांडेय से मुनिया देवी, गिरिडीह से निर्भय कुमार शाहाबादी, बेरमो से रवींद्र पांडेय, बोकारो से बिरंची नारायण, चंदनकियारी से अमर कुमार बाउरी, सिंदरी से तारा देवी और निरसा से अपर्णा सेनगुप्ता को उम्मीदवार बनाया गया है। जमशेदपुर पूर्वी से ओडिशा के राज्यपाल रघुवर दास की बहू पूर्णिमा दास साहू को प्रत्याशी बनाया गया है। धनबाद से राज सिन्हा, झरिया से रागिनी सिंह, शत्रुघन महतो, बहरागोड़ा से डॉ. दिनेशानंद गोस्वामी, घाटशिला से बाबूलाल सोरेन, पोटका से मीरा मुंडा, सरायकेला से चंपाई सोरेन, चाईबासा से गीता बलमुचू और मझगांव से बड़कुंवर गगराई को टिकट दिया गया है।

शनिवार को मलावी में श्री राधा कृष्ण मंदिर में पूजा करती हुईं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ।

वर्ष 2: वज्रपात- 30

शोर की संस्कृति और राष्ट्र : जातुधान प्रदोष बल पाई

प्रो. आनन्द पाटील

गतांक से आगे में मैंने लिखा था कि हम आदर्श बघारते नहीं थक रहे हैं और यह संकेत किया था कि इस प्रकार का पथरीलापन, खोखलापन लेकर कोई भी देश वा समाज उत्तरोत्तर दुर्गति को ही प्राप्त होता है। वास्तव में, हमें ध्यान देना (रखना) होगा कि अतृप्त सम्भोग से उत्पन्न भीड़ किसी भी देश वा समाज को न संस्कारित कर सकी है, न सही अर्थों में विकसित ही कर सकती है। यह कथन वा इसके कुछ शब्द कुछ पाठकों को कठोर प्रतीत हो सकते हैं, किन्तु आप इस कथन में अन्तर्व्याप्त अन्तर्ध्वनियों, स्वरों और संवादी-विवादी स्वरों के साथ-साथ अपने साम्प्रतिक समय के साथ संसक्त होने का प्रयत्न करेगें, तो अर्थ की नाना छटाओं और परतों के साथ-साथ वास्तविकता के साथ साक्षात्कार कर पाएँगे। वैसे, मेरी ऐसी वज्रपाताभिव्यक्ति से उन्हीं को कठिनाई होगी, जिन्होंने अपनी देशज संस्कृति एवम् विविधामूला परम्परा को रसासिक्त होकर ग्रहण न कर, कबीर बाबा ने जिसे 'औंधा घड़ा' कहा है, उसी अर्थ में ग्रहण करने का यत्न किया है। बाबा की बात हुई है, तो उनके पाठ को भी जान लीजिए - औंधे घड़ा नहीं जल डूबै, सूधे सों घट भरिया।। जेहि कारण नर भिन्न-भिन्न, कुरु गुरुप्रसाद तें तरिया।। (कबीर, पृ. 79)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस पद का वास्तविक पाठ प्रस्तुत करने से पूर्व लिखा है - बीजक' का पाठ भी आँख मूँद कर नहीं ग्रहण करना चाहिए। (वही, पृ. 79) आप जानते हैं, 'आँख मूँदना' हिन्दी का एक बहुप्रचलित मुहावरा भी है। इस मुहावरे के अर्थ, नाना सन्दर्भों एवम् प्रयोगों से आप भलीभाँति परिचित होगें ही। अतः उसके विस्तार में न जाकर आगे बढ़ना ही श्रेयस्कर होगा। आप अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार उसके सन्दर्भ व प्रयोग खोज-खाज लीजिएगा। अखिल विश्व में अपनी आवश्यकतानुसार खोजने-खाजने में हम भारतीयों का कोई सानी नहीं है। जानिए कि वज्रपातों में प्रयुक्त शब्दों एवम् सन्दर्भों की व्याप्ति अत्यन्त व्यापक (विस्तृत) है। अपने सामयिक सत्य को उजागृत करने के लिए मैं प्रायः ओर-छोर तक जाता (रहा) हूँ। तो, वहाँ (ओर-छोर तक) पहुँचने का प्रयत्न कीजिए, जहाँ आपका जाना अभी भी शेष है। मेरा मानना है कि वहीं से साहित्य में नया संस्कार जन्म ले सकेगा। उसी से दृष्टि में गहराई और व्यापकता आ सकेगी। वही दृष्टि सर्वकल्याण के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

तो, जानिए कि 'अतृप्त सम्भोग से उत्पन्न भीड़' इस देश वा समाज को कदापि विकसित नहीं कर सकती। वह उन्मुक्त एवम् उच्छ्ल शोर की संस्कृति (अपसंस्कृति) को ही जन्म देती है। हिन्दी में एक बहुप्रचलित मुहावरा है - नक्कारखाने में तूती की आवाज़। आप जान (देख) रहे होगें कि नकारों (कर्महीन) की तूती सर्वत्र बोलती है। प्रायः ध्वनि संवेगों में तूती ही श्रेष्ठतर (तीव्रतर) सिद्ध होती है। नकारे लोगों की वाणी प्रायः उच्च संवेगात्मक तथा भाषा (तर्क) अबूझ व अपरिष्कृत (उज्जड़) होती है। ध्यान दीजिए कि ऊपर 'उच्छ्ल' शब्द का सहज प्रयोग हुआ है। उस शब्द का अन्त 'खल' पद से हुआ है। अब यहाँ 'भीड़' और 'खल' के बद्धमूल सम्बन्ध-स्थापन की निश्चय ही कोई आवश्यकता नहीं है। वह सम्बन्ध स्वतः प्रकट है। ऐसी खलकामी भीड़ आपके आसपास-पड़ोस में भी होगी और अपनी कर्कशता, उज्जड़ता, ऊपर मैंने जिस पथरीलेपन, खोखलेपन का उल्लेख किया है - उसका प्रसार करने में मग्न क्या होगी, अपितु आपकी दयनीय स्थिति (दशा) का असुरी-आनन्द ले रही होगी।

'भीड़' और 'खल' शब्द से स्मरण हो आया - हमारे घरों में प्रायः परमेश्वर जगदीशजी की आरती होती है। उस आरती में एक पङ्क्ति आती है - मैं मूरख खलकामी। ध्यान दीजिए कि आरतियाँ तो हो रही हैं, किन्तु उनकी अर्थ-विवेचना कहाँ हो रही है? धीरे-धीरे हमारी आरतियाँ और प्रार्थनाएँ भी भीड़ एवम् शोर में खोती जा रही हैं। उसी आरती में एक और पंक्ति क्रमशः आती है- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा। जबकि दिन-रात हम विषय-विकारों से ही घिरे रह जाते हैं। फिर, अगला दिन वा उत्सव-फिर वही आरती। धीरे-धीरे भीड़ और शोर हमारे जीवन का अभिन्न अंग होता जा रहा है। सुख-सम्पत्ति की खोज में दौड़-धूप करते-करते भावानुभूति की हमारी विविधामूला परम्परा दम तोड़ती-सी प्रतीत हो रही है। कहना न होगा कि हम अपने इस साम्प्रतिक समय व सत्य को अनदेखा कर महान (विकसित) नहीं हो सकते। यदि इसे बदलना असम्भव हुआ, तो हम असुरी-आनन्द लेने वालों की भीड़ और शोर का अभिन्न अंग बन जाएँगे।

मैंने प्रायः कहा है कि कोरे आदर्शों से कोई समाज समुन्नत नहीं बन सकता। समुन्नत बनने के लिए अपनी धरोहर और साम्प्रतिक समय के साथ एकरेखीय सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। ढकोसलों से स्वयम् उबरना व औरों को उबारना आवश्यक है। यह सब अपनी देशज (कर्मनिष्ठ) संस्कृति से तादात्म्य स्थापित करके ही सम्भव हो सकता है। पुनः ध्यानाकर्षण की आवश्यकता है - देशज संस्कृति का सम्बन्ध न उच्च कुलोत्पन्नों से है और न अतृप्त सम्भोगोत्पन्नों से। वह सम्पूर्णता की पराकाष्ठा को जान कर ग्राह्यता शक्ति का विकास करने वालों से बनती है। जो देश वा समाज अपनी देशज (विविधामूला) संस्कृति (?) के साथ समरसता स्थापित नहीं करता, वह शनैः-शनैः दुर्गति को ही प्राप्त होता है। ध्यातव्य है कि इस महादेश की संस्कृति भीड़ व शोर की संस्कृति कदापि नहीं रही, अपितु वह येनकेन प्रकारेण साधना व अन्तःसाधना पर ही बल देती रही है और सम्पूर्ण विश्व से कल्याणकारी विचारों का स्वागत कर पुरोगामिता (नायकत्व) का पथ प्रशस्त करने की हिमायती रही है- 'आनो भद्रा कृतवो यन्तु विश्वतः।'

> भारतीय विचार (दृष्टि) के मूल में यही तत्व विद्यमान है, जिसे भीड़ व शोर की संस्कृति (अपसंस्कृति) के संवाहक भूलते जा रहे हैं। ग्रहण करने के लिए भी शक्ति (विवेक) की आवश्यकता है। मैंने ऊपर ग्राह्यता शक्ति का उल्लेख किया है। जानिए कि दुर्बल माँ सुदृढ़ शिशु को जन्म नहीं दे सकती। उसकी दुर्बलता शिशु में अन्तरित होती ही है। आप जानते हैं, भीड़ दुर्बलों की ही होती है। भीड़ में दुर्बल ही हो सकते हैं। विचारों से सशक्त व्यक्ति ही ग्राह्यता-शक्ति से युक्त हो सकता है। वह जैसे-जैसे ग्रहण करता जाता है, क्रमशः मौलिक होता जाता है और अपने मूल रूप-स्वरूप को जान-समझ पाता है।

भारतीय विचार (दृष्टि) के मूल में यही तत्त्व विद्यमान है, जिसे भीड़ व शोर की संस्कृति (अपसंस्कृति) के संवाहक भूलते जा रहे हैं। ग्रहण करने के लिए भी शक्ति (विवेक) की आवश्यकता है। मैंने ऊपर ग्राह्यता शक्ति का उल्लेख किया है। जानिए कि दुर्बल माँ सुदृढ़ शिशु को जन्म नहीं दे सकती। उसकी दुर्बलता शिशु में अन्तरित होती ही है। आप जानते हैं, भीड़ दुर्बलों की ही होती है। भीड़ में दुर्बल ही हो सकते हैं। विचारों से सशक्त व्यक्ति ही ग्राह्यता-शक्ति से युक्त हो सकता है। वह जैसे-जैसे ग्रहण करता जाता है, क्रमशः मौलिक होता जाता है और अपने मूल रूप-स्वरूप को जान-समझ पाता है। तत्त्वतः कुछ भी जानने-समझने के लिए भीड़ और शोर की अपसंस्कृति का त्याग करना आवश्यक है। एकांगी दृष्टि का त्याग करना आवश्यक है। सबसे यथावश्यकता ग्रहण करके ही समुन्नत बना जा सकता है। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'हिन्दुत्व से विद्रोह' निबन्ध में लिखा है - हिन्दू-धर्म की यह एक अनुपम विशेषता है कि वह जितना ही बदलता है, उतना ही मौलिक हो जाता है, उतना ही वह अपने असली रूप से अधिक पास पहुँच जाता है। (संस्कृति, भाषा और राष्ट्र, पृ. 103) कुछ महानुभाव अपनी संस्कृति के मूल स्वर को जाने बिना ही ग्रहण करने की प्रक्रिया का तिरस्कार करने में जीवन खपा देते हैं।

ग्राह्यता शक्ति का एक सुग्राही उदाहरण सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के इन वक्तव्यों में भी मिलता है - जिस मिट्टी से मैं बना हूँ वह मेरे देश की है, उसमें जिन्होंने मुझे गढ़ा, उनकी सधी उँगलियों में दसियों शतियों के संस्कार क्रियाशील थे और वे संस्कार इसी देश के थे। उन पर भी कई प्रभाव पड़े थे - देशी और विदेशी, अपने और पराये, वे सब कहीं इन अभ्यासों में रच गए थे - जिनसे होती हुई वे उँगलियाँ सधी थीं उनको निरन्तर मगर अनजाने निदेशित करने वाले आँखें सधी थीं, यह मन सधा था, जिसमें बसे हुए रूपाकार निरन्तर चाक पर मूर्त होते थे। यह मैं कवि हूँ इन सबने मुझे रचा है। इसी क्रम में आगे - आग का ताप लगातार बढ़ाना मैंने सीखा है। उसी में से यह भी जाना है कि कौन-सी मिट्टी कितना ताप सहती है, यह भी कि कितने ताप में कौन-सा काम करने के लिए कौन-सी मिट्टी कितना काम देगी। असफल भी मैं हुआ हूँ। और भी, मिट्टी, ताव, साधना, उँगलियाँ, रूपाकार, प्रभाव, मन सब मैं हूँ। सबको स्वीकार करता हूँ। फिर भी मैं मैं हूँ। मैं रचता हूँ। मुझमें रचा जाता है। नया होता है। अन्य इतर से ग्रहण करते हुए ही 'स्व' को रचने की शक्ति का विकास होता है। इस महादेश की संस्कृति इसी रूप में मौलिक है, जिसकी ओर कविवर दिनकर और अज्ञेय ने संकेत किया है। वैचारिक ओछापन किसी भी समाज में त्याज्य माना जाता (रहा) है। प्रत्येक समाज उदात्त का ही अंगीकार करता है। जो समाज इस पक्ष को जानता-समझता है, वह भीड़ और शोर की संस्कृति से पृथक् होने का सायास प्रयास करता है।

'आनो भद्रा कृतवो यन्तु विश्वतः' और दिनकर व अज्ञेय के कथनों में व्याप्त उदात्तता को जानने-समझने के लिए मन-मस्तिष्क के वातायनों को खोलने वा खुले रखने की आवश्यकता पड़ती है। दुर्भाग्य यह है कि अधिकांश लोग इस सत्य से दो कोस दूरी पर खड़े होकर विमर्श रचते-गढ़ते हैं। ऐसे अनुदार लोगों की समझ विकसित करने के लिए मैंने प्रायः धूमिली भाषा (कविता) का प्रयोग किया है। मेरे पूर्वज कवियों और आलोचकों के कहे प्रत्येक शब्द से मैंने स्वयम् को जानने-समझने का प्रयास किया है। अपने समय और अपनी विविधामूला परम्परा को जाना है। भीड़ और शोर की संस्कृति से अलग-थलग एक धारा बनाने का प्रयास किया है। जिन्होंने अपने मन-मस्तिष्क को केवल टीन के कनस्तरों और शीशियों (?) में बन्द कर लिया है, वे उक्त वेद-वाक्य तथा दिनकर-अज्ञेय के कथनों में व्याप्त अर्थ (व्याप्ति) को कहाँ समझ पाते हैं? टीन के कनस्तर और शीशी से मुझे अपने छुटपन का स्मरण हो आता है। हमारा मित्र समूह अत्यन्त प्रयोगधर्मी था। घर की तिलहन की खेती थी। तेल प्रायः घानी से टीन के कनस्तरों में भर कर आता था। वह कनस्तर वर्षों तक चलते थे। जिसमें छेद हो जाता था, यहाँ-वहाँ पड़ा रहता था। उन दिनों जगह-जगह गधे मिल जाते थे। मित्रों में कुछ लोग अति-प्रयोगधर्मी थे। उनमें से कुछ किसी गधे को पकड़ कर लाते थे और उसकी पूँछ में टीन का वह छेदी कनस्तर बाँध देते थे। गधा जैसे ही आगे चलता, कनस्तर ढब-ढब बजता जाता था। वह ढबढब सुन कर और आगे दौड़ जाता था। वह बेढब उस ढब-ढब को लेकर सारे गाँव को ढबढबाता फिरता था। गधा तो गधा ठहरा, जैसे ही लोगों को देखता था और अधिक ढबढबाते दौड़ता था। **(क्रमशः)**

(लेखक म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा-महाराष्ट्र में निदेशक एवम् कुलसचिव हैं।)

न्याय की राह में अब खुली 'आंखें'

शाहीन सबा

सर्वोच्च न्यायालय में 'न्याय की देवी' की नई प्रतिमा लगने वाली है। प्रतिमा की आंख पर बंधी पट्टी हट गई है, एक हाथ में तलवार की जगह संविधान है और गाउन की जगह साड़ी ने ले ली है। कहा जा रहा है कि 'न्याय की देवी' की नई प्रतिमा सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ के निर्देश पर पिछले वर्ष बनाई गई थी। अभी यह प्रतिमा जजों के पुस्तकालय में रखी है। ग्रीक आख्यान और औपनिवेशिक सोच भले जो रही हो वस्तुतः यह नई प्रतिमा संदेश देती है कि देश का कानून 'अंधा' नहीं है। एक हाथ में संविधान होना यह दर्शाता है कि कानून भारत के संविधान के आधार पर चलता है, न कि उस औपनिवेशिक तलवार के जोर पर जो सिर्फ दंड देने के अधिकार का प्रतीक था।

यह कदम तीन कारणों से स्वागत योग्यत है। पहला, अपने नए रूप में न्याय की देवी की प्रतिमा सम्भवतः भारतीय चित्त-मानस के अधिक निकट होगी। पुरानी प्रतिमा डाइक की थी, जिन्हें ग्रीक देवी थेमिस की पुत्री कहा जाता है।

दूसरा, पुरानी प्रतिमा में बदलाव, परिवर्तन को स्वीकारने की भारतीय खुली सोच के अनुरूप औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित थी।

तीसरा, नई प्रतिमा और बदलाव उन जंजीरों-रूढ़ियों को तोड़ने का संकेत भी है जो औपनिवेशिक शासन में भारत को बिना समझे और समाज की इच्छा के बिना हमपर लादे गए थे।

वास्तव में विभिन्न प्रतीकों से अभिव्यक्त होने वाली हमारी संस्कृति में सबका कर्तव्य पथ निश्चित है और इसके अनुरूप आचरण को तौलते हुए सही-गलत का निर्णय करने वाली न्यायदृष्टि निष्पक्ष है।

सेकुलरवाद और निरपेक्ष न्याय की आधुनिकतम परिभाषाओं के बिना भी यह भारत ही है जहां धर्म की संकल्पना आस्था और पंथ से बंधी नहीं है। यहां धर्म सबके लिए समान है। और तो और यहां पितृ धर्म, पुत्र धर्म, पत्नी धर्म है। पितृ धर्म मतलब पिता के रूप में व्यक्ति का कर्तव्य, पुत्र धर्म माने पुत्र के रूप में व्यक्ति का कर्तव्य, और पत्नी का धर्म यानी पति, उसके परिजन, उसके बंधु-बांधवों के प्रति उसका कर्तव्य।

भारतीय संविधान निर्माताओं को भारत का यह भाव, स्पष्ट रूप से पता था। न्यायपालिका का ध्येय वाक्य 'यतो धर्मस्तेतो जयः' (जहां धर्म है, वहां विजय है) धर्म की उसी संकल्पना को झलकाता है। यह ध्येय वाक्य भारत के सर्वोच्च न्यायालय के 'लोगो' में बने अशोक चक्र के नीचे लिखा है।

यह बात दीगर है कि धर्म की संकल्पना को 'रिलीजन' मानने वाले, दण्ड और अधिकार की बात करने वाले 'अंधे कानून' के समर्थक यह बात नहीं समझते।

न्याय और कर्तव्य की युति और धर्म तथा आस्था-उपासना का अंतर भारतीय समाज व्यवस्था को रचने वाला समीकरण है।

न्याय की देवी की नई प्रतिमा की आंख पर पट्टी नहीं होना, हाथ में संविधान होना और पहनावे के रूप में साड़ी इसी भारतीय भाव का पोषक है। यह

औपनिवेशिक भाव से भी मुक्त है और किसी आस्था, पंथ और मत से प्रभावित भी नहीं है।

भारतीय न्याय दृष्टि को समझना हो तो गुजरात के वडोदरा स्थित महारानी चिमनाबाई न्याय मंदिर की बात भी अवश्य करनी होगी। यह भवन इंडो-सरसेनिक वास्तुकला का अनूठा उदाहरण और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थल है। इस न्याय मंदिर को 1896 में महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय ने अपनी पत्नी महारानी चिमनाबाई प्रथम की याद में बनवाया था। पहले इसका उपयोग टाउन हॉल के रूप में होता था, लेकिन बाद में इसे इम्पीरियल कोर्ट बना दिया गया। यह केवल न्यायालय का भवन नहीं है, बल्कि यह वडोदरा की समृद्ध सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत का प्रतीक है।

दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय में यह नया बदलाव भारतीय न्याय की संकल्पना और इसकी आत्मा के अनुरूप है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 'पंच परिवर्तन' और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चिन्हित 'पंच प्रण' के भी निकट है। संघ का 'पंच परिवर्तन' स्वयं की चेतना, पारिवारिक चेतना, सामाजिक चेतना (सामाजिक समरसता), राष्ट्रीय चेतना (नागरिक के रूप में कर्तव्यों का पालन) और वैश्विक चेतना यानी पर्यावरण के अनुकूल जीवन पर जोर देता है। वहीं, प्रधानमंत्री के 'पंच प्रण' में विकसित भारत का लक्ष्य, औपनिवेशिक प्रतीकों से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व करना, एकता-एकजुटता और नागरिकों में कर्तव्य की भावना का होना शामिल है।

प्रतिमा में बदलाव भले स्थूल हों किन्तु यह उस भारतीय न्याय दर्शन की देहरी पर दस्तक जैसा है जहां विश्व में सबसे पहले न्याय की अवधारणा और आयामों को सर्वाधिक सूक्ष्मता से समझने बताने और लिपिबद्ध करने के का काम हुआ। भारतीय न्याय दर्शन वैदिक परंपरा के छह प्रमुख दर्शनों में से एक है, जिसका उद्देश्य तर्क और प्रमाण के आधार पर सत्य की खोज करना है। इसमें पांच प्रकार के प्रमाणों का उल्लेख किया गया है। ये हैं-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द और अर्थापत्ति। न्याय दर्शन का मूल सिद्धांत इन प्रमाणों के आधार पर तर्क करना और सत्य को समझना है।

आधुनिक न्याय व्यवस्था में भी न्याय दर्शन की उपयोगिता देखी जा सकती है, विशेष रूप से न्यायपालिका में तर्क और साक्ष्य के महत्व के संदर्भ में। आधुनिक न्याय व्यवस्था में भारतीय न्याय दर्शन की सूक्ष्मता को संवैधानिक ढांचे में देखा जा सकता है। भारत का संविधान सामाजिक न्याय, पंथनिरपेक्षता और समानता पर आधारित है, जो भारतीय न्याय दर्शन की पुरातन धारणाओं की आधुनिक पुनर्व्याख्या है। न्यायपालिका का स्वतंत्र और निष्पक्ष होना आधुनिक न्याय व्यवस्था का आधार है, जो प्राचीन न्याय के आदर्श रूप में विकसित हुआ है। अतः भारतीय न्याय दर्शन की प्राचीनता और बारीकी पर न्याय शास्त्र में जितना काम हुआ है, उसके लिए वैयक्तिक प्रतीक और प्रतिमान देखने की बजाए हम परंपराओं को देखें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

कहना चाहिए कि वर्तमान बदलाव गूढ़ और प्रतीकात्मक है। इसका हृदय से स्वागत होना चाहिए। हालांकि इसके साथ ही न्यायपालिका में अभी कुछ आधारभूत बातें हैं, जिन्हें जल्दी से जल्दी बदलने की आवश्यकता है।

सबसे बड़ी चुनौती है देश की सबसे बड़ी अदालत में न्यायिक प्रक्रिया में भाषा की। दरअसल, लोगों के मुकदमों में जिरह-बहस तो होती है, लेकिन ऊपरी अदालतों में सब अंग्रेजी में चलता है इसलिए जिनका मुकदमा है उन्हें समझ में नहीं आता कि आखिर चल क्या रहा है। कई बार तो वकीलों को भी भाषा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। देश के गृहमंत्री ने भी तकनीकी शिक्षा और न्यायपालिका में भारतीय भाषाओं के आग्रह का विषय बहुत संवेदनशीलता के साथ उठाया था बाद में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने भी इस बात की आवश्यकता जताई थी कि अदालती कार्यवाही हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में हो।

दूसरा आयाम कुछ अधिक दिलचस्प है। यह न्यायपालिका को न्यायपालिका से न्याय दिलाने के आग्रह से जुड़ी बात है। ऐसी बात जिसकी बात पूरी न्यायपालिका में अधिकतर वकील दबी जुबान से बार-बार करते रहते हैं। ध्यान दीजिए, आज भी वकीलों और न्यायाधीशों की वेशभूषा अंग्रेजों के जमाने की है। 1627 में ब्रिटेन के शासक एडवर्ड तृतीय ने न्यायाधीशों के लिए ड्रेस कोड लागू किया था, जिसमें काला कोट अनिवार्य किया गया था। इसके बाद 1635 में ड्रेस कोड की नियमावली बनी। 1680 में इसमें फिर से बदलाव किया गया और न्यायाधीशों के लिए काला कोट, सफेद बैंड, गाउन और विग (हेडपीस) पहनना अनिवार्य किया गया। हालांकि 1950 के उत्तरार्ध में पहनावे से विग तो हटा दिया गया, लेकिन वकीलों और न्यायाधीशों की वेशभूषा वही रही। जून-जुलाई में पसीने से लथपथ, निढाल-झुंझलाते 'काले कोटों' की आवश्यकता क्या है? वकीलों का पहनावा बर्मिंघम की बजाय बनारस की तर्ज पर, ब्रिटिशराज की बजाय प्रयागराज के अनुकूल हो तो इसमें किसे क्या आपत्ति होगी!

बहरहाल, प्रतिमा में बदलाव कुछ और परिवर्तनों की पुकार को मुखर करे तो इसमें किसी को आश्चर्य और आपत्ति नहीं होनी चाहिए। क्यों न्यायाधीशों का पहनावा भारतीय परिधानों और मौसम के अनुरूप नहीं होना चाहिए?

क्यों अदालती कार्यवाही उन भारतीय भाषाओं में नहीं होनी चाहिए, जिसे न्याय की आस रखने वाला आमजन समझ सके?

और क्यों भारतीय न्याय दर्शन संकल्पना के आधार पर न्याय नहीं होना चाहिए?

इसलिए न्याय की देवी की प्रतिमा में जो बदलाव हुए हैं, उसका स्वागत स्वागत करते हुए अब बाकी आयामों को भी ठीक करने की आवश्यकता है।

रीवा एयरपोर्ट लोकार्पण पर विशेष

विन्ध्य की उड़ान को लगे सुनहरे पंख!

राजेन्द्र शुक्ल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब कहते थे कि वह दिन भी अब दूर नहीं, जब हमारे देश के हवाई चप्पल वाले लोग भी हवाई जहाज में उड़ान भरेंगे तब विरोधी इसे महज जुमला कहकर बात हवा में उड़ा देते थे। ऐसे लोगों को आज रीवा आकर देखना चाहिए कि सपना किस तरह यथार्थ के धरातल पर उतरकर चरितार्थ हो रहा है।

20 अक्टूबर 2024 की तारीख विन्ध्य क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बनने जा रही है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी चिरप्रतीक्षित रीवा हवाई अड्डे का लोकार्पण करने जा रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी रीवा में एक ऐसे हवाई अड्डे को लोकार्पित करने जा रहे हैं, जो भविष्य में उत्तरमध्य भारत का सबसे महत्वपूर्ण एयर ट्रैफिक डेस्टिनेशन बनकर उभरेगा। साथ ही इस क्षेत्र को विकास के उच्च पायदान पर स्थापित करेगा। औद्योगिक निवेश और पर्यटन के लिए वैश्विक संभावनाओं का पथ प्रशस्त करेगा।

दो वर्ष पूर्व इंदौर में आयोजित ग्लोबल इनवेस्टर्स मीट में विश्वभर के उद्यमियों के बीच श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी (तत्कालीन नागरिक विमानन व उड्डयन मंत्री) ने यह घोषणा की थी कि हम मध्यप्रदेश के छठवे हवाई अड्डे को निर्मित और विकसित करने जा रहे हैं। उनकी इस घोषणा ने दुनिया भर के उन उद्योगपतियों के ध्यान को आकृष्ट किया, जो यहाँ पावर व माइनिंग सेक्टर, वाइल्ड लाइफ टूरिज्म, फूड प्रोसेसिंग इन्डस्ट्रीज की संभावनाओं को देखते हैं। शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश करने वालों के लिए यह अवसरों का दरवाजा खोलने वाला है। यह सुयोग है कि 23 अक्टूबर को रीवा में विन्ध्य में इन्वेस्टर समिट और रीजनल इन्डस्ट्रियल कान्क्लेव का आयोजन हो रहा है। यह हवाई अड्डा विन्ध्य क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से एक्सीलेटर की भूमिका निभाएगा, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि रीवा का हवाईअड्डा कई चरणों में विकसित हो रहा है। प्रथम चरण में 72 सीटर यात्री विमान के उड़ान की सुविधा प्रारंभ हो रही है। पाँच साल में रीवा का हवाईअड्डा बोइंग की लैंडिंग और अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों के लिए बनकर तैयार हो जाएगा। वह दिन दूर नहीं जब यहां से विदेशों के लिए भी हवाई जहाज उड़ने लगेंगे। रीवा एयरपोर्ट शिलान्यास के बाद रिकॉर्ड समय में बनकर तैयार हुआ है, इस उपलब्धि के लिए भारतीय विमान प्राधिकरण व स्थानीय प्रशासन अभिनंदन के पात्र है। हवाई यातायात की सुविधा की दृष्टि से रीवा अब भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, खजुराहो की श्रेणी में आकर खड़ा हो गया है। भविष्य में हम और भी आगे बढ़ेंगे। देश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के कुशल और फलदायी नेतृत्व के अनुभव को देखते हुए मैं यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि अगले पाँच वर्षों के भीतर हम सबका सपना पूर्णरूपेण यथार्थ के धरातल पर उतर जाएगा। यह विन्ध्य की आशाओं के केन्द्र रीवा के विकास का श्रेष्ठ व उन्नत दौर है, जो स्वतंत्रता के अमृतकाल में प्रारंभ हो हुआ है।

मैं जब कहता हूँ कि रीवा मध्यप्रदेश ही नहीं देश के समुन्नत और श्रेष्ठ महानगरों की श्रेणी में आगे बढ़ रहा है, तो इसके पीछे ठोस आधार है। 1956 तक रीवा विन्ध्यप्रदेश की राजधानी रहा है और तब इसकी ख्याति भोपाल, लखनऊ, पटना और भुवनेश्वर जैसे शहरों के समकक्ष थी। कांग्रेस सरकार ने राजनीतिक द्वेषवश रीवा से एक प्रदेश की राजधानी होने का गौरव छीन लिया। 1956 से 2004 तक यह उपेक्षित और अभिशप्त पड़ा रहा। विन्ध्य में आज जो प्राकृतिक संसाधन हैं वो कल भी थे। आम नागरिकों में विकास की ललक और अपेक्षाएं कल भी वैसी ही थीं। केन्द्र में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और उसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व वाली व प्रदेश में तत्कावलीन मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और अब मुख्यतमंत्री डा. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने आहत और उपेक्षित विन्ध्यवासियों की पीड़ा और भावनाओं को समझा है। आज यह क्षेत्र कई मामलों में देश में अग्रगण्य है।

जब मैं कहता हूँ कि रीवा एयरपोर्ट उत्तर मध्यभारत का सबसे महत्वपूर्ण एयरपोर्ट होगा तो मेरी दृष्टि के सामने सिंगरौली का पावर काम्प्लेक्स उभरकर आता है। सिंगरौली में थर्मल प्लांटस में 20,000 मेगावाट से ज्यादा विद्युत उत्पादन होता है। देश का यह सबसे बड़ा पावर काम्प्लेक्स है। रीवा से सिंगरौली तक विश्वस्तरीय सड़क इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित होकर पूर्णता के करीब है। जो यात्री पाँच घंटे में बनारस पहुँचते थे वे दो घंटे में रीवा एयरपोर्ट के लाउंज में होंगे। विन्ध्य की 29 बड़ी औद्योगिक इकाईयां 225 किमी की परिधि में फैली हैं और प्रायः सभी नेशनल हाइवेज से जुड़ी हैं। अपने रीवा का हाइवेज जंक्शन पहले ही विकसित हो चुका है। इन औद्योगिक इकाइयों के अधिकारियों के लिए रीवा एयरपोर्ट कितनी बड़ी सहूलियत बनने जा रहा है यह अब उनसे ही पूछ सकते हैं। विन्ध्य की वाइल्डलाइफ टूरिज्म का विश्व में स्थान है। यहाँ का सफेद बाघ दुनियाभर के चिड़ियाघरों में दहाड़ रहा है। टीवी में दिखने वाला हर दूसरा बाघ या तो बांधवगढ़ का है या फिर पन्ना का। पर्यटकों के लिए यह कितना आसान हो जाएगा। रीवा में 750 मेगावाट का सोलर पावर काम्प्लेक्स एशिया के बड़े पावर प्रोडक्शन यूनिट में शामिल है। रीवा में खूबसूरत प्रपातों की श्रृंखला है। भगवान राम का तपोवन चित्रकूट और माँ शारदा के धाम मैहर कौन नहीं आना चाहेगा?

बाणसागर का विस्तृत जल प्रक्षेत्र और उसके द्वीप विकसित होने पर हनुवंतिया के आकर्षण से आगे का प्राकृतिक सौंदर्य प्रस्तुत करेंगे। अपना विन्ध्य पावर हब की तरह सीमेंट का भी प्रोडक्शन काम्प्लेक्स है। प्रायः सभी बड़े औद्योगिक घरानों का निवेश यहां आया है। रीवा में नागपुर की तरह मेडिकल सुविधा और कोटा की तरह एकेडमीज का विस्तार हो रहा है। हम यह गर्व के साथ कह सकते हैं कि देश का हर दसवां घर विन्ध्य में उत्पादित बिजली से रोशन हैं। देश के हर दसवें घर की बुनियादें यहां की फैक्ट्रियों से बनी सीमेंट से बेजोड़ और मजबूत हुई हैं। इस क्षेत्र में अभी तीन लाख हेक्टेयर भूमि सिंचित हुई है। बाणसागर का पानी जब 9 लाख हेक्टेयर तक पहुँचेगा तब यहाँ के किसानों की स्थिति क्या बनेगी कल्पना की जा सकती है। विन्ध्यवासियों की क्रयशक्ति बढ़ी है और यही सब क्षमता मिलकर रीवा को उत्तर मध्यभारत का सबसे विकसित महानगर बनाने का काम करेगी। रीवा इंदौर की तर्ज पर आगे बढ़ रहा है। शहरी विकास की रेटिंग एजेंसियां रीवा को संभावनाओं का महानगर बता रही हैं। इन्हीं सबके आधार पर मैं यह कहता हूँ कि रीवा एयरपोर्ट विन्ध्य के उन्नत उडान के लिए स्वर्णिम पंख लगाने जा रहा है। रीवा एयरपोर्ट के फलितार्थ होने में भी परिश्रम की पराकाष्ठा शामिल है। मैं आभारी हूँ तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी का, मुझे वह तारीख 13 जनवरी 2015 आज भी याद है, जब उन्होंने सिविल एविएशन मिनिस्ट्री को रीवा में एयरपोर्ट की संभावनाओं के अध्ययन के लिए पत्र लिखा। इसके बाद वह सिलसिला चल निकला। प्रधानमंत्री जी ने किफायती दरों वाली उडान योजना लांच की तो उन्हीं की कृपा से रीवा उडान में शामिल हो गया। जब जनसेवा का भाव और संकल्प प्रबल होता है तब दैवयोग से सभी कार्य ऐसे ही सधते जाते हैं, जैसे कि रीवा एयरपोर्ट की कल्पना और उसे अब यथार्थ के धरातल पर उतरते हुए देखना। मैं विन्ध्यजनों की ओर से, रीवा के नागरिकों की ओर विनयवत हूँ, आभारी और कृतज्ञ हूँ।

(लेखक-मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री हैं)

शतक से चूके पंत, सरफराज ने जड़ा शतक

भारत की दूसरी पारी 462 रन पर सिमटी, भारत ने न्यूजीलैंड को दिया 107 रन का लक्ष्य

○ बेंगलुरु,

भारत नेयहां चिन्नास्वामी स्टेडियम में चौथे दिन शनिवार को रोमांचक मुकाबले के बाद न्यूजीलैंड को पहला टेस्ट जीतने के लिए 107 रनों का लक्ष्य दिया।

सरफराज खान और ऋषभ पंत के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने अपनी दूसरी पारी में 462 रन बनाकर शानदार वापसी की। सरफराज ने परिपक्वता और कौशल का प्रदर्शन करते हुए शानदार 150 रन बनाए, जबकि पंत ने विस्फोटक 99 रन बनाकर दर्शकों को रोमांचित कर दिया मगर वह शतक से चूक गए। उनकी 150 रनों की साझेदारी भारत को उनकी पहली पारी की हार से उबरने में मदद करने में महत्वपूर्ण थी। भारत की पहली पारी मात्र 46 रन पर सिमट गयी थी। सूरज अस्त होने के साथ अंपायर लाइट मीटर पर रीडिंग लेने के लिए जुट गए और अंततः खेल स्थगित करने का फैसला किया जबकि रोहित शर्मा और उनकी टीम चाहती थी कि मैच जारी रहे। इस बीच, न्यूजीलैंड के लैथम और कॉनवे धीमी रोशनी में आगे बढ़ने का जोखिम उठाने को तैयार न होते हुए चुपचाप चले गए। भारतीय टीम के डटे रहने के बावजूद अंपायरों ने स्थिति का आकलन किया और मैदान के दोनों छोर पर रोशनी की जांच की। ऊपर एक विशाल काला बादल छा गया था, जिससे दृश्यता काफी कम हो गई थी। न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों पर दबाव बनाए रखने की उम्मीद में रोहित ने सुझाव दिया कि क्या वह स्पिन गेंदबाजी कर सकते हैं। हालांकि, अंपायरों ने दूसरे दिन ली गई बेंचमार्क रीडिंग का हवाला दिया और उन्हें खेल रोकने का निर्णय लेना पड़ा। खराब रोशनी के कारण दिन के लगभग 44 ओवर का नुकसान हुआ। भारतीय खिलाड़ियों के ड्रेसिंग रूम में घुसने के बाद बारिश शुरू हो गई, जिसके कारण अंपायरों को दिन का खेल रद करना पड़ा। दोपहर के सत्र में, न्यूजीलैंड ने चाय से पहले आखिरी दस ओवरों में सिर्फ 38 रन देकर तीन महत्वपूर्ण विकेट लेकर वापसी की। रवींद्र जडेजा 5 रन बनाकर विलियम

ओ'रूर्के की गेंद पर विल यंग के हाथों कैच आउट हुए। भारत के निचले क्रम को न्यूजीलैंड के आक्रमण के खिलाफ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें रविचंद्रन अश्विन और जसप्रित बुमरा दोनों मैट हेनरी की गेंद पर आउट हुये। अश्विन 15 रन पर एलबीडब्ल्यू आउट हो गए, जबकि बुमराह और मोहम्मद सिराज दोनों बिना खाता खोले आउट हो गए, जिससे भारत के केवल दो विकेट शेष रह गए। भारत ने लंच तक तीन विकेट पर 344 रन बना लिये थे और उसको न्यूजीलैंड की पहली पारी की लीड को बराबर करने के लिये 12 रन की जरुरत थी। सरफराज की स्थिर पारी और पंत की आक्रामक बल्लेबाजी ने भारत की लड़ाई के लिए एक ठोस आधार तैयार किया। पंत ने नौ चौके और पांच छक्के लगाए, जिसमें टिम साउदी की गेंद पर शानदार 107 मीटर का छक्का भी शामिल था। अंतिम दिन की ओर बढ़ेंगी, न्यूजीलैंड लक्ष्य का पीछा करना चाहेगा, जबकि भारत का लक्ष्य अपने आखिरी विकेट सुरक्षित करना और अपनी बढ़त का बचाव करना है।

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी : 46 रन

न्यूजीलैंड पहली पारी : 402 रन

भारत दूसरी पारी	रन	गेंद	4	6
यशस्वी स्टंप ब्लंडेल बो पटेल	35	52	6	0
रोहित शर्मा बो पटेल	52	63	8	1
कोहली का ब्लंडेल बो फिलिप्स	70	102	8	1
सरफराज का पटेल बो साउदी	150	195	18	3
पंत बो ओ'रूर्के	99	105	9	5
राहुल का ब्लंडेल बो ओ'रूर्के	12	16	2	0
जडेजा सी यंग बो ओ'रूर्के	05	15	1	0
अश्विन एलबीडब्लू बो हेनरी	15	24	1	0
कुलदीप यादव नॉटआउट	06	20	0	0
बुमरा का ब्लंडेल बोल्ड हेनरी	00	4	0	0
सिराज का साउदी बो हेनरी	00	2	0	0

अतिरिक्त : 18 रन

कुल : 99.3 ओवर में 462 रन पर ऑलआउट

विकेट पतन: 1-72 , 2-95 , 3-231 , 4-408 , 5-433, 6-438 , 7-441 , 8-458 , 9-462 , 10-462

गेंदबाजी	ओवर	मेडन	रन	विकेट
टिम साउदी	15	2	53	1
मैट हेनरी	24.3	3	102	3
विलियम ओ'रूर्के	21	4	92	3
अजाज पटेल	18	3	100	2
ग्लेन फिलिप्स	15	2	69	1
रचिन रवीन्द्र	6	0	30	0

न्यूजीलैंड दूसरी पारी	रन	गेंद	4	6
टॉम लैथम नॉटआउट	00	4	0	0
डेवोन कॉनवे नॉटआउट	00	0	0	0

अतिरिक्त : 0 रन

कुल : 0.4 ओवर में 00 रन

गेंदबाजी	ओवर	मेडन	रन	विकेट
जसप्रित बुमरा	0.4	0	0	0

बांग्लादेश ने हांगकांग को पांच विकेट से हराया

ओमान : रिपोन मंडोल (चार विकेट) के बाद कप्तान अकबर अली (45) रनों की शानदार परारी के दम पर बंगलादेश ए ने शुक्रवार को इमर्जिंग एशिया कप 2024 टी-20 मुकाबले में हांगकांग को पांच विकेट से हरा दिया। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। बल्लेबाजी करने मैदान पर उतरी हांगकांग टीम ने बाबर हयात के शानदार अर्धशतक की मदद से आठ विकेट पर 150 रन बनाए। हांगकांग टीम की शुरुआत हालांकि अच्छी नहीं रही और तीसरे ही ओवर में मंडोल ने जीशान अली को अकबर के हाथों कैच कराकर बांग्लादेश को पहली सफलता दिलाई। जीशान चार रन ही बना पाए। इसी ओवर में मंडोल ने दूसरे सलामी बल्लेबाज अनशे रथ को भी अकबर के हाथों कैच आउट कराकर हांगकांग को दूसरा झटका दे दिया। इसके बाद कप्तान निजाकत खान और बाबर ने संभलकर खेलते हुए टीम के स्कोर को 74 रनों तक पहुंचाया। इसी समय महफुजुर रहमान रब्बी ने कप्तान निजाकत खान को 25 रनों पर बोल्ड आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा।

धीरू का शतकीय प्रहार

लखनऊ : हिमांशु राणा (114) के बाद धीरु सिह (103) के शतकीय प्रहार और सातवें विकेट के लिये सुमित कुमार (61) के साथ 113 रन की साझीदारी की बदौलत हरियाणा ने रणजी ट्राफी एलीट ग्रुप सी मुकाबले के दूसरे दिन शनिवार को मेजबान उत्तर प्रदेश के खिलाफ नौ विकेट पर 431 रन बना लिये थे। स्पोर्टस गैलेक्सी क्रिकेट ग्राउंड की आसान दिख रही पिच पर यूपी के गेंदबाजों को पूरे दिन के खेल में सिर्फ तीन विकेट मिले। दिन का खेल खत्म होने के समय यजुवेंद्र चहल 38 और अमन कुमार नौ रन बना कर क्रीज पर डटे थे। आज के खेल का मुख्य आकर्षण कल की नाबाद जोड़ी धीरु और सुमित के बीच मंथर गति से पनपी साझीदारी रही। दोनो बल्लेबाजों ने रन गति बढ़ाने में तनिक भी दिलचस्पी नहीं दिखायी जिसके चलते मेजबान गेंदबाजों को इस साझीदारी को तोड़ने के लिये खासा पसीना बहाना पड़ा। कप्तान आर्यन ने इस साझीदारी को तोड़ने के लिये अपने नियमित गेंदबाजों के अलावा रिंकू जैसे पार्ट टाइम बॉलर का भी इस्तेमाल किया।

सरफराज क्रिकेट की दुनिया का नया जलजला

बेंगलुरु : 'सरफराज खान' क्रिकेट की दुनिया का वो नाम जिसने लंबे समय तक भारतीय टीम में उपलब्धि के साथ जगह बनाने का इंतजार किया, आज उसका सपना बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में पूरा हुआ। जिस समय भारतीय टीम में मुश्किलों के भंवरजाल में फंस चुकी थी,ऐसे दवाब के लम्हों में सरफराज खान ने शतक के लिये नॉन-स्ट्राइकर छोर की ओर कदम बढाये और भारतीय ड्रेसिग रुम के साथ समूचा देश जश्न के समंदर में गोते लगाने लगा। सरफराज ने अपना बल्ला घुमाया और हेलमेट हटाया, इसके साथ मैदान में उनके पहले टेस्ट शतक के बाद भावनात्मक अनुभूति में खुशी की लहर दौड़ गई। बेंगलुरु के प्रशंसक खड़े हो गए, उनके साथियों ने पवेलियन से खुशी मनाई और आसमान उनकी जीत का गवाह बना। सरफराज के लिए यह सौ से भी अधिक था, यह उनके युवा करियर का निर्णायक क्षण था। न्यूजीलैंड के खिलाफ सरफराज का शतक न केवल एक व्यक्तिगत मील का पत्थर था, बल्कि एक मैच में एक महत्वपूर्ण मोड़ भी था।

सार संक्षेप

सुदेवा दिल्ली एफसी ने तरुण सांघा को हराया

नई दिल्ली : सुदेवा दिल्ली एफसी ने तरुण सांघा को 3- 0 से हरा कर डीएसए प्रीमियर लीग में पूरे अंक अर्जित किए। डाक्टर अंबेडकर स्टेडियम मैदान पर खेले गए मैच में विजेता टीम ने खेल के हर क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन किया। हालांकि तरुण सांघा ने कुछ समय तक अपने गोल की रक्षा की लेकिन प्लेयर ऑफ द मैच एजाज अहमद के दो बेहतरीन गोलों और रोहमिंगथांग के गोल से सुदेवा जीत गई। आज की जीत के साथ सुदेवा ने 5 मैचों में 10 अंक जुटा लिए हैं और गढ़वाल हीरोज के बाद अंक तालिका में दूसरे स्थान पर है। जबकि तरुण सांघा के 5 मैचों में 6 अंक बने हैं। एजाज अहमद ने विजेता टीम का पहला गोल 26वें मिनट में और दूसरा गोल 65वें मिनट में किया। इस बीच रोहमिंग ने 63 वें मिनट में एक गोल का योगदान दिया। तरुण सांघा को छुट पुट मौके मिले लेकिन कमजोर निशानेबाजी आड़े आई।

नेपाल के अमन थापा ने दूसरी बार पैराग्लाइडिंग प्रतियोगिता जीती

शिमला : हिमाचल प्रदेश के जुन्गा में चार दिवसीय फ्लाइंग फेस्टिवल और हॉस्पिटेलिटी एक्सपो-2024 शनिवार को संपन्न हुआ, जिसमें भारत और विदेश दोनों के 40 पैराग्लाइडर पायलट शामिल हुए। इस आयोजन में कड़ी प्रतिस्पर्धा देखी गई, अंतिम दिन पैराग्लाइडिंग चौंपियनशिप के सेमीफाइनल और फाइनल हुए, जिसके परिणामस्वरूप कुल 64 उड़ानें हुईं। नेपाल के अमन थापा ने लगातार दूसरे साल पहला स्थान हासिल किया और ट्रॉफी के साथ 2.25 लाख का नकद पुरस्कार जीता। पिछले साल भी थापा ने शीर्ष स्थान हासिल किया था। चंबा खजियार के अक्षय कुमार दूसरे और धर्मशाला के मोहित कुमार तीसरे स्थान पर रहे। दोनों को क्रमशः 1.25 लाख और 75,000 का नकद पुरस्कार मिला।

दक्षिण अफ्रीका के पास पिछले विश्वकप की टीस मिटाने का भरपूर मौका

दुबई : पिछले साल महिला टी20 विश्व कप के फाइनल में घरेलू प्रशंसकों के सामने हारने की टीस मिटाने का दक्षिण अफ्रीका के पास इस बार संयुक्त अरब अमीरात में बेहतरीन मौका है जब वह रविवार को फाइनल मुकाबले में न्यूजीलैंड के खिलाफ उतरेगी। पिछले एक साल में काफी कुछ बदल गया है, सुने लुस के स्थान पर इस बार टीम की बागडोर लॉरा वोल्वार्ड्ट के हाथों में है। टीम के सदस्य क्लो ट्रायोन ने फाइनल मैच की पूर्व संध्या पर प्रेस कांफ्रेंस में कहा ₹मुझे लगता है कि जब वह (वोल्वार्ड्ट) पहली बार आई थी, तो वह शायद थोड़ी घबराई हुई थी। वह अब काफी शांत है और मुझे लगता है कि वह चीजों को कैसे करना चाहती है, इस बारे में वह और अधिक स्पष्ट है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि टीम शक्तिशाली ऑस्ट्रेलियाई टीम पर जीत के बाद फाइनल में पहुंच गई है। ऐसी जीत से फाइनल में पहुंचने के लिए उनके आत्मविश्वास में काफी वृद्धि होनी चाहिए। आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है, लेकिन ट्राइटन ने समूह के भीतर शांति और पिछले कुछ महीनों से सीख पर जोर देने का फैसला किया।

पाक बोर्ड का बीसीसीआई को पत्र

○ कराची,

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को एक प्रपोजल दिया है। क्रिकबज के मुताबिक, पीसीबी ने कहा है कि टीम इंडिया अपना हर मैच खेलकर भारत लौट सकती है और इसमें पाकिस्तानी बोर्ड उनकी मदद करेगा।

रिपोर्ट में कहा गया है कि पीसीबी ने हाल ही में बीसीसीआई को लेटर लिखा है। इसमें कहा है कि अगर भारतीय टीम सुरक्षा को देखते हुए पाकिस्तान में नहीं रहना चाहती और वह हर मैच के बाद वापस चंडीगढ़ या नई दिल्ली लौटना चाहती है तो बोर्ड उनकी मदद करेगा। पीसीबी के एक अधिकारी ने इस प्रपोजल की पुष्टि की है। यह ऑफर देने की वजह भारत के आखिरी 2 मुकाबलों के बीच एक सप्ताह का गैप है।

रिपोर्ट्स के अनुसार, हाल ही में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर की पाकिस्तान यात्रा के दौरान भी भारतीय टीम के पाकिस्तान जाने पर चर्चा हुई थी। जयशंकर और पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार के बीच कई बार बातचीत के दौरान इस मुद्दे को उठाया गया था। इस यात्रा के बाद पीसीबी की उम्मीदें जागी हैं, हालांकि इस पर अब तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। पाकिस्तान की टीम पिछले

कहा- टीम इंडिया चाहे तो हर मैच खेलकर लाहौर से स्वदेश लौट सकती है, फरवरी में चैंपियंस ट्रॉफी

साल वनडे वर्ल्ड कप खेलने के लिए भारत आई थी। तब इंडिया और पाकिस्तान के बीच अहमदाबाद में 14 अक्टूबर को मुकाबला खेला गया था। इस मैच को भारतीय टीम ने 7 विकेट से जीता था। कप्तान रोहित शर्मा और श्रेयस अय्यर ने फिफ्टी जमाई थी। जसप्रीत बुमराह प्लेयर ऑफ द मैच बने थे। उन्होंने 19 रन देकर 2 विकेट लिए थे। पाकिस्तान का भारत दौरा पाकिस्तानी ने 2012-13 में भारत का आखिरी दौरा किया था। उस दौरे में 3 वनडे और 2 टी-20 मैचों की बाइलैटरल सीरीज खेली गई थी। वनडे सीरीज को पाकिस्तान ने 2-1 से जीता था, जबकि टी-20 सीरीज 1-1 की बराबरी पर रही थी। भारत का पाकिस्तान दौरा टीम इंडिया ने 2008 में आखिरी बार पाकिस्तान का दौरा किया था। 3 टेस्ट मैचों की उस सीरीज को भारतीय टीम ने 1-0 से जीता था। इस सीरीज के 2 मैच ड्रॉ रहे। मुंबई में आतंकी हमले के कारण पाकिस्तान नहीं जा रहा भारत भारतीय टीम ने 2007-08 के बाद से पाकिस्तान का दौरा नहीं किया है।

मैराथन की मेजबानी करेगा श्रीनगर

○ श्रीनगर,

श्रीनगर आज विदेशी और घरेलू एथलीटों के लिए सबसे समृद्ध मैराथन की मेजबानी करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

दो कैटगेरी में आयोजित होने वाली 'कश्मीर मैराथन' में 59 विदेशियों समेत छह हजार से अधिक धावक भाग लेंगे। 42 किमी की पूर्ण मैराथन और 21 किमी की हाफ मैराथन में तीन करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि दांव पर होगी। कश्मीर के पर्यटन निदेशक राजा याकूब ने कहा कि रविवार के कार्यक्रम में दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ एथलीट भाग लेंगे। उन्होने कहा कि हमारे यहां शीर्ष भारतीय धावक, विशिष्ट धावक, एशियाई स्वर्ण पदक विजेता धावक हैं। उनके साथ, हमारे पास यूरोप के कुछ बेहतरीन धावक और अफ्रीका के कुछ बेहतरीन धावक हैं। उन्होंने कहा कि उनके पास कश्मीर के एथलीटों का भी अच्छा प्रतिनिधित्व है। 1992 की एशियाई स्वर्ण पदक विजेता और भारतीयों के लिए विशिष्ट समन्वयक डॉ. सुनीता गोदारा ने कहा कि कश्मीर मैराथन में प्रतिभागियों के लिए

सबसे अधिक पुरस्कार राशि है। उन्होने कहा कि यह भारत की अब तक की सबसे अधिक पुरस्कार राशि का इतिहास है। मैं 1988 से दौड़ रही हूं। भारतीयों के लिए पहली बार, कश्मीर मैराथन ने श्रीनगर में सबसे अधिक पुरस्कार राशि वाली मैराथन आयोजित की है। उन्होंने कहासुनीता ने कहा कि इस फुल मैराथन और हाफ मैराथन में देश के 45 दिग्गज एथलीट भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि मैराथन में भाग लेने वाले प्रमुख एथलीटों में टी गोपी शामिल हैं, जो 2017 में एशियाई मैराथन पुरुष खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बने थे। मान सिंह 2024 के वर्तमान एशियाई स्वर्ण पदक विजेता हैं। निदेशक पर्यटन ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से वे दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि कश्मीर की स्थिति में सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि अगर कोई 42 किमी दौड़ रहा है, तो यह दर्शाता है कि कश्मीर अब शांतिपूर्ण है। हम दुनिया को अपनी विरासत, अपने व्यंजन, हस्तशिल्प, पश्मीना, सोजनी, पपीयर-मचे दिखाना चाहते हैं। वे (एथलीट) अपने-अपने देशों और राज्यों में हमारे ब्रांड एंबेसडर होंगे।

एड्रिस-चेप्टेगी के बीच होगा दिलचस्प मुकाबला

एड्रिस ने हाल ही में टिलबर्ग में 10 मील की रेस में चेप्टेगी को हराया था

○ नई दिल्ली,

विश्व एथलेटिक्स गोल्ड लेबल रोड रेस- वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन के आगामी संस्करण में आज दिल्ली में विश्व स्तरीय धावक आपस में भिड़ते दिखेंगे।

दोहरे ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता युगांडा के जोशुआ चेप्टेगी का सामना दो बार के 5000 मीटर विश्व चैंपियन इथियोपिया के मुक्तार एड्रिस से होगा। दिलचस्प बात यह है कि एड्रिस ने हाल ही में टिलबर्ग में 10 मील की रेस में चेप्टेगी को हराया था। इसी ने युगांडा के इस खिलाड़ी पर दिल्ली में इथियोपिया के धावक से बदला लेने का दबाव बनाया। युगांडा पुलिस बल में कार्यरत चेप्टेगी ने बताया कि कैसे भारत में उनकी पहली रेस ने उनके करियर के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया। उन्होंने कहा कि इसने मुझे एक वास्तविक अवसर दिया। और दस साल बाद भी, मेरी मैनेजमेंट टीम ने कहा, यदि आप सड़कों पर अपने करियर के 10 और साल बिताना चाहते हैं, तो आपको भारत वापस जाना होगा। इसलिए मैं

लोगों को कुछ वापस देने के लिए भारत वापस आया हूं। ओलंपिक स्टार, विश्व चैंपियन और ट्रैक लीजेंड- चेप्टेगी ने कहा कि अभी, मैं अभी भी लंबी दूरी की रेस के बारे में सोच रहा हूं। भले ही मुझे कुछ अनुभव हो। मुक्तार पहले ही कुछ मैराथन चुके हैं, इसलिए उनके पास अधिक अनुभव के साथ बढ़त है। आइंडहोवन में, जब उन्होंने मुझे हराया, तो ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं अभी भी इन रेसों की गतिशीलता सीख रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि रविवार की रेस मेरे लिए अच्छी होगी। मेरी प्राथमिकता दौड़ में अपने अगले अध्याय की ओर बढ़ना है। हाल ही में लगी चोट से उबरने के बारे में बात करते हुए एड्रिस ने कहा कि मेरी चोट अब लगभग 95 फीसदी ठीक हो गई है। हालांकि एक छोटी सी समस्या सामने आई है। लेकिन यह मैनेज की जा सकती है। मैं वर्तमान में अपने पिछले फॉर्म के 70-80 फीसदी पर हूं और लगातार सुधार कर रहा हूं। मेरा लक्ष्य पूरी ताकत से वापसी करना है। खासकर लंबी दौड़ के लिए। मेरे परिवार ने पूरे समय मेरा बहुत साथ दिया है। महिलाओं की रेस में में 10,000 मीटर में 2022 राष्ट्रमंडल खेलों की चैंपियन इलिश मैककोलगन शामिल हैं। हालांकि, केन्या की सिंथिया लिमो, 2016 विश्व हाफ मैराथन की रजत पदक विजेता, आगामी रेस में ब्रिटिश धावक को कड़ी टक्कर देने के लिए तैयार हैं। मैककोलगन ने कहा कि इतने लंबे समय तक खेल से बाहर रहना कठिन है। वापसी में लगभग छह महीने लगते हैं और फिर फिटनेस को फिर से बनाने में और समय लगता है। मैं अभी तक ब्रिटिश रिकॉर्ड या अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं हूं, लेकिन चीजें अच्छी तरह से हो रही हैं। मैंने हाल ही में लगातार सप्ताहांत में दो हाफ मैराथन की, जो मैं आमतौर पर नहीं करती। एक करना मुश्किल है, दो तो छोड़िए, लेकिन इसने मुझे विश्वास दिलाया है कि मेरा शरीर ठीक है और ठीक हो रहा है।

गढ़वाल और वायुसेना ने ड्रा मुकाबले में अंक बांटे

नई दिल्ली : दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) में गढ़वाल हीरोज और भारतीय वायुसेना के बीच मुकाबला 2 से 2 से ड्रॉ रहा और दोनों टीमें अंक बांटे गये। यहां अम्बेडकर स्टेडियम में खेले गये मुकाबले में वायुसेना के लिए मणिमारन ने 25 वें मिनट में गोल किया। चार मिनट बाद सोमनंदा सिंह ने एक और गोल जमा कर बढ़त मजबूत कर दी। इसके बाद गढ़वाल हीरोज के निर्मल सिंह बिष्ट और संदीप सिंह पात्रा ने गोल कर हिसाब बराबर कर लिया। पिछली विजेता गढ़वाल हीरोज एफसी और वायुसेना राजधानी की नामी टीमें हैं। एक दूसरे के विरुद्ध खेले गए मुकाबले में दोनों ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन किया लेकिन लगातार चार मैचों में जीत दर्ज करने वाली गढ़वाल के लिए वायुसेना से निपटना उस समय भारी पड़ा जबकि वायुसैनिकों ने दनादन दो हमले कर गढ़वाल की रक्षापंक्ति को न सिर्फ भेदा ,सटीक निशाने लगाकर 2-0 की मजबूत बढ़त बना ली।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)